हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अक्टूबर, 2004 वर्ष 3 अंक 8

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

शर हमेशा शर रहेगा

बातिल चाहे जितना फैल जाये
वह कभी हक़ नहीं बन सकता।
बुराई चाहे जितनी छा जाये वह
कभी भलाई नहीं बन सकती।
बातिल हमेशा बातिल और शर
(बुराई) हमेशा शर रहेगा।

(मुहम्मद क़ुत्ब)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक दृष्टि में

• शाबान का महीना	सम्पादकीय	3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी	6
• हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में	मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी	8
• हम्दे बारी तआला	मौ० मुहम्मद सानी हसनी	10
• अल्लाह की राह में	डा० मु० इज्तिबा नदवी	11
• दोस्ती तेरे लिये है ...	शाइक रूदौलवी	14
• महापुरूषों का इतिहास	तारीख़े दअ़वत व अ़ज़ीमत से	15
• हज़रत आइशा (रज़ि०)	सादिका तस्नीम फ़ारूक़ी	17
• हम हैं गुलामे सय्यिदे अबरार दोस्तो	हैदर अली नदवी	22
• नेक कामों के करने का हुक्म ...	मो० हसन अन्सारी	23
• आप की समस्याएं और उनका हल	मु० सरवर फ़ारूक़ी	24
• खुल रहे हैं आकाश के रहस्य	हबीबुल्लाह आज़मी	26
• बुराई हमेशा बुराई रहेगी	मुहम्मद कुत्ब	27
• केवल अल्लाह ही उपास्य है	मौ० मुहम्मदुल हसनी	28
• ज्ञान की गरिमा	अनुवाद- मो० हसन अन्सारी	29
• हज़रत सुलैमान (अ०) के जिन्न	अबू मग़्रूब	30
• याद रखें	इदारा	31
• नील नदी के नाम	नजीबुर्रहमान	32
• नबवी निसाबे तालीम	इदारा	32
• इस्लाम में मानवता का स्तर	हैदर अली नदवी	33
• एंजाइना की सफल चिकित्सा	डॉ० कौल	35
• हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि०)	मुहसिना फ़ारूक़ी	36
• महात्मा गांधी	मो० हसन अन्सारी	38
• इन्फ़िरादी व जमाअ़ती तालीम	इदारा	39
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

□□□

शअ़बान का महीना

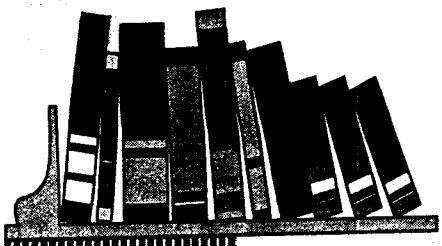

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

शअ़बान जिसे आ़म तौर से शाबान कहा जाता है हिज्री साल का आठवां महीना है। इससे पहले रजब और इस के बा़द रमज़ान का महीना आता है भारत, बंगलादेश और पाकिस्तान के मुस्लिम अ़वाम (जन साधारण) में यह अपने ह़लवे और पटाखों के लिए मशहूर है। जब कि यहां के दीन्दारों में और इस्लामी मुल्कों में यह पन्द्रहवीं रात के रतजगे (शबबेदारी) और १५ शअ़बान के रोज़े के लिए मशहूर हैं। इस माह की पन्द्रहवीं रात शबे बराअत कहलाती है इस लिए इस महीने को शबे बराअत का महीना भी कहते हैं । अ़वाम ने इसको बिगाड़ कर शुबरात कर दिया ६० वर्ष पहले दीहातों का यह ह़ाल था कि रमज़ान के आख़िरी अ़श्रे (दशम) में औ़रतें सिवैंया अपने हाथ से बटतीं (बनातीं) और ईद के रोज़ गुड़ में पकातीं, इसी तरह़ गेहूं धुल कर घर की चक्की में ह़ल्वे के लिए आटा पीसतीं और १४ शअ़बान को गुड़ का ह़लवा बनातीं। उस वक़्त चना गेहूं से कहीं सस्ता था गेहूं रूपये का २ सेर चना ५, ६ सेर चुनांचि चने की दाल उबाल कर चने का ह़लवा भी बनता यह भी गुड़ में बनता था। दीहात के ज़मीन्दारों और बड़े किसानों के यहां शकर का ह़ल्वा भी बनता मगर दीहात के आ़म मुसलमानों के बच्चे उस गुड़ के ह़लवे का साल भर इन्तिज़ार करते। जब मैं ने उ़लमा से तअ़ल्लुक़ पैदा किया और उनकी सुह़बत इख़्तियार की तो मुझे मा़लूम हुआ कि शबे बराअत में ह़ल्वा बनाना बिदअ़त है तो अगर्चि हर शरअ़ी अम्र पर मेरा मअ़मूल आमन्ना व सद्दक़ना था मगर इस अम्र पर मुझे धचका सा लगा लेकिन अ़क़्ल ने कहा तभी तो सवाब है। धचका अपनी ज़ात के लिए नहीं। उन गरीब बच्चों के लिए था जो साल भर इन्तिज़ार के बाद शबे बराअत में गुड़ का ह़ल्वा खाने को पाते थे। कितना बदल गया है ज़माना उस वक़्त दीहात के बच्चे अपने बड़ों से टाफ़ी नहीं गुड़ मांगा करते थे। बहर ह़ाल जो लोग मेरी बात मानते थे उनको मैंने शबेबराअत में ह़ल्वा बनाने से रोका और उनको मशवरा दिया कि एक रोज़ आगे पीछे ह़ल्वा बना लिया करें। इस सिलसिले में बड़ी दिलचस्प बह़्सें सामने आईं जिनका ज़िक्र बड़ा दिलचस्प (रोचक) है।

एक बड़ी बी ने फ़रमाया कि उह़द की लड़ाई में ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का एक दान्त शहीद हो गया, उस की इत्तिलाअ़ जब ह़ज़रत उवैस क़रनी को पहुंची तो उन्होंने अपने सारे दान्त तोड़ डाले तो हम लोग ह़ज़रत उवैस क़रनी (रह०) को ह़ल्वे पर फ़ातिह़ा देते हैं कि उनके दांत न रह गये थे। उनसे कहा गया कि दीनी काम के लिए शरीअ़त का ह़ुक्म चाहिए, ख़ुद से सोच कर दीन में कोई काम बढ़ाया नहीं जा सकता। एक साहिब ने बताया कि पन्द्रहवीं रात को मुर्दों की रूहैं अपने अपने घरों में आती हैं और फातिहा न पाकर मायूस लौट जाती हैं। इस लिए पन्द्रहवीं रात को अच्छे अच्छे खानों पर फ़ातिह़ा देना चाहिए। उनसे भी यही बात कही गयी कि दीन का काम वही है जिस की ता़लीम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दी हो, जिस ने ख़ुद से दीन बनाया वह ह़ुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ह़क़ को ठीक तौर पर समझ न सका।

एक साहिब ने पटाख़ों के जवाज़ (वैधता) में कहा कि बच्चे इस बहाने पटाख़े दागते हैं तो

उनको आतिशीं अस्लहों (आग के हथियारों) से मुनासिबत (अनुकूलता) पैदा हो जाती है और यह ज़माना आतिशीं हथियारों का ज़माना है। बच्चों को तो अअ़ला (उच्च) क़िस्म के पटाख़े मुहैया (उपलब्ध) करके उनको खेलने का मौक़ा देना चाहिए। उनको जवाब दिया गया कि यह महज़ बहाना है और बड़े नुक़्सान का बाअ़िस है । हज़ारों लाखों रूपये आग के नज़्र हो जाते हैं। कितने लोग जल जाते हैं। कितनी जगहों पर आग लग जाती है और बहुत बड़ा नुक़्सान यह होता है कि लोगों की नींद उड़ जाती है एक तो पटाख़ों की नागवार आवाज़ से दूसरे इस अन्देशे से कि कहीं आग न लग जाए और हमारा घर भी उस की लपेट में आ जाए और हम सोते रहें। एक बहुत बड़ा नुक़्सान यह है कि इस मुबारक रात में फ़ज़ा बारूद की बू से भर जाती है और पटाख़ों की आवाज़ और बू से इ़बादत गुज़ारों की इ़बादत में ख़लल पड़ता है। रही आतिशी अस्लहों की तर्बियत कि यह पटाख़ों से हो जाएगी यह एक वहम (भ्रम) से ज़ियादा कुछ नही।

इन तफ़सीलात के बा़द मा़लूम हुआ कि अ़वाम कितने बहके हुए हैं लिहाज़ा उ़लमा की इस्लाह़ात में पूरा तआ़वुन करना चाहिए। अब तो ह़ालात भी ऐसे बदल गये हैं कि समझ में नहीं आता कि गुड़ किस काम में आता होगा। पहले दीहातों में ई़द की सिवैयां और शबे बराअत का ह़ल्वा भी गुड़ का होता अब तो रोज़ाना की चाए भी शकर में बनती है और किसी को यक़ीन भी नहीं आ सकता कि कभी चाय गुड़ में बना करती थी । अब तो तक़रीबन दीहात का भी हर बच्चा रोज़ाना ही मीठा खाने को पा जाता है।

शबे बराअत का अर्थ बरी किये जाने वाली रात है, रिवायात में आता है कि अल्लाह तआ़ला शअ़्बान की पन्द्रहवीं रात को अपनी रह़मते ख़ास (विशेष कृपा) से अनगिनत पापियों को क्षमा करता है, उनको उनके जुर्म से बरी करता है इस लिए इस रात का नाम लैलतुल बराअत या शबे बराअत रखा गया।

सुनने बैहक़ी में उम्मुल मोमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरे पास जिब्रील (अ़०) आये और कहा यह शअ़्बान की पन्द्रहवी रात है। इस में अल्लाह तआ़ला जहन्नम से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है जितने बनी कल्ब की बकरियों के बाल हैं, मगर काफ़िर और नाह़क़ अ़दावत वाले और रिश्ता काटने वाले और कपड़ा लटकाने वाले और वालिदैन की नाफरमानी करने वाले और बराबर शराब पीने वाले की तरफ़ रह़मत की नज़र नहीं फ़रमाता। एक रिवायत में है कि किसी को (नाह़क़) क़त्ल करने वाले की तरफ़ भी रह़मत की नज़र नहीं करता।

तबरानी और इब्नि ह़ब्बान ने मआ़ज बिन जबल से रिवायत नक़्ल की है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि शअ़्बान की पन्द्रहवीं रात में अल्लाह तआ़ला तमाम मख़्लूक़ की तरफ़ तजल्ली फ़रमाता है और सब को बख़्श देता है सिवाए काफ़िर (नाशुक्रे) और नाह़क़ अ़दावत वाले के।

बैहक़ी में उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल पन्द्रहवीं रात में दुन्या वाले आसमान पर तजल्ली फ़रमाता है, इस्तिग़फ़ार करने वालों को बख़्श देता है, रह़मत मांगने वालों पर रह़मत करता है और नाह़क़ दुशमनी रखने वालों को उन के ह़ाल पर छोड़ देता है।

इब्नि माजा में ह़ज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहू से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब शअ़्बान की पन्द्रहवीं रात आ जाए तो रात को क़ियाम करो (यानी खड़े

(शेष पृष्ठ १४ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

बहादुरी :

ऐ ईमान वालो जब तुम काफ़िरों से जंग के मैदान में मुक़ाबिल हो तो उनको पीठ मद दो। (अल–अन्फ़ाल : ४५)

आयत का मतलब यह है कि जब दुश्मन से मुक़ाबला आन पड़े तो ईमान वालों के लिए ज़रूरी है कि वह बहादुरी के साथ मैदान में क़दम जमाये डटे रहें, पीठ फेर कर बुज़दिली (कायरता) न दिखाएं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम बहुत बहादुर थे। एक बार मदीने वालों के दिल में किसी तरफ़ से हमले का डर पैदा हुआ। हुज़ूर उठे और तन्हा घोड़े पर मदीने का चक्कर लगा आये और लौट कर फ़रमाया : "डर की कोई बात नहीं।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी दुआओं में बुज़दिली से पनाह मांगा करते थे।

एक रिवायत में है कि इन्सान में सब से बड़ी बदअख़्लाक़ी घबरा देने वाला बुख़्ल (कंजूसी) और दिल दहला देने वाली बुज़दिली है।

फ़रमाया कि कमज़ोर मुसलमान से ताकतवर मुसलमान ज़ियादा बेहतर और ख़ुदा के नज़दीक प्यारा है।

इस्तिक़ामत (जमे रहना)

और क़ाइम रह जैसा कि तुझे हुक्म दिया गया। (अश–शूरा: १५)

इस आयत का मतलब यह है कि जिस बात को हक़ समझा जाए उसपर मज़बूती से क़ाइम रहा जाए। मुशकिलें पेश आयें मुख़ालिफतें हों, सताया जाए, हर ख़तरे को बर्दाश्त किया जाए मगर हक़ से मुंह न फेरा जाए।

ख़ब्बाब बिन अल अर्स (रज़ि०) एक सहाबी थे उनको इस्लाम लाने के जुर्म में तरह तरह की तकलीफें दीजाती थीं। एक दिन ज़मीन पर कोयले जलाकर उस पर उनको चित लिटा दिया गया और एक शख़्स उन की छाती पर पांव रखे रहा कि करवट न बदलने पायें।

यहां तक कि कोयले पीठ के नीचे पड़े पड़े ठण्डे हो गये।

यह सब कुछ हुआ पर इस्लाम से मुंह न मोड़ा।

हज़रत बिलाल (रज़ि०) गर्म जलते बालू पर लिटाये जाते, पत्थर की भारी चट्टान उनके सीने पर रखी जाती, गले में रस्सी बान्ध कर ज़मीन पर घसीटे जाते और कहा जाता कि इस्लाम से बाज़ आओ, उस वक़्त भी उनकी ज़बान से अहद अहद, एक ख़ुदा एक ख़ुदा निकलता ।

जिस तरह ईमान और अ़क़ीदे में आदमी को मज़बूत (दृढ़) होना चाहिए। यानी जिस भले काम को अपनाया जाए उसे हमेशा और हर हाल में किया जाए ऐसा न हो कि कभी कीजिए और कभी न कीजिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि ख़ुदा के नज़दीक सब से अच्छा काम वह है जिसे हमेशा किया जाए ऐसा न हो कि कभी कीजिए और कभी न कीजिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा के नज़दीक सब से अच्छा काम वह है जिसे हमेशा किया जाए चाहे वह थोड़ा ही हो।

इज़्हारे हक़ (हक को जाहिर करना)

पस तुम को जो हुक्म दिया गया है उसको खोल कर सुना दो। (अल–हिज्र : ६४)

इस आयत से मालूम हुआ कि सच्ची और हक़ बात को साफ़ साफ़ खुल्लम खुल्ला कहना चाहिए, मलामत या जान व माल के डर से हक़ को छुपाना ठीक नहीं है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि किसी को जब कोई हक़ बात मालूम हो तो उस को इन्सानों के डर से कहने से न रूके।

एक बार आप ने फ़रमाया कि कोई शख़्स अपने को हक़ीर न समझे। सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हम में कोई शख़्स अपने आप को कैसे हक़ीर समझता है? फ़रमाया इस तरह कि उसको ख़ुदा के बारे में एक बात कहने

(शेष पृष्ठ १० पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

३४६. हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि मदीना की एक मामूली औरत रसूलुल्लाहि(सल्ल०) का हाथ पकड़ लेती और जिधर चाहती ले जाती। (बुख़ारी)

३४६. हज़रत अनस (रजि०) से रिवायत है कि वह बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम किया और फ़रमया कि यह हुजूर (सल्ल०) की आदत मुबारिक: थी। (बुखारी, मुस्लिम)

नेकी और बुराई में अन्तर –

३४७. हज़रत नव्वास बिन समआन (रज़ि०) कहते हैं कि मैने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) से नेकी और गुनाह के बारे में पूछा आप ने फ़रमाया नेकी तो हुस्ने अख्लाक़ है और गुनाह हर वह बात है जो तुम्हारे दिल में खटके और तुम ना पसन्द करो कि दूसरे को इस का इल्म हो। (मुस्लिम)

अच्छे अख़्लाक़ की फ़ज़ीलत–

३४८. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) न फुहश बातें करने वाले थे और न तकल्लुफ़ के तौर पर ऐसा करते थे आप फ़रमाया करते थे तुम में सबसे बेहतर वह है जिसके अख्लाक़ सबसे बेहतर हों। (बुख़ारी, मुस्लिम)

गाली गलौज करने वाले को अल्लाह ना पसन्द करते हैं –

हज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया क़ियामत के दिन मुसलमानों के तराजू में अख़लाक से ज्यादा कोई और अमल नहीं होगा अल्लाह तआला फुहश बातें करने वाले को पसंद नहीं करता है। (तिर्मिज़ी)

जन्नत का दाखिला, और जहन्नम में दाख़िल होने का जरिया –

३५०. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने फ़रमाया कि हुजूर (सल्ल०) से पूछा गया कि कौन सा अमल लोगों को जहन्नम में दाखिल करेगा आप (सल्ल०) ने फ़रमाया जबान और शर्मगाह। (तिर्मिज़ी)

सबसे बेहतर वही है जो घर वालों के लिए बेहतर हो –

३५१. हजरत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया सबसे ज्यादा मुकम्मल ईमान वाला वह है जिसके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हों तुम में सबसे बेहतर वह शख्स है जो अपनी बीवी के लिए सब से बेहतर हो। (तिर्मिज़ी)

अख़लाक का ऊंचा मकाम –

३५२. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हुजूर (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना कि मुसलमान अपने अख़लाक़ से रोज़ेदार और तहज्जुद गुज़ार के दर्जे को पहुंच जाता है। (अबू दाऊद)

बहस व मुबाहिसा में उलझना नुक़सान दे है –

३५३. हज़रत अबू उमामा बाहिली (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जिसने बहस व मुबाहिसा में. उलझने को छोड़ दिया, चाहे वह हक ही पर क्यों न हो मैं उसके लिए जन्नत के आस पास घर दिलाने का ज़िम्मेदार हूं और जिस व्यक्ति ने झूठ को छोड़ दिया चाहे मजाक ही में क्यों न हो मैं उसके लिए जन्नत के अन्दर मकान दिलाने का ज़िम्मेदार हूं और जिस के अख़्लाक अच्छे हों मैं उस को जन्नत के अन्दर आला इल्लीईन में मकान दिलाने का ज़िम्मेदार हूं। (अबू दाऊद)

बड़ाई बघारने वाले ना पसंदीदा है –

३५४. हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, क़ियामत के दिन तुम में से मुझे सब से ज़ियादा महबूब और मुझ से करीब वह शख़्स होगा जिसके अख़्लाक़ तुम में सबसे अच्छे होंगे और क़ियामत के दिन मेरे नज़दीक सबसे ज़ियादा ग़ज़ब का हक़दार और मुझसे दूर तुम में वह लोग होंगे जो, तकल्लुफ़ के साथ बातें करते हैं। और हक से आगे बढ़ जाते हैं और गला फाड़–फाड़ कर बात करते हैं तकल्लुफ के साथ फसाहत व बलागत को जाहिर करने वाले अपनी फ़ज़ीलत व बड़ाई जताने के लिए ज़ोर ज़ोर से बातें करने लगे। (तिर्मिज़ी)

इन्किसारी करने और जुल्म व ज़्यादती से बचने की ताकीद–

३५५. हज़रत अयाज बिन हिमार (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे वह्य फ़रमाई है कि इन्किसारी जाहिर करूं ताकि कोई किसी पर गुरूर घमण्ड का मुजाहिरा न करे न कोई किसी पर

ज़ियादती करे। (मुस्लिम)

माफ करने से इज़्ज़त बढ़ती है–

३५६. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया सदकः से माल कम नहीं होता, माफ करने से अल्लाह तआला बन्दे की इज्जत बढ़ाता है, जो बन्दा भी अल्लाह के लिए इन्किसारी करता है अल्लाह तआला उसे बुलन्द करते हैं। (मुस्लिम)

दो बातों में रसूलुल्लाह (सल्ल०) आसान बात को अपनाते थे –

३५७. हज़रत आइशा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को जब दो कामों में अख़्तियार दिया जाता जिसमें गुनाह न होता तो आसान काम अपनाते और अगर गुनाह होता तो सब से ज्यादा आप (सल्ल०) उससे दूर रहते और अपने नफस के लिए कभी बदला न लेते अगर अल्लाह तआला की हुरमतों में कोई बात होती तो अल्लाह तआला के लिए बदला लेते। (बुख़ारी, मुस्लिम)

हुजूर (सल्ल०) का बदले से दूरी–

३५८. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने किसी को अपने से नहीं मारा न किसी औरत को न गुलाम को सिवाय इसके कि अल्लाह के रास्त में जिहाद कर रहे हों और आप को कभी किसी से तकलीफ पहुंची तो तकलीफ पहुंचाने वाले से बदला न लेते, मगर हां जब अल्लाह तआला की हुरमतों से कोई बेहुरमती करता तो आप अल्लाह के लिए बदला लेते। (मुस्लिम)

हिल्म व बुर्दबारी–

३५६. हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं नबी करीम (सल्ल०) के साथ जा रहा था आप (सल्ल०) मोटे किनारे की नजरानी चादर ओढ़े हुए थे एक देहाती आप (सल्ल०) से मिला और चादर पकड़ कर बड़ी जोर से खींचा मैंने देखा कि आप (सल्ल०) के कान्धे पर निशान पड़ गये बोला ऐ मुहम्मद मुझे इस माल से दीजिए जो आप को अल्लाह ने दिया है आप (सल्ल०) ने फ़रमाया छोड़ दो इस को और (यह जहां पेशाब किया है) उसके पेशाब पर एक डोल पानी का बहा दो और तुम सख़्ती के लिए नहीं भेजे गये हो इस लिए भेजे गये हो कि आसानी पैदा को। (बुख़ारी)

ख़ुदा की दो पसन्दीदा आदतें–

३६१. हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने अशज अब्दुल कैस से फ़रमाया तुम्हारे अन्दर दो खूबियां हैं और वह दोनों ही अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० को पसंद है एक इन्किसारी दूसरी बर्दाश्त का क्षमता। (मुस्लिम)

पैग़म्बरों का अमल –

३६२. हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है नबी करीम (सल्ल०) एक नबी की हिकायत बयान फरमा रहे थे हुजूर (सल्ल०) के बयान करने का मन्जर उस वक़्त मेरी आंखों के सामने है। (उन पर अल्लाह का दुरूद व सलाम हो) फरमाया इनको इनकी कौम इतना मारती थी कि खून आलूद कर देती थी और वह अपने चेहरे से खून पोच्छते जाते थे और कहते जाते थे ऐ अल्लाह इनको बख्शदे यह जानते नहीं हैं।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

नर्मी की हैसियत –

३६३. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह तआला नर्म है और नर्मी को ही पसंद करता है नर्मी पर वह अता फ़रमाता है जो सख्ती और उसके अलावा किसी चीज़ पर नहीं देता। (मुस्लिम)

नर्मी ज़ीनत का सामान है –

३६४. हज़रत आइशा (रज़ि०) नबी करीम (सल्ल०) से रिवायत करती है आप (सल्ल०) ने फ़रमाया चीज में नर्मी होती है वह उसको ज़ीनत देती है और जिस चीज से निकल जाती है उसको बर्बाद कर देती है। (मुस्लिम)

जबीहा की तकलीफ का ख़्याल–

३६५. हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने हर काम को अच्छे तरीके पर करने का हुक्म दिया है जब तुम क़त्ल करो तो सहूलत से और जब तुम ज़बह करो तो भलाई के साथ जबह करो। अपनी छुरी तेज कर लो ताकि ज़बीहा को तकलीफ़ न हो। (मुस्लिम)

पहलवान की पहचान –

३६६. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया पहलवान वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे पहलवान वह है जो गुस्से के वक़्त अपने को काबू में रखे।

(बुख़ारी, मुस्लिम)

नर्मी में बड़ा खैर है. –

३६७. हज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) रसूल लुल्लाहि (सल्ल०) से रिवायत करते हैं कि जिस को नर्मी का हिस्सा दिया गया (हक़ीक़त में) इसको खैर का हिस्सा दिया गया, और जो नर्मी के हिस्सा से महरूम हुआ वह (हक़ीक़त में) भलाई के हिस्सा से महरूम हुआ।

(तिर्मिज़ी)

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

प्रौढ़वस्था से मृत्यु तक

निकाह और शादी

प्रौढ़ावस्था के बाद मुसलमान की ज़िन्दगी में महत्वपूर्ण प्रयाणस्थल (मरहले) आते हैं जो स्वाभाविक भी हैं और शरई (धर्म युक्त) भी, उनमें एक मरहला (स्थल) निकाह और शादी का है। इस्लामी शरीअत (धर्म शास्त्र) के दृष्टिकोण से प्रौढ़ावस्था के बाद (विशिष्ट परिस्थितियों को छोड़ कर) शादी में अधिक विलम्ब करना पसन्द नहीं किया गया, ताकि लड़के के लिए पथ भ्रष्ट होने और दुराचार की प्रवृत्ति में अभिवृद्धि होने की सम्भावना कम से कम रह जाये। शरीअत ने इसके लिए कोई विशेष आयु निर्धरित नहीं की, यह लड़के के शारीरिक विकास, स्वास्थ्य, देश की जलवायु और उसकी परिस्थिति पर निर्भर है, परन्तु इस बात को अच्छा माना गया है कि जब वह शादी की आयु को पहुंच जाय तो उसमें जहां तक सम्भव हो देर न की जाय।

शादी के प्रति विचारधारा और रस्मों में भारतीय प्रभाव

हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने अन्य इस्लामी देशों और विशेषकर अरब देशों की तुलना में कुल सम्बन्धी मापदण्ड को कहीं अधिक कठोर एवं संकुचित बना लिया है। यहां सामान्य रूप से एक ख़ानदान अपने बराबर के ख़ानदान ही में, और एक बिरादरी उसी बिरादी में शादी करना आवश्यक समझती है, और इसमें वंशानुक्रमिक रूप से बराबरी तथा बिरादरी का अत्यधिक विचार किया जाता है। इस मामले में यहां अपेक्षाकृत कहीं अधिक कट्टरता का प्रदर्शन किया जाता है। सम्भवतः इस प्रकार की भावना हिन्दुस्तान की विशिष्ट परिस्थितियों तथा अनेक भारतीय जातियों की संस्कृति तथा परम्पराओं का प्रभाव कहा जा सकता है, दूसरे मुल्क के मुसलमान गोत्र एवं वर्ण व्यवस्था के विषय में कहीं अधिक उदार दृष्टि और रीति रिवाजों के बन्धनों से मुक्त दिखाई पड़ते हैं। वहां आर्थिक अथवा सांस्कृतिक या शैक्षिक स्तर पर सामन्जस्य तथा समानता को किसी हद तक आवश्यक समझा जाता है, परन्तु हिन्दुस्तान में विशेष रूप से जो लोग अपने को भद्र तथा उच्च कोटि का आदमी समझते हैं, अपने ही बराबर के ख़ानदान अथवा वंश एवं बिरादरी में रिश्ता करना ज़रूरी समझते हैं।

इस बारे में वे अनेक तथ्यों की उपेक्षा करते हैं और उसमें प्रायः बड़ी जटिलताओं की उत्पत्ति देखने में आई है। अब आर्थिक परिस्थितियों के दबाव, संसार की अर्थव्यवस्था तथा नैतिक दृष्टिकोण बदल जाने और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के प्रभाव से इस विषय में कहीं अधिक लोच पैदा हो गयी है। अब तो अधिकांश लड़के या लड़की की शिक्षा, ख़ानदान की आर्थिक व्यवस्था और रूप रंग को देखा जाने लगा है। यह अनुभव कभी सफल और कभी असफल ज्ञात पड़ता है। लेकिन कुछ सीमित ख़ानदानों और बिरादरियों के अतिरिक्त अब वंश परम्परा तथा सजातीय समस्याकी उपेक्षा की जाने लगी है।

सगे सम्बन्धियों तथा बिरादरी में शादी

मुसलमानों में अपने निकट सम्बन्धियों से तथा उन सम्बन्धियों के अतिरिक्त जिनसे विवाह करना स्थायी रूप से अवैध है, रिश्ता करना हिन्दू रीति रिवाज के प्रतिकूल कदापि बुरा नहीं समझा जाता, बल्कि इसका अधिक रिवाज है और बहुत से ख़ानदानों में इसको प्रधानता दी जाती है। यथा—चचा ज़ाद (चचेरे) मामू—ज़ाद फूफी—ज़ाद, ख़ाला ज़ाद भाई बहनों का रिश्ता। निःसन्देह पहले की अपेक्षाकृत इसकी प्रथा शिक्षा, आर्थिक दशा, स्वास्थ्य और वैद्यक एवं वंशानुक्रम हित के आधार पर कम होती जा रही है।

विवाह का सन्देश

विवाह का सन्देश अथवा मंगनी की रसमों के बारे में सम्भवतः हिन्दू तथा मुसलमानों में कोई अधिक अंतर नहीं है। इसमें ख़ानदानी हैसियत, अर्थ व्यवस्था एवं रीति रिवाज का पालन करने और न करने का बहुत दख़ल है। आधुनिक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों ने इन सब बातों पर एक समान प्रभाव डाला है।

निकाह में पूर्वजों का तरीक़ा (परम्परा)

इस्लाम में निकाह का फ़रीज़ा और विवाहोत्सव अति सरल एवं संक्षिप्त था इसको जीवन का एक परम कर्तव्य, एक स्वाभाविक आवश्यक और एक

इबादत (पुण्य कार्य) के रूप में अदाकिया जाता था। केवल ईजाब–ब–कुबूल (प्रस्तुति तथा स्वीकृति) के दो शब्द और दो गवाह इसके लिए अनिवार्य हैं। इसका उद्देश्य इस बात की वैधानिक रूप से पुष्टि करना है कि यह सम्बन्ध अवैधानिक, दूषित, रहस्यमयी एवं चोरी छिपे नहीं स्थापित हुआ है, अतः इस प्रकिया को किसी सीमा तक एलान तथा शुहरत के साथ सम्पन्न किया जाना चाहिए और इसके लिए गवाहों का होना अनिवार्य है। पुरुष महर का अदा करना ज़रूरी समझें, और स्त्री की सुरक्षा, मान मर्यादा और उसके खान पान का उत्तरदायित्व स्वीकार करें, इसके अतिरिक्त कोई भी बात ज़रूरी न थी। इस्लाम के इतिहास में इसके भी उदाहरण मिलते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थित में जब कि मदीना मुनव्वरा में मुसलमानों की संख्या अति न्यून और मदीना मुनव्वरा की जनसंख्या बहुत सीमित थी, फिर भी कुछ ऐसे सहाबियों ने जो, मक्का मुकर्रमा से हिजरत करके आये थे और जिन के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक ही जन्म भूमि के बासी होने के नाते तथा पारिवारिक घनिष्ठ सम्बन्ध थे, मदीना मुनव्वरा में शादी की और स्वयं पैग़म्बरे इस्लाम को (जिन का सम्मिलित होना बरकत तथा सम्मान का कारण भी था) विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए आमन्त्रित करने की आवश्यकता नहीं समझी, और आप को इस शुभ घटना की जानकारी, अनौपचारिक रूप से, बाद में हुई।

वर्तमान युग में शादी को एक जटिल तथा कष्टदायी रस्म बना लिया गया है

परन्तु इस समय अनेक इस्लामी क्षेत्रों में सामान्य रूप से और हिन्दुस्तान में विशेषकर, शादी ने विस्तृत तथा जटिल रस्म का रूप धारण कर लिया है, तथा पानी के समान धन बहाकर, वैभव एवं प्रतिष्ठा, ख़ानदान की आर्थिक व सांसारिक ख्याति के प्रदर्शन का साधन मात्र बन गई है। इसकी सरलता एवं सुविधा का लगभग अन्त हो गया है और कभी कभी तो वह ऐसी परिस्थितियों को घेर देती है कि लोगों को घोर संकटों विपत्तियों एवं आपदाओं का सामना करना पड़ता है, और यह रस्म ऋण का साधन एवं सिर दर्द बन गई है। जहां तक हमारा अध्ययन तथा अनुभव है, आधुनिक शिक्षा तथा आर्थिक क्रान्ति ने कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं डाला है, और इसके शोधन में कोई सुधारात्मक एवं सराहनीय सेवा नहीं की है। अच्छे धार्मिक एवं शिक्षित ख़ानदानों में अब भी शादियां बड़े धूम धाम और आन–बान के साथ की जाती है, बारातें बड़ी धूम के साथ जाती हैं, निकाह की महफ़िल (सभा) में वैभव एवं प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करने हेतु उसे साज सज्जा से अलंकृत किया जाता है। इस विषय में वैभव, प्रतिष्ठा तथा अपने विस्तृत सम्बन्धों के प्रदर्शन हेतु अनेक नवीनतम पद्धतियां प्रचलित हुई हैं जिनका पहले नाम–व–निशान भी न था। वलीमा (भोज) का प्रबन्ध भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसमें भी अव्यवस्थानुकूल दिल खोल कर ख़र्च किया जाता है और बहुत जगह तो इसमें व्यय की जाने वाली धन राशि हज़ारों से बढ़ कर लाखों तक पहुंच गई है। जिन लोगों के पास नक़्द नहीं होता, वह इसके लिए ऋण और प्रायः सूद ब्याज पर क़र्ज़ लेते हैं। आख्या एवं अभिव्यक्ति, अहंकार एवं अभिमान और होड़ तथा प्रतिस्पर्द्धा की भावनाएं भी खूब काम करती हैं। इसमें भारतीय मुसलमान दुनिया के मुसलमानों से दो हाथ आगे ही हैं।

नाच–गाना तथा राग–रागनी जो इस्लाम के सरासर खिलाफ़ (विरुद्ध) है।

उन घरानों को छोड़कर जो वास्तविक रूप से धार्मिक हैं या जो धर्म सुधारक संगठनों से प्रभावित हो चुके हैं, अन्य मुसलमान घरानों में नाच–गाना तथा राग–रागनी विवाहोत्सवों का एक अंग और हर्ष प्रदर्शन का एक लक्षण है। बहुत से ख़ानदानों में शादी से कई दिन पहले से राग और गीतों का एक सिलसिला आरम्भ हो जाता है। इसके लिए नाइनें, डोमनियां कई दिन पहले से आकर पड़ाव डाल देती हैं, और ख़ानदान की लड़कियां भी इसमें भाग लेती हैं। कई दिन पहले से लड़की मांझे (मायों) बिठाई जाती हैं उसका पर्दा करा दिया जाता है। अब बहुत जगह गाने और रागों का स्थान रेकार्डिन्गस ने लेली है। पुराने ज़माने में विशेषकर रईसों तथा ज़मींदारों के यहां नाच रंग की महफ़िल का भी आयोजन होता था और उसके लिए पेशावर वैश्याओं तथा गाने वालों का आयोजन किया जाता था। अब कुछ धर्म सुधार सम्बन्धी प्रयासों तथा शिक्षा के प्रभाव से और कुछ आर्थिक कठिनाइयों के कारण इसमें बहुत कमी आ गई है।

भारतीय मुसलमानों की शादियों की कुछ स्थानीय परम्पराओं तथा रीतिरिवाज

हिन्दुस्तानी मुसलमानों की शादियों में कुछ तत्व स्थानीय हैं जिन्होंने यहीं के मुसलमानों की विशेषता का

रूप धारण कर लिया है और दूसरे देशों के मुसलमान इनसे अवगत भी नहीं, यथा–भारत के अनेक प्रान्तों में लड़के की ओर से मांगें होती हैं जिनकी पूर्ति करना बेटी वाले के लिए अनिवार्य होता है और जिनको कुछ स्थानों पर तिलक की संज्ञा देते हैं स्वयं भारत में प्रत्येक स्थान पर इसका रिवाज नहीं, अ़रब या तुर्की के मुसलमानों को इसका समझाना भी मुश्किल है कि इसकी वास्तविकता क्या है, और इसका कोई नैतिक औचित्य हो सकता है ? यहां इस विवाद का अवसर नहीं कि इससे लड़कियों को उचित व़र मिलने और उनके माता पिता को इस उत्तर दायित्व की पूर्ति करने में किस प्रकार की कठिनाइयां उत्पन्न हो गई हैं और उन्होंने जीवन को कितना कटु तथा शादी को कैसा अ़ज़ाब बना दिया है। इसी तरह़ से बेटी वालों की ओर से भोज का रिवाज जो एक अच्छा ख़ासा वलीमा मा़लूम होता है दूसरे देशों में नहीं होता इसी प्रकार बेटी की ओर से दिये हुए दहेज का प्रदर्शन और बारात के शहर में गश्त करने का (जो बहुत सी बिरादरियों की एक प्रथा है) भी दूसरे देशों में पता नहीं। इसके अतिरिक्त शादियों में मुंह दिखाई, सलाम कराई, न्योता, बहनोई साले का नाज़ुक रिश्ता और आपस का हंसी मज़ाक़, चौथी आदि के अतिरिक्त और बीसियों रसमें हैं, जो बहुत से हिन्दुस्तानी ख़ानदानों में अभी तक प्रचलित हैं और जो हिन्दुस्तान के साथ विशिष्ट रूप से सम्बंधित है और सम्भवतः इस विश्वास पर आधारित हैं कि शादी एक उल्लास पूर्ण समारोह और मनोरंजन,हंसी मज़ाक़ और आनन्दित होने का शुभावसर है, जिस में ख़ानदान के लोग, निकट सम्बन्धी तथा मित्रगण जीवन की लगी बंधी परिपाटी तथा दैनिक जीवन के लगे बंधे चक्र से थोड़ी देर के लिए मुक्ति प्राप्त कर और किसी सीमा तक नैतिक बन्धनों एवं प्रतिबन्धों की उपेक्षा कर जीवन का आनन्द उठाते हैं। यह विचारधारा हिन्दुस्तान के स्वभाव एवं प्रवृत्ति से मेल खाती है, जो सदैव से आमोद प्रमोद का प्रेमी तथा रंग रंगी एवं नूतनता, मेल मिलाप, अनुकंपा तथा प्रफुल्लता का लालायित रहा है और जिसका प्रदर्शन, यहां के मेलों, त्योहारों तथा रस्मों में किया जाता है।

अल्लाह तआ़ला की बन्दगी करो। किसी को उस का शरीक न ठहराओ और अपने मां बाप के साथ इहसान करो और अपने रिश्तेदारों के साथ भी इहसान करो। (पवित्र कुर्आन)

(पृष्ठ ५ का शेष)

की ज़रूरत हो और वह न कहे। ऐसे शख़्स से ख़ुदा क़ियामत में कहेगा कि तुम को मेरे मुतअ़ल्लिक़ फ़ुलां फ़ुलां बात कहने से किस चीज़ ने रोका? वह कहेगा इन्सानों का डर। ख़ुदा कहेगा कि तुम को सब से ज़ियादा मुझसे डरना चाहिए था। ह़ज़रत अबूज़र गिफ़ारी (रज़ि०) ने जब इस्लाम क़बूल किया और क़ुरैश (जो अभी इस्लाम) न लाये थे के भरे मजमे में जा कर तौह़ीद की आवाज़ बुलन्द की, पस उन पर मार पड़ने लगी, मार खाते खाते जब तक बेदम न हो गये ख़ामोश न हुए और दूसरे दिन फिर ह़क़ का ऐलान किया और काफ़िरों न वही सुलूक किया।

ह़म्दे बारी तआ़ला

गुलसितां के गुलो लालओ नस्तरन
सौसनो जूही बेला गुलाबो समन
और गुलशन के गुल्हाए रश्के चमन
उनको पहनाए तूने हसीं पैरहन
उन गुलों से महकता है गुलशन तमाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू वदूद और ह़बीब और बाइ़स शहीद
तू है हक़्क़ो वकील ऐ ख़ुदाए मजीद
तू कवीयो मतीनो वलीयो ह़मीद
तू ही मुह़सी है मुब्दी है तू है मुईद
तेरे हर नाम पर सदक़ा आ़लम तमाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

तू है मुह़यी मुमीत और बे ऐब है
ह़य्यु क़य्यूम है आ़लिमुलग़ैब है
पाक है लाशरीक एक, लारैब है
तुझ पे हम सब का ईमान बिलग़ैब है
तुमझ को ह़ासिल है मौला ह़याते दवाम
पाक तेरी सिफ़त पाकतेरा कलाम

तू है वाजिद, तू माजिद, तू वाह़िद अह़द
तेरे मज्दो करम की नहीं कोई ह़द
बे नियाज़ी की है शान तेरी समद
बे सहारों की करता है तू ही मदद
बाइ़से ख़ैरो बरकत हैं सब तेरे नाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

क़ादिरो मुक़्तदिर सब पे क़ादिर है तू
तू मक़द्दिम मअख़्ख़िर है ह़ाज़िर है तू
तू ही नाज़िर है अव्वल है आख़िर है तू
तू ही ज़ाहिर है बातिन है क़ाहिर है तू
तेरे औसाफ़ में कुछ नहीं है कलाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा क़लाम

●●●

अल्लाह की राह में

डा० मु० इज्तिबा नदवी

इस्लाम के आरम्भ में इस्लामी सेनाएं रूम व फारस के क्षेत्रों को इस्लामी राज्य में दाखिल करते हुए चीन व तुर्किस्तान की सीमा तक जा पहुंची। उनके सरदारों में एक अत्यन्त प्रतिष्ठित सहाबी हज़रत जियाद बिन हारिसी रज़ि० ने एक बहुत बड़ा इलाका फतह किया। उन तमाम जंगों में उनके एक नवजवान गुलाम फर्रूख ने बड़े बड़े कारनामे अंजाम दिये। बहुत सी जंगों में विजय व सफलता का श्रेय उसी नवजवान के सर था। हजरत ज़ियाद हारिसी ने खुश होकर अपने उस गुलाम को आजाद कर दिया और बहुत सारा माल भी दिया।

कुछ समय के बाद हजरत ज़ियाद हारिसी अल्लाह को प्यारे हो गए। नवजवान फर्रूख को बहुत दुख पहुंचा। उसने मदीना वापस जाने का इरादा कर लिया। मदीना में मदीना वालों ने भी इस नवजवान का हार्दिक स्वागत किया और वहां रहने की दावत दी। फर्रूख अपने साथ बहुत सारी दौलत लेकर आए थे। उससे उन्होंने एक दो मन्जिला मकान खरीदा। एक नेक और अच्छे स्वभाव की लड़की से शादी की और पाक व पवित्र जीवन बिताने लगे। लेकिन उन के दिल में बार बार जिहाद और दीन के प्रचार की लहर उठती रही। उत्साह पैदा होता, दिल में चुटकियां लेता और हजरत जियाद हारिसी के नेतृत्व में अल्लाह के मार्ग में जो समय बिताया था वह याद आ आ कर सताता।

कभी कभी उनका दिल बेचैन हो जाता। एक शाम जब मौसम बड़ा सुहाना था। ठंडी ठंडी हवाएं चल रही थीं। स्वभाव में मस्ती थी, दोनों पति पत्नी मकान की उपरी मंजिल की खुली छत पर बैठे हुए बातें कर रहे थे, अतीत की सुखद यादों में मगन थे कि अचानक फर्रूख ने अपनी प्रिय पत्नी से कहा : मेरा दिल अब फिर अल्लाह के मार्ग में निकलने के लिए बेचैन है, मैं चाहता हूं कि फिर इस्लाम के प्रचार व प्रसार और जिहाद के लिए निकलूं। पत्नी ने जवाब दिया । तुम्हारी उस अमानत का क्या होगा जो मेरे गर्भ में पल रही है। फर्रूख ने कहा मेरे पास तीस हजार दीनार हैं, जिनको मैं तुम्हारे पास छोड़ जाऊंगा। तुम इनसे अपने और अपने बच्चे का खर्च पूरा करना। मैं इन्शा अल्लाह जल्द वापस आऊंगा।

फर्रूख ने अपनी नेक और वफादार पत्नी को खुदा हाफिज कहा। मदीने के लोगों ने उनको शुभ कामनाओं के साथ विदा किया और वह अल्लाह के लिए जिहाद के लिए चले गये। उसके बाद जिहाद व इस्लाम के प्रचार में ऐसे व्यस्त रहे कि समय गुजरता चला गया और पता नहीं चला। जब घर वापसी का इरादा किया तो तीस साल बीत चुके थे। उनकी पत्नी को लोगों ने निराश कर दिया था, फिर भी उनके दिल में आशा की किरण जगमगा उठती थी। उन्होंने अपने बच्चे का नाम रबीआ रखा और उसे अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलायी और पति के दिए हुए तीस हजार दीनार अपने खाने पीने और बच्चे की शिक्षा एवं प्रशिक्षण पर खर्च कर डाला।

रबीआ अब मदीना के प्रमुख और बड़े मुहद्दिस व धर्मशास्त्री बन चुके थे। उनका अपना एक बड़ा प्रभाव क्षेत्र था, लोगों की भीड़ उनकी बातें सुनने आती और लोग इस ज्ञान के स्रोत से लाभ उठाकर दुनिया के कोने कोने को ज्ञान से जगमगा रहे थे।

इक रात इशा की नमाज के बाद जब कि मदीना के लोग अपने अपने बिस्तरों में जा चुके थे, कुछ सो गए थे और कुछ सोने की तैयारी कर रहे थे, अचानक एक ओर से शोर उठा जिसे सुनकर लोग जमा हो गए। कुछ लोग उस ओर दौड़ पड़े जिधर से शोर आ रहा था। आवाज आलिमे दीन रबीआ के घर की ओर से आ रही थी। रबीआ की आवाज सुनाई दी : 'तुम कौन हो, कैसे मेरे घर में घुस आए? तुम्हें दूसरों की इज्जत व सम्मान का ख्याल नहीं, क्या तुम गैर के मकान पर क़ब्ज़ा करना चाहते हो या बुरे इरादे से आए हो?

इसके जवाब में लोगों ने एक गरजदार आवाज सुनी : 'यह मेरा घर है, मैं इस घर का मालिक हूं, तुम यहां कैसे?' फिर आवाज तेज होती गयी। रबीआ की मां ऊपरी मंजिल पर सो रही थीं। शोर सुनकर उसकी नींद टूट गयी। उन्होंने आवाज पर कान लगाए तो जानी पहचानी सी लगी। निकट आकर सुनी तो यह आवाज उनके पति फर्रूख की थी, जो तीस साल के बाद

घर लौटे थे। चीख कर कहा : मेरे बेटे रबीआ ये तुम्हारे बाप हैं। फर्रूख हैं, मेरे पति।

पत्नी की आवाज़ सुनकर फर्रूख का गुस्सा ठंडा हो गया और फिर दोनों बाप बेटे गले मिल कर खुशी से रो पड़े। मदीना वाले अपने घरों को वापस हो गए। फ़र्रूख़ उनकी पत्नी और बेटे रबीआ एक साथ बैठ गए। तीस बरस पहले की यादें ताजा करने लगे। रात का बड़ा हिस्सा बीत गया, तो पत्नी ने कहा फ़र्रूख़ अब सो जाओ। सुबह बातें होंगी और फिर यह भाग्यशाली घराना गहरी नींद में डूब गया। मगर फ़र्रूख़ की पत्नी इस चिंता में सो न सकी कि कल तीस हजार दीनार का हिसाब कैस पेश करूंगी।

जब सुबह को फर्रूख ने नाशता कर लिया तो उनकी नेक पत्नी ने कहा कि फर्रूख जाओ मस्जिद नबवी में दो रकअत नमाज़ पढ़ो और नबी (सल्ल०) के रौज़े पर सलाम पेश करो और कुछ देर वहां की दीनी मज्लिस में समय गुजारो। फर्रूख मस्जिदे नबवी में दाखिल हुए, नमाज व सलाम के बाद हदीस और फिक्ह के विद्वानों की मज्लिसों से गुजरते हुए एक ऐसी मज्लिस में आकर बैठ गए जहां बड़ी संख्या में लोग बैठे थे। एक हदीस पर चर्चा हो रही थी। भाषण देने वाले ने नए आने वाले को पहचान कर नजरें नीची कर लीं और हदीस की रिवायत उसकी व्याख्या व स्पष्टीकरण में व्यस्त हो गए। फर्रूख को यह पाठ बड़ा भला लगा, वे बैठ गऐ थोड़ी देर में उनको लगा कि यह उनके बेटे की आवाज है। मारे खुशी के दिल भर आया। उठे और सीधे अपनी पत्नी के पास पहुंचे और कहाः ऐ नेक दिल औरत ! मेरा बेटा रबीआ तो दीन का बहुत बड़ा विद्वान और मुहद्दिस बन गया है। मुझे उसका हदीस पाठ बहुत अच्छा लगा और उनके पास सुन्ने वालों की संख्या भी सबसे ज्यादा देखी। अल्लाह तुम दोनों को इसका अच्छा इनाम प्रदान करे। तुमने मेरे बच्चे की बड़ी अच्छी शिक्षा की व्यवस्था की।

अब उस औरत के दिल से ३० हजार दीनार के बारे में जवाब देने का भय व शंका दूर हो चुकी थी। उन्होंने बड़ी महब्बत और आदर के साथ कहा कि फर्रूख यह बताओ कि हमारा बेटा रबीआ इस इल्म व गौरव के साथ अच्छा है या तीस हजार दीनार अच्छे हैं? फर्रूख ने तुरन्त जवाब दिया निस्संदेह मेरा बेटा रबीआ अच्छा है।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का उच्च उदाहरण

ख़लीफ़ा–ए–राशिद जनाब उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहम० अपने भाई ख़लीफ़ा सुलेमान बिन अब्दुल मलिक के कफ़न दफन से निमटे तो सदमे, थकान और चिन्ता के बोझ का अनुभव किया। भाई की बीमारी में कई रातों के जागे हुए थे। विभिन्न समस्याओं के अलावा अचानक खिलाफत का बोझ कांधों पर आ पड़ने से चिन्ताएं और बढ़ गईं। खिलाफत का खुत्बा पढ़ने के बाद घर पहुंचे और बिस्तर से पीठ लगाने का इरादा किया ही था कि उनके बेटे अब्दुल मलिक आ गए। उस समय उनकी आयु १७ साल थी। पूछा अमीरूल मोमिनीन क्या करने का इरादा है ? फरमाया बेटे हल्की सी नींद लेना चाहता हूं, शरीर निढाल हो चुका है। बेटे ने कहाः क्या आप लोगों के दुख दर्द दूर किए बिना ही सोना चाहते हैं?

फरमाया बेटे ! तुम्हारे चचा सुलेमान की वफात के कारण मैं कल पूरी रात जागता रहा हूं, बस जुहर की नमाज़ के बाद इन्शाअल्लाह लोगों के मामलों के फैसले के लिए बैठूंगा।' बेटे को तसल्ली नहीं मिली। बोला : क्या अमीरूल मोमिनीन को विश्वास है कि जुहर की नमाज तक जीवित भी रहेंगे।'

बेटे की यह बात सुनकर उमर बिन अब्दुल अजीज का हौसला जाग उठा और आंखों से नींद उड़ गयी। शरीर में ताकत व फुरती आ गयी। फरमाया बेटे मेरे पास आओ। अब्दुल मलिक जब करीब हुए तो उनको सीने से लगाया। पेशानी चूमी फिर कहा : अल्लाह का शुक है कि उसने मुझे ऐसा बेटा प्रदान किया कि जो मेरे दीन के बारे में मेरा मददगार साबित हुआ। इसके बाद बाहर निकले और आदेश दिया कि पीड़ितों और जरूरतमन्दों को बुलाया जाए, ताकि वे अपनी समस्याएं, जरूरतें, शिकायतें और मुकदमे पेश करें।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से ही सम्बन्धित एक दूसरी घटना के बारे में पढ़िए :उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की अनेक औलादें थीं। सभी निहायत नेक, भली, संयमी, अल्लाह से डरने वाली, दीन पर चलने वाली, अल्लाह से डरने और पवित्र जीवन व्यतीत करने वाली। लेकिन उनके बेटे अब्दुल मलिक की बात ही कुछ और थी। वह जगमगाता हुआ तारा और सूरज व चांद था। कम आयु के बावजूद उच्च स्थान रखते थे। बचपन से ही इबादत और अल्लाह के प्रति आज्ञाकारिता का भरपूर शौक था और अल्लाह के डर के मामले में

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से बड़े मिलते जुलते थे। उनके चचेरे भाई आसिम का कहना है कि एक बार मैं दमिश्क आया और अपने चचेरे भाई अब्दुल मलिक का मेहमान हुआ। वे कुंवारे थे और अकेले रहते थे। हम इशा की नमाज पढ़कर अपने अपने बिस्तरों में लेट गए। अब्दुल मलिक ने दिया बुझा दिया और हम गहरी नींद में डूब गए।

आधी रात को मेरी आंख खुली तो देखा कि अंधेरे में अब्दुल मलिक नमाज पढ़ रहे हैं। उनकी जबान पर कुरआन पाक की आयत : क्या वे हमारी ओर से दिए जाने वाले अजाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं? क्या तुम ने कुछ विचार किया? यदि हम उनको कुछ समय तक सुख भोगने दें, फिर उन पर वह चीज आजाए, जिससे उन्हें डराया जाता रहा है, तो जो सुख उनको मिला होगा वह उनके कुछ काम न आएगा।

जिसे वे बार बार दोहरा रहे थे और रो रहे थे, जिससे दिल कांप उठा और डर पैदा हुआ कि कहीं इस रोने धोने से उन्हें कोई कष्ट न पहुंच जाए। अतः मैंने जोर से कहा ला इलाहा इल्लल्लाह वल हम्दु लिल्लाह और इस प्रकार ये शब्द कहे कि मानो मैं नींद से जागा हूं। जब उन्होंने मेरी आवाज सुनी, तो खामोश हो गए और फिर कोई आहट महसूस न की।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने खिलाफत का दायित्व सम्भालने के बाद शाम के उलमा और फुकहा को एकत्र किया और पूछा मैं आप लोगों से उन सम्पत्तियों और माल व दौलत के बारे में मश्वरा करना चाहता हूं, जो मेरे परिवार वालों ने जोर जबरदस्ती से हथिया ली हैं। उन लोगों में से किसी विद्वान ने जवाब दिया कि अमीरूल मोमिनीन यह काम आपके जमाने में तो हुआ नहीं, इसकी जिम्मेदारी तो उन लोगों पर है, जिन्होंने ये सब गलत काम किया है। खलीफा उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को इस जवाब से संतुष्टि नहीं हुई। एक विद्वान ने, जो उन की इस राय से सहमत नही थे, कहा अमीरूल मोमिनीन आप अपने बेटे अब्दुल मलिक को बुला लें। वे उन विद्वानों में से किसी से कम ज्ञान नहीं रखते, जो आज यहां एकत्र हैं। अतएव अब्दुल मलिक बुलाए गए। उनसे पिता उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने पूछा तुम उन ज़ायदानों व माल के बारे में क्या कहते हो जिन पर हमारे चचा व अन्य रिश्तेदारों ने सत्ता के बल पर कब्जा कर लिया था और वे सम्पत्तियां हमारे पास हैं। हमें पता चल चुका है कि उनके असली मालिक कौन लोग हैं?

अ़ब्दुल मलिक ने बिना किसी संकोच के जवाब दिया: जिन सम्पत्तियों के सही मालिकों का पता चल चुकाहै आप वे तमाम सम्पत्तियां और माल व दौलत उनको वापस कर दें। यदि ऐसा न किया गया तो मुझे डर है कि अल्लाह के हुजूर आप भी जुल्म में बराबर के भागीदार होंगे।

इस जवाब से उमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ का चेहरा खिल उठा और उनको सन्तोष हो गया। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के इस बेटे अब्दुल मलिक को माल व दौलत, मान, प्रताप, शासन व सलतनत से न कोई रुचि थी और न कोई लेना देना। उन्होंने इस बात को पसन्द किया कि किसी सीमावर्ती क्षेत्र में रह कर दीन के प्रचार व प्रसार का और जिहाद का काम करें। दमिश्क के सुख चैन और वैभव का जीवन छोड़कर जब वे वहां चले गए तो उनके बाप को बड़ी चिन्ता हुई कि कहीं वह दूसरे वातावरण में रह कर शैतान की चाल का शिकार न हो जाएं, इसलिए उनकी बराबर निगरानी करते रहे और आजमाते रहे। नसीहत, उपदेश व हिदायत देते रहे।

उनके मंत्री, काजी (न्यायधीश) और सलाहकार मैमून बिन मेहरान का कहना है कि एक दिन मैं खलीफा उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की सेवा में पहुंचा तो देखा कि वे अपने बेटे अ़ब्दुल मलिक को एक नसीहत भरा पत्र लिख रहे हैं। उसमें उन्होंने घमंड, गर्व और अपने को दूसरों से बेहतर समझने और शैतानी धोखे व जाल से बचने की सख्त शब्दों में नसीहत की। फिर मुझसे कहा कि मेरा बेटा अब्दुल मलिक मुझे बहुत पसन्द है, मुझे डर है कि कहीं मैं उसकी महब्बत में उसके असल हालात से अनभिज्ञ न रह जाऊं और मैं भी इस धोखे का शिकार न हो जाऊं, जिसमें दूसरे बाप हो जाया करते हैं। तो तुम ऐसा करो कि उसके पास जाकर उसके हालात का अच्छी तरह पता लगाओ कि कहीं घमंड व गर्व तो नही पैदा हो गया है। वह अभी कम आयु लड़का है मुझे उसके बारे में शैतानी चालों से डर लगता है।

मैमून कहते हैं : मैं अब्दुल मलिक के पास पहुंचा। उन्हें नव उम्र नवजवान पाया। सुन्दर शरीफ और बहुत नम्रस्वभाव, बालों के एक सफेद बिस्तर पर बैठे हुए थे। मेरा स्वागत किया और कहा कि मैंने आपके बारे में अपने बाप से प्रशंसा व अच्छी बातें

सुनी हैं। मुझे आशा है कि अल्लाह तआला आप के द्वारा मुझे लाभ पहुंचाएगा। मैंने उनसे पूछा कि क्या हाल है? कहा अल्लाह का शुक्र है कि मैं अच्छे और बेहतर हाल में हूं, बस धड़का यह लगा रहता है कि मेरे बाप को मुझसे बहुत अधिक और अच्छी आशायें पैदा हो गयी हैं, हालांकि मेरे अन्दर वे गुण नहीं हैं जैसा कि वह समझते हैं। मुझे भय है कि कहीं उनकी मोहब्बत मेरे प्रशिक्षण और मेरे हालात से सही जानकारी में बाधा न बन जाए और मैं उनके लिए मुसीबत और परीक्षा न बन जाऊं।

मैमून कहते हैं कि मुझे दोनों के समान विचारों से हैरत हुई। मैंने अब्दुल मलिक से उनके काम के बारे में पूछा तो बताया कि मैंने एक जमीन एक ऐसे आदमी से खरीदी है जिसे वह विरासत में हासिल हुई थी और उसे उसकी कीमत पाक माल से अदा की। मैं उस जमीन की दीवार से गुजर बसर करता हूं और मुसलमानों के गनीमत के माल से अपने को पूरी तरह अलग कर लिया है।

मैमून का कहना है कि मैंने उन जैसे बाप बेटे कहीं और कभी नहीं देखे। अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो।

लेखकों से अनुरोध है कि वह अपने लेख पन्ने के एक ही तरफ लिखा करें और स्वच्छ तथा सुन्दर लिखा करें। लेख भेजने से पहले पढ़ लिया करें।

● संपादक

(पृष्ठ ४ का शेष)

होकर नमाज़ पढ़ो) और दिन में रोज़ा रखो कि अल्लाह तआला सूरज डूबने के वक़्त से दुन्या वाले आसमान पर तजल्ली फ़रमाता है और एलान करता है कि है कोई बख़्शिश चाहने वाला कि उसे बख़्श दूं, है कोई रोज़ी चाहने वाला कि उसे रोज़ी दूं, है कोई मुसीबत से आफ़ियत मांगने वाला कि उसे आफ़ियत दूं, है कोई ऐसा, कोई ऐसा (यानी किसी और मुश्किल में फंसा जिसकी मुश्किल दूर करूं) यह सिलसिला फ़ज्र ज़ाहिर होने तक चलता रहता है, मिश्कात में हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शअ़बान से ज़ियादा किसी महीने में रोज़ा रखते न पाया। (ज़ाहिर है रमज़ान इससे अलग है कि उस में तो पूरे महीने रोज़ा रखना फ़र्ज़ है) यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसें हैं अगरचे सनद के लिहाज़ से बुख़ारी व मुस्लिम की हदीसों जैसी नहीं है, फिर भी इनमें न कहीं हल्वा है न पटाख़ा पस हम को वही करना चाहिए जो हदीसों से साबित है। लिहाज़ा जितना आसानी से हो सके रात में दुआ, इस्तिग़फ़ार, ज़िक्र, तिलावत और नफ़्ल नमाज़ों में गुज़ारें नफ़्ल इबादतों का सवाब इन्तिक़ाल कर गये मुसलमानों को बख़्शें १५ शअ़बान का रोज़ा रखें। जब रोज़ा रखा है तो अच्छे खाने के इहतिमाम में भी कुछ हरज नही बल्कि बेहतर है। बाज़ जगहों पर इस रात क़ब्रिस्तान जाने का मामूल है क़ब्रों की ज़ियारत से अगर अपनी मौत और आख़िरत याद आए तो बड़े नफ़े का काम है लेकिन औरतों को क़ब्रिस्तान जाना और क़ब्रिस्तान को मेला जैसा बना देना बुरा है।

दोस्ती तेरे लिये है दुश्मनी तेरे लिये

शाइक़ रूदौलवी

या इलाही है हमारी ज़िन्दगी तेरे लिए।
हम तेरे बन्दे हैं या रब बन्दगी तेरे लिये।।

हम्द तेरी गा रही हैं, कोयलें और क़ुमरियां।
गुलसितां में बुलबुलों की नग़मगीं तेरे लिए।।

तेरी ही तस्बीह़ में मसरूफ़ है सारा जहां।
नुत्क़ भी तेरे लिए हैं ख़ामोशी तेरे लिए।।

हम तेरे शैदा हैं या रब, शिर्क से बेज़ार हैं।
यह जुनू मेरा, मेरी दीवानगी तेरे लिए।।

मज़हबे इस्लाम ने बख़्शा हमें ऐसा मिज़ाज।
दोस्ती तेरे लिए है, दुश्मनी तेरे लिए।।

ग़ैर के दर पर हमारा सर नहीं झुकता कभी।
यह ख़ुदी तेरे लिए है बेख़ुदी तेरे लिए।।

ज़िन्दगी की मुश्किलों में तू ही देता है नजात।
तू मेरा मुश्किल कुशा है ख़्वाजगी तेरे लिए।।

अंबिया हों, औलिया हों या कोई ख़्वाजा व पीर।
सब तेरे मुह़ताज सबकी आजिज़ी तेरे लिए।।

तेरी ही तक़्दीस में शाइक़ हुआ नग़मा सरा।
मेरे सब अल्फ़ाज़ मेरी शाअ़िरी तेरे लिए।।

Anees Ahmad 0522-2242385(S) 2241117(R)

Famous Foot Wear

Wholeseller and Reteiler, Shoes, Chappal Sandle, Sleeper, Bally etc.

M.301/11, Saray Bans Akbari Gate, Luknow

"तारीख़ दावत व अज़ीमत" से माख़ूज़

दूसरी सदी हिजरी में सुधारात्मक प्रयास और हसन बसरी रह०

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० की वफ़ात के बाद हुकूमत का धारा उसी तरह बहने लगा, जैसे कि उनके पहले बहता था, जाहिलियत (गैर इस्लामी तरीक़ा) ने अपने पंजे मज़बूती से गाड़ लिये उनके जानशीन (स्थानापन्न) ने और उसके बाद आने वालों ने उस अप्रिय बीच के समय की तलाफ़ी (क्षतिपूर्ति) की पूरी कोशिश की, और हुकूमत को उसी चूल पर ले आए, जिस पर वह सुलैमान के ज़माने तक थी।

अब सूरते हाल यह थी कि शख़्सी और मौरूसी (व्यक्ति गति और पैतृक) हुकूमत के तसलसुल (निरंतरता) और दौलत और कामयाबी की बुहतात ने इस्लामी समाज में 'निफ़ाक़ (द्वैवादिता) के जरासीम (कीटाणु) और "मुतरिफीन साबिक़ीन" (पिछली उम्मतों के दौलत मन्दों और ऐश पसन्दों) के अख़लाक़ और आमाल पैदा होने शुरूअ हो गए थे, सोसाइटी में तएयुश (भोग विलास) का उमूमी रूजहान (सामान्य प्रवृत्ति) पैदा हो गया था। ईमान व अमल सुवालेह की ज़िन्दगी जो इस उम्मत का क़ीमती सरमाया (बहुमूल्य पूंजी), उसकी क़ूवत का राज़ (शक्ति का रहस्य) और नबूवत का बहुमूल्य तरका (पैतृक संपत्ति) था, उस समय खतरे में था, डर था कि यह उम्मत अख़लाकी हैसियत से दीवालिया और रूहानी हैसियत से खोखली न हो जाए, दिलों में उदासी, ईमान में कमज़ोरी और अल्लाह के साथ तअल्लुक में इज़मिहलाल (शिथिलता) बड़ी तेज़ी से पैदा होता चला आ रहा था और यह बड़ी चिन्ता जनक बात थी, हुकूमत इस जौहर की हिफ़ाज़त और परवरिश से न सिर्फ बेपरवाह और बेतअल्लुक़ (असम्बन्धित) थी, बल्कि वह स्वयं और उसके नुमाइन्दे (प्रतिनिधि) उस आदेश के लिए वास्तविक ख़तरा बने हुए थे, और अपने व्यक्तिगत चरित्र एवं आचरण से वह उस नैतिक पतन के मुहर्रिक (प्रेरक) और उसकी ओर बुलाने वाले थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस उम्मत में ईमान, अल्लाह तआला के साथ ज़िन्दा तअल्लुक और इनाबत व उबूदियत (अल्लाह की ओर झुकाव और बन्दगी) की जो कैफ़ियात (गुणा) पैदा की थीं, और जो एक नबी ही पैदा कर सकता है वह पतन की राह पर थीं, यह वह कमी थी जो हुकूमत के रकबे (क्षेत्रफल) की विशालता और बड़ी से बड़ी फुतूहात (जीत) से पूरी नहीं की जा सकती थी और जो एक मरतबा ज़ाएल (समाप्त) होने के बाद (पिछली उम्मतों की तारीख़ इसकी गवाह है) बड़ी मुशकिल से वापस लाई जा सकती हैं।

अगर इस सरमाए (पूंजी) की हिफ़ाज़त न की जाती, और ज़माने के असरात (प्रभाव) और अख़लाकी व सियासी (नैतिकता एवं राजनीतिक) अवामिल (Factors) को आज़ादी के साथ अपना काम करने की इजाज़त दे दी जाती, तो यह उम्मत भी पिछली उम्मतों की तरह एक नफ़्स परवर (काम पूजक) आख़िरत फ़रामोश (आखिरत भुला देने वाला) माद्दा प्रस्त (भौतिकवाद) कौम बन कर रह जाती है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में सबसे ज़ियादह ख़तरह इसी बात का था कि यह दुन्या मुसलमानों को हज्म न कर ले, और वह अगली उम्मतों की तरह उसके धारे में पड़ कर बरबाद न हो जाएं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वफ़ात (देहान्त) से कुछ दिन पहले जो खुतबा इरशाद फ़रमाया था उसमें साफ़–साफ़ कहा था–

"मुझे तुम्हारे बारे में फ़क्र व इफ़्लास (दरिद्रता एवं निर्धनता) का खतरह नहीं मुझे जो कुछ खतरह है, वह इस बात का कि दुन्या तुम पर ऐसी खोल दी जाए और फैला दी जाए, जैसी तुमसे पहले लोगों पर फैलाई गई थी, और तुम भी इसमें एक दूसरे से मुकाबला शुरू कर दो, और तुम को भी वह उसी तरह हलाक करदे, जैसे अगलों को हलाक किया।"

ताबिईन की दअ़वते ईमानी-

यह ख़तरा जिसका ज़बाने नबूवत ने इज़हार किया था, जल्द पेश आ गया लेकिन इस ख़तरे का मुकाबला करने के लिए अल्लाह के कुछ मुख़लिस और सर फ़रोश बन्दे मैदान में आए,

जिन्होंने अपनी कूवते इमानी सोज़े दरूं, सुहबत व तरबियत, वअ़ज़ व नसीहत और दअ़वत तलक़ीन से लाखों आदमियों को माद्दियत (भौतिकता) के इस तूफ़ान में तिनके की तरह बहने से बचाया, और ख़ुद इस सैलाब की रफ़्तार को सुस्त कर दिया, उन्होंने उम्मत के ईमानी व रूहानी तसलसुल (निरन्तरता) को क़ाएम रखा, जो उसके नसली सियासी तसलसुल से ज़ियादा ज़रूरी था और उसकी ज़िन्दिगी में वह ख़ला (रिक्त स्थान) नहीं आने दिया, जिसमें सिर्फ एक बेसीरत (बिना चरित्र) बेरूह और बे यक़ीन क़ौम बनकर रह जाए, इस फ़ितने (उप्रदव) का मुक़ाबला करने के लिए फुज़ला–ए–ताबिईन (जिन्होंने असहाबे रसूल की ज़ियारत की और उनसे इल्मी दीनी फ़ाएदा उठाया) की एक सर्वश्रेष्ठ जमाअ़त थी, जिनमें सईद बिन जुबैर रह० मुहम्मद बिन सीरीन रह० और शअबी रह० ख़ास तौर से मुमताज़ (प्रतिष्ठित) थे।

हसन बसरी रह०

इस ख़तरे का वास्तविक मुक़ाबिला करने वाले और ईमानी दअवत के अगवा कार हज़रत हसन बसरी रह० हैं जो सन २१ हिजरी में पैदा हुए उनके वालिद यसार मशहूर सहाबी हज़रत ज़ैद बिन साबित के आज़ाद किये हुए ग़ुलाम थे। उन्होंने उम्मुल मोमिनीन (तमाम ईमान वालों की मां) उम्मे सलमः रज़ि० के घर में परवरिश पाई थी।

हसन बसरी रह० की शख़्सियत (व्यक्तित्व) उनकी दाअ़ियाना सलाहियतें (योग्यताएं)

अल्लाह तआला ने हज़रत हसन बसरी रह० में वह तमाम सलाहियतें (सम्पूर्ण योग्यताएं) इकट्ठा कर दी थीं जो उस ज़माने के मख़सूस हालात में दीन का वक़ार (प्रतिष्ठा) बढ़ाने और दीनी दअ़वत को प्रभावित करने के लिए अनिवार्य थीं। उनकी शख़्सियत (व्यक्तित्व) में बड़ी जामिइयत (व्यापकता) दिल आवेज़ी (आकर्षण) खिचाओ था एक ओर वह दीन में पूर्ण समुद्र थे, गहरी नज़र रखते थे बलन्द पाया मुफ़स्सिर और मुस्तनद मुहद्दिस (प्रमाणित हदीस जानने वाले) थे, जिसके बिना उस समय कोई इस्लाही कोशिश (सुधारात्मक प्रयास) पर अमल मुमकिन नहीं था, सहाबा किराम का उन्होंने अच्छा ख़ासा ज़माना पाया था, और मालूम होता है कि बड़े ग़ौर से उसका मुताअला (अध्ययन) किया था, मुसलमानों की ज़िन्दगी और इस्लामी समाज में जो परिवर्तन हुए थे उन पर गहरी नज़र रखते थे, अपने ज़माने की सोसाइटी, हर तब्क़े (वर्ग) की ज़िन्दगी और समाज से वह पूर्ण रूप से बाख़बर थे, और उसकी खुसूसियात (विशषताओं) और उसकी बीमारियों से एक तजरिबे कार (अनुभवी) हकीम की तरह वाकिफ़ (परिचित) थे, मुंह से फूल झड़ते थे, जब आख़िरत (परलोक) का बयान (वर्णन) करते थे या सहाबा किराम के जीवन काल की तसवीर खींचते थे, तो आंसुओं की झड़याँ लग जाती थीं– इल्म की वसअ़त (विस्तार) का यह हाल था कि रबीअ बिन अनस कहते हैं कि मैं दस वर्ष तक हसन बसरी के पास आता जाता रहा, हर दिन उनसे कोई ऐसी बात सुनता था जो उससे पहले नहीं सुनी।

एक शख़्स ने उनकी इस जामिईयत (व्यापकता) को इस प्रकार बयान किया :–

"वह अपने इल्म, तक़वा, ज़ुहद वरअ़ (संयम) इस्तिग़ना (निस्पृहता) विशालता साहस, समझदारी और इल्म के एतिबार से एक चमकदार सितारा थे, उनकी मजलिस (सभा) में भांति भांति के लोग जाया करते थे, हर एक फ़ाइदा उठाता, एक शख़्स हदीस हासिल कर रहा है एक तफ़सीर में फ़ाइदा उठा रहा है, एक फ़िक़ह (धर्मशास्त्र) का सबक़ ले रहा है और एक फ़तवा (धार्मिक आदेश) पूछ रहा है, कोई मुकदमात फ़ैसला करने और कज़ा के क़वाइद सीख रहा है कोई वअज़ सुन रहा है, और वह एक गहरा समन्दर है जो मौजें मार रहा है और एक रौशन चराग़ हैं। जो मजालिस को पुर नूर कर रहा है–

"अम्रबिल मअ़रूफ़ और नहयि अनिल मुन्कर"

(भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना) के सिलसिले में उनके कारनामे और उच्च अधिकारियों और दौलतमन्दों के सामने पूरी ताक़त कूवत के साथ सच बात को पेश करने के वाकिआ़त, भुलाए नहीं जा सकते।

इसके अलावा और इस सबसे बढ़ कर उनकी तासीर (प्रभाव) की सबसे बड़ी वजह यह थी कि सिर्फ उनकी ज़बान की निकली हुई बात नहीं होती थी बल्कि दिल की गहराई से निकलने वाली बात होती थी जिसका असर लोगों के दिलों पर होता था। जिस वक़्त तक़रीर करते थे सरापा (सर से पांव तक) दर्द व असर होते थे, इसका नतीजा था कि अगरचि बसरा और कूफ़ा में बड़े बड़े इल्म वाले दर्स वाले (पढ़ने पढ़ाने वाले) थे, मगर उनके हलक़–ए–दर्स में जो कशिश (आकर्षण) था, वह किसी के यहां नहीं थी, उसकी बड़ी खुसूसियत (विशेषता) यह थी कि उनको 'कलामे नबूवत' से बड़ा लगाव था। (जारी)

रूपान्तर – *ग़ुफ़रान नदवी*

हज़रत मुहम्मद (सल्ल0) की ज़ौजे मुतह्हरा (बीवी)

हज़रत आइशा (रज़ि0)

सादिका तस्नीम फ़ारूक़ी

आपका आइशा नाम, सिद्दीक़ा और हुमैरा लक़ब उम्मे अब्दुल्लाह कुन्नियत जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि०) की बेटी थी। मां का नाम ज़ैनब और उम्मे रोमान कुन्नियत थी वह कबील–ए–गनम बिन मालिक से थी।

हज़रत आइशा (रज़ि०) नुबूवत के चार वर्ष बाद शव्वाल के महीना में पैदा हुईं सिद्दीक़े अकबर (रज़ि०) वह व्यक्ति हैं जिनसे इस्लाम की सबसे पहले किरणें फूटीं, इस बिना पर हज़रत आइशा (रज़ि०) इस्लाम की उन नेक औरतों में हैं जिनके कानों ने कभी कुफ्र व शिर्क की आवाज़ नहीं सुनी, खुद हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि "जब से मैंने अपने मां बाप को पहचाना उनको मुसलमान पाया।"

(बुख़ारी भाग–दो पेज २५२)

हज़रत आइशा (रज़ि०) को वायल की पत्नी ने दूध पिलाया, वायल का लक़ब अबुलफ़्कीह था, वायल के भाई अफलह, हज़रत आइशा (रज़ि०) के रज़ाई चचा थे जो कभी–कभी उनसे मिलने आया करते थे और रसूल (सल्ल०) की इजाज़त से वह उनके सामने आती थीं। (बुख़ारी ३२०)

तमाम अज़वाजे मुतह्हरात (पत्नियों) में यह शर्फ (प्रधानता) केवल हज़रत आइशा (रज़ि०) को मिला है कि वह मुहम्मद (सल्ल०) की कुंवारी पत्नी थी। मुहम्मद (सल्ल०) से पहले उनकी मंगनी ज़ुबैर बिन मुतअ़िम के बेटे से हुई थी परन्तु जब हज़रत खदीजा (रज़ि०) के इन्तिक़ाल के बाद खौला (रज़ि०) बिन्ते हकीम ने मुहम्मद (सल्ल०) से इजाज़त लेकर उम्मे रूमान से कहा और उन्होंने हज़रत अबू बक (रज़ि०) से ज़िक्र किया, तो चूंकि यह एक किस्म की वादा ख़िलाफी थी बोले कि ज़ुबैर बिन मुतइम से वादा कर चुका हूं परन्तु मुतइम ने खुद इस बिना पर इनकार कर दिया कि अगर हज़रत आइशा (रज़ि०) उनके घर में गयीं तो घर में इस्लाम का कदम आ जाएगा, हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने ख़ौला के ज़रिये मुहम्मद (सल्ल) से निकाह कर दिया, पांच सौ दिरहम महर निश्चित हुआ, यह दस नबवी का क़िस्सा है उस समय हज़रत आइशा (रज़ि०) छः वर्ष की थीं।

यह निकाह इस्लाम की सादगी का नमूना था, अतिया(रज़ि०) इसका किस्सा इस तरह बयान करती हैं कि हज़रत आइशा (रज़ि०) लड़कियों के साथ खेल रही थीं, उनकी अन्ना (नौकरानी) आयीं और उनको ले गयी, हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने आकर निकाह पढ़ा दिया, हज़रत आइशा (रज़ि०) खुद कहती हैं कि जब मेरा निकाह हुआ तो मुझ को खबर तक न हुई, जब मेरी मां ने बाहर निकलने में रोक टोक शुरू की, तब मैं समझी कि मेरा निक़ाह हो गया, इसके बाद मेरी मां ने मुझे समझा भी दिया।

(तबक़ात इब्ने सअ़द भाग ८ पेज ४)

निकाह के बाद मक्का में मुहम्मद (सल्ल०) तीन साल तक रहे। सन तेरह नबवी में आप ने हिज़रत की तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) साथ थे और बीवी बच्चों को दुश्मनों के बीच छोड़ आए थे, जब मदीना में इत्मिनान हुआ तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने अब्दुल्लाह बिन अरीकत को भेजा कि उम्मे रूमान (रज़ि०), अस्मा (रज़ि०) और आइशा (रज़ि०) को लेकर आए, मदीना में आकर हज़रत आइशा (रज़ि०) को बहुत बुखार आ गया इस बीमारी से सर के बाल झड़ गये।

(सही बुख़ारी बाबुल बहरः)

बुख़ार सही हुआ तो उम्मे रूमान को रूख़सती करने का खयाल आया, उस समय हज़रत आइशा (रज़ि०) की उम्र नौ साल की थी।

सहेलियों के साथ झूला झूल रही थीं कि उम्मे रूमान ने आवाज़ दी उनको इस किस्सा की खबर तक न थी, मां के पास आयीं, उन्होंने मुंह धोया बाल सही किये घर में ले गयीं। अन्सार की औरतें इन्तिज़ार में थीं यह घर में दाखिल हुईं तो सब ने मुबारक बाद दी, थोड़ी देर के बाद खुद मुहम्मद (सल्ल०) तशरीफ लाए।

(सही बुख़ारी, तजवीज़ व सीरतुन्नबी सल्ल०)

शव्वाल में निकाह हुआ था और शव्वाल ही में यह रस्म की गयी।

हज़रत आइशा (रज़ि०) के निकाह से बाज़ बेहूदा ख़्यालात में इस्लाह हुई।

अरब वासी मुंह बोले भाई की लड़की से शादी नहीं करते थे इसी बिना पर जब खौला (रज़ि०) ने हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) से मुहम्मद (सल्ल०) का इरादा ज़ाहिर किया तो उन्होंने आश्चर्य से कहा कि क्या यह जायज़ है? आइशा (रज़ि०) तो रसूल (सल्ल०) की भतीजी है।' परन्तु मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम तो केवल दीनी भाई हो।

अरब वासी शव्वाल में शादी नहीं करते थे, पुराने ज़माने में इस महीना में ताऊन (प्लेग) आया था, हज़रत आइशा की शादी और रूख़सती दोनों शव्वाल में हुई।

गज़वात (अर्थात मुहम्मद सल्ल० जिस लड़ाई में साथ थे) में से केवल गज़व–ए–उहद में हज़रत आइशा (रज़ि०) के शामिल होने का पता चलता है सही बुख़ारी में हज़रत अनस (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि मैंने आइशा (रज़ि०) और उम्मे सुलैम (रज़ि०) को देखा कि मश्क भर–भर कर लाती थीं और ज़ख्मियों को पानी पिलाती थीं।

(बुख़ारी भाग २ पेज ५८१)

गज़व–ए–मुस्तलिक़ में पांच हिजरी का क़िस्सा है, हज़रत आइशा (रज़ि०) आप के साथ थीं वापसी में उनका हार कहीं गिर गया, पूरे क़ाफिले को उतरना पड़ा, नमाज़ का समय आया तो पानी न मिला, तमाम सहाबा परेशान थे, मुहम्मद (सल्ल०) को ख़बर हुई और तयम्मुम की आयत नाज़िल हुई इस इजाज़त से तमाम लोग खुश हुए, सय्यद बिन हुजैर (रज़ि०) ने कहा, ऐ अबू बक्र की औलाद ! तुम लोगों के लिए बर्कत हो।"

इसी लड़ाई में मुनाफ़िक़ीन ने हज़रत आइशा (रज़ि०) पर आरोप लगाया, हदीसों और किताबों में इस किस्सा को विस्तार पूर्वक बयान किया है परन्तु जिस किस्सा की निस्बत कुर्आन में साफ बयान है कि सुनने के साथ लोगों ने यह क्यों नहीं कह दिया कि यह बिल्कुल आरोप है। इसको विस्तार के साथ लिखने की ज़रूरत नहीं।

नौ हिजरी में तहरीम और ईला (अर्थात पत्नियों से न बोलना) का किस्सा पेश आया और इस किस्सा तहरीम का विस्तार हज़रत हफ्सा (रज़ि०) के हालात में आएगा हां, ईला का किस्सा विस्तार से इस जगह किया जाता है।

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कम खर्च में ज़िन्दगी गुज़ारा करते थे, दो–दो महीने घर में आग नहीं जलती थी, आए दिन फाक़े होते रहते थे, अज़वाजे मुतह्हरात के साथ में रहने की बर्कत से मुम्ताज़ हो गयी थीं फित्रात तो बिल्कुल खत्म नही हो सकती थी, वह देखती थीं कि इस्लाम रोज़ बरोज़ कामियाब होता जाता है और ग़नीमत का माल इस कदर पहुंच गया है कि उसका आधा हिस्सा भी उनकी राहत व आराम के लिए काफी हो सकता है ऐसी हालात में सब्र का पैमाना छलक जाता था।

एक बार हज़रत अबू बक्र(रज़ि०) व उमर (रज़ि०) मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुए देखा कि बीच में आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं इधर–उधर पत्नियां बैठी हैं और उनका इरादा नफ़का (घरेलू खर्च में बढ़ोतरी) को बढ़ाने का है, दोनों अपनी–अपनी बेटियों को डांटे परन्तु उन्होंने कहा कि हम अब कभी भी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को तकलीफ न देंगे।

और पत्नियां इसी पर कायम रहीं, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सुकून के यह चीजें इस कदर बाधा बनी कि आपने अहद फ़रमाया, एक महीना तक पत्नियों से न मिलेंगे, इत्तिफ़ाक़ यह कि इसी जमाना में आप घोड़े से गिर पड़े और पिंडुली मुबारक पर ज़ख्म आया गया था, आप छत पर अकेले रहने लगे, इस क़िस्सा से लोगों ने ख्याल किया कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सब पत्नियों को तलाक़ दे दी, परन्तु जब हज़रत उमर (रज़ि०) ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से पूछा कि आप ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी? तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया, नहीं यह सुनकर हज़रत उमर (रज़ि०) 'अल्लाहु अकबर' पुकार उठे।

जब ईला की मुद्दत अर्थात एक महीना गुज़र गया तो आप छत से उतर आए सबसे पहले हज़रत आइशा (रजि०) के पास तशरीफ़ लाए, वह एक–एक दिन गिनती थीं, बोलीं, या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप ने एक महीना के लिए वादा फ़रमाया था अभी तो उन्तीस ही दिन हुए हैं, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, महीना कभी उन्तीस का भी होता है।

उसके बाद आयत तख्य्युर नाज़िल हुई, इस आयत के ज़रिये मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को हुक्म दिया गया कि अज़वाज़े मुतह्हरात को सूचित कर दें कि दो चीजें तुम्हारे सामने हैं, दुनिया और आख़िरत अगर तुम दुनिया चाहती हो तो आओ मैं तुम को रूख़सती जोड़े देकर इज्जत व एहतिराम के साथ विदा कर दूं और अगर तुम अल्लाह और

रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और हमेशा राहत की तलबगार हो तो अल्लाह ने नेक लोगों के लिए बड़ा अज्र (सवाब) तय्यार कर रखा है, अतः हज़रत आइशा (रज़ि०) उन मामलात में पेश–पेश थीं, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उनको अल्लाह के फरमान से सूचित किया, उन्होंने कहा, "मैं सब कुछ छोड़कर अल्लाह और रसूल को लेती हूं।" तमाम अज़वाज ने भी यही जवाब दिया। (सही बुख़ारी भाग २ पेज ७६२ व सही मुस्लिम बाबुल ईला)

रबीउलव्वल ग्यारह हिजरी में मुहम्मद (सल्ल०) ने वफ़ात पायी, तेरह दिन बीमार रहे। जिनमें आठ दिन हज़रत आइशा (रज़ि०) के हुजरा (कमरा) में ठहरे, मुरव्वत की वजह से अज़वाज़े मुतह्हरात से साफ तौर पर इजाज़त नही मांगी बल्कि पूछा कि कल मैं किस के घर रहूंगा? दूसरा दिन (दोशम्बा) हज़रत आइशा के यहां रूकने का था अज़वाजे मुतह्हरात ने मरज़ी समझ कर कहा कि आप जहां चाहें रूकें, कमज़ोरी इस कदर थी कि चला नहीं जाता था, हज़रत अली (रज़ि०) और हज़रत अब्बास (रज़ि०) दोनों बाजू थाम कर बहुत मुश्किल से हज़रत आइशा (रज़ि०) के हुजरा में लाए।

वफात (मृत्यु) से पांच दिन पहले जुमेरात को आप को याद आया कि हज़रत आइशा (रज़ि०) के पास कुछ अशरफियां रखवाई थीं, फ़रमाया आइशा! वह अशरफियां कहां हैं ? क्या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह से बुरी धारणा लेकर मिलेगा, जाओ उनको अल्लाह की राह में ख़ैरात कर दो।

(मुसनद इब्ने हम्बल भाग ६ पेज ४६)

जिस दिन वफात (मृत्यु) हुई (अर्थात सोमवार के दिन) देखने में तो तबीअत को सुकून था परन्तु दिन जैसे–जैसे बढ़ता जाता था आप बेहोश होते जाते थे, हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं आप जब तन्दुरुस्त थे तो फ़रमाया करते थे कि पैग़म्बरों को अख्तियार (अधिकार) दिया जाता है कि वह चाहे मौत को कुबूल करें या दुनिया की ज़िन्दगी को कुबूल करें, इस हालत में अक्सर आप की जबान से यह शब्द अदा होते रहे। और कभी फ़रमाते वह समझ गयी अब केवल आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह से मिलने वाले हैं।

वफ़ात (मृत्यु) से थोड़ी देर पहले हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के बेटे अब्दुर्रहमान आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ख़िदमत में आए, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हज़रत आइशा (रज़ि०) के सीना पर मिस्वाक थी, मिस्वाक की, और ग़ौर से देखा हज़रत आइशा (रज़ि०) समझीं कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मिस्वाक करना चाहते हैं। अब्दुर्रहमान से मिस्वाक लेकर दांतों से नर्म की, और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दे दीं, आप ने बिल्कुल तन्दुरुस्तों की तरह मिस्वाक की, हज़रत आइशा (रज़ि०) बड़े गर्व से कहा करती थी, "सब पत्नियों में मुझी को यह हक़ हासिल हुआ कि आख़िरी समय में भी मेरा झूठा आपके मुंह में लगाया।"

अब वफ़ात का समय क़रीब आ रहा था, हज़रत आइशा (रज़ि०) आप को संभाले बैठी थीं कि अचानक बदन का बोझ मालूम हुआ, देखा कि आंखें फट कर छत से लग गयी थीं और रूह पाक (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) परवाज़ कर गयी हज़रत आइशा (रज़ि०) ने धीरे से सर मुबारक तकिया पर रख दिया और आंखें भर आईं।

हज़रत आइशा (रज़ि०) की सबसे बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि उनके ही हुजरा (कमरा) में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दफन किया गया, अतः अज़वाजे मुतह्हरात के लिए अल्लाह ने दूसरी शादी करने के लिए मना कर दिया था, इसलिए मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद हज़रत आइशा (रज़ि०) ने अंड़तालीस साल बेवगी (विधवा) की ज़िन्दगी गुज़ारी, इस ज़माना में उनकी ज़िन्दगी का मक्सद कुर्आन व हदीस की तअ़लीम थी, जिसका जिक्र आगे आएगा।

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की वफात के बाद दो वर्ष बाद सन तेरह हिजरी में हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने इन्तिक़ाल फ़रमाया और हज़रत आइशा के लिए महब्बत का साया भी बाकी न रहा।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के बाद हज़रत उमर (रज़ि०) ख़लीफ़ा हुए उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि०) की जिस कदर ढारस बंधाई वह खुद इसको इस तरह बयान करती हैं। इब्ने खत्ताब ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद मुझ पर बड़े बड़े एहसानात किये हैं।

(मुसतदरक हाकिम भाग ४ पेज ८)

हज़रत उमर (रज़ि०) ने तमाम अज़वाज़े मुतह्हरात का दस–दस हज़ार सालाना वज़ीफा निश्चित फ़रमाया था परन्तु आइशा (रज़ि०) का वज़ीफा बारह हज़ार था जिसकी वजह यह थी वह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को सबसे ज्यादा महबूब थीं। (मुस्तदरक)

हज़रत उस्मान (रज़ि०) के क़िस्स–ए–शहादत में हज़रत आइशा (रज़ि०) और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि०) ने मदीना से जाकर किस्सा बताया तो सुधार करने के लिए बसरा गयीं और वहां हज़रत अली (रज़ि०) से लड़ाई हुई, जो जंगे जम्ल के नाम से मशहूर है, जम्ल ऊंट को कहते हैं, अतः हज़रत आइशा (रज़ि०) एक ऊंट पर सवार थीं और उन्होंने इस लड़ाई में बड़ी अहमियत हासिल की थी। इसलिए यह लड़ाई भी इसी की वजह से मशहूर हो गयी,

यह लड़ाई इत्तिफ़ाक से हो गयी थी मगर आइशा (रज़ि०) को इसका हमेशा अफसोस रहा।

बुख़ारी में है कि वफ़ात के समय उन्होंने वसीयत की कि "मुझे रौज़–ए–नबवी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में आप के साथ दफ़न न करना बल्कि बकीअ़ में और अज़वाज के साथ दफन करना क्योंकि मैंने आपके बाद एक जुर्म किया है। (किताबुल जनायज़ व मुस्तदरक हाकिम भाग ४ पेज ८)

इब्ने सअ़द में है कि वह जब यह आयत पढ़ती थीं ऐ पैग़म्बर की पत्नियों ! अपने घरों में इज़्ज़त के साथ बैठो तो इस कदर रोती थीं कि आंचल तर हो जाता था।

(तबक़ात इब्ने सअ़द जजा–ए–शानी)

हज़रत अ़ली (रज़ि०) के बाद हज़रत आइशा (रज़ि०) अठारह वर्ष और ज़िन्दा रहीं और यह तमाम ज़माना सुकून और ख़ामोशी में गुज़रा।

अमीर मुआ़विया (रज़ि०) का अख़ीर ज़मान–ए–ख़िलाफ़त था कि रमज़ान अट्ठावन हिज़री में हज़रत आइशा (रज़ि०) का इन्तिक़ाल हुआ, उस समय यह सरसठ वर्ष की थीं और वसीयत के मुताबिक जन्नतुल बकीअ में रात के समय हज़रत अबू हुरैरह, मरवान बिन हकम की ओर से मदीना के हाकिम थे, इसलिए उन्होंने नमाज़ें जनाज़ा पढ़ाई।

हज़रत आइशा (रज़ि०) के कोई औलाद नहीं हुई, इब्ने अअ़राबी ने लिखा है कि एक बच्चा ख़त्म हो गया था उसका नाम अब्दुल्लाह था और उसी के नाम पर उन्होंने कुन्नियत रखी थी परन्तु यह गलत है, हज़रत आइशा (रज़ि०) की कुन्नियत उम्मे अब्दुल्लाह उनके भांजे अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) के सम्बन्ध से थी जिनको उन्होंने ले पालक बनाया था।

हज़रत आइशा (रज़ि०) खुश मिजाज़ और खूबसूरत थीं, रंग लाल और सफेद था, इल्मी हैसियत से हज़रत आइशा (रज़ि०) को न केवल औरतों पर, न केवल उम्महातुल मोमिनीन पर, न केवल खास–खास सहाबियों पर बल्कि तमाम सहाबा पर फ़ज़ीलत हासिल थी। जामेअ़ तिर्मिज़ी में हज़रत अबू मूसा अशअ़री से रिवायत है,

हमको कभी कोई ऐसी मुश्किल बात पेश नहीं आई जिसको हमने आइशा (रज़ि०) से पूछा हो और उनके पास उसके सम्बन्ध में कुछ मालूमात न मिली हों।

इमाम जुहरी जो सरखेल ताबईन थे, फ़रमाते हैं,

आइशा (रज़ि०) तमाम लोगों में सब से ज्यादा आलिम थीं बड़े–बड़े अकाबिर सहाबा उनसे पूछा करते थे। (तबक़ात इब्ने सअ़द भाग २ खण्ड २ पेज २६)

उरवह बिन जुबैर (रज़ि०) फ़रमाते हैं –

कुर्आन, फरायज़, हलाल व हराम, फ़िक़:, शायरीतिब, अ़रब की तारीख और निस्बत का आलिम आइशा (रज़ि०) से बढ़कर किसी को नहीं देखा।

इमाम जुहरी की एक शहादत है –

अगर तमाम मर्दों का और उम्महातुल मोमिनीन का इल्म एक जगह जमा किया जाए तो हज़रत आइशा (रज़ि०) का इल्म वसीअ़ तर (बहुत बढ़कर) होगा

हज़रत आइशा (रज़ि०) की गिनती मुजतहदीन (मुफतियों) सहाबा में है और इस हैसियत से वह इस कदर बुलन्द हैं कि बेतकल्लुफ उनका नाम हज़रत उमर (रज़ि०), हज़रत अ़ली (रज़ि०) अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) और अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) के साथ लिया जा सकता है वह हज़रत अबू बक्र (रज़ि०), हज़रत उमर (रज़ि०), हज़रत उस्मान (रज़ि०) के ज़माना में फ़त्वा देती थीं और अकाबिर सहाबा पर उन्होंने जो बारीक एतिराज़ात किये हैं उनको अल्लामा सुयूती ने एक किताब में जमा कर दिया है, उस किताब का नाम ऐनुल असाबा फी मुस्तदरकति आइशा अस्सहाबा है।

हज़रत आइशा (रज़ि०) मुफ़स्सिरीन सहाबा में शामिल हैं, उनसे २२१० हदीसें मरवी हैं। इमाम बुखारी ने इनसे ५४ हदीसें रिवायत की हैं, ६८ हदीसों में इमाम मुस्लिम मुन्फरिद (एकाकी) हैं, बाज़ लोगों का कहना है कि एहकामे शरइया में से एक चौथाई उनसे मनकूल है।

इल्म कलाम के कुछ मसाएल उनकी ज़बान से अदा हुए हैं, अतः रुयते बारी, इल्म ग़ैब, असमते अंबिया, मेअ़राज, तर्तीबे ख़िलाफत और समा–ए–मोत्ता आदि के सम्बन्ध में उन्होंने जो ख्यालात जाहिर किया हैं इन्साफ़ यह है कि उनमें उनकी गहरी नज़र का पल्ला भारी मालूम होता हैं।

इल्मे असरारे दीन के सम्बन्ध में भी उनसे मसायल मरवी हैं अतः कुर्आन मजीद की तर्तीबे नुजूल, मदीना में कामियाबी–ए–इस्लाम के असबाब, गुस्ल जुमा, नमाज़े क़स्र की इल्लत, सौमे आशूरः का सबब, हज की वास्तविकता और हिजरत के मअ़ना उन्होंने खास तौर से बयान किये हैं।

तिब्ब के सम्बन्ध में वही आम मालूमात थीं जो घर की औरतों को आम तौर पर होती हैं।

मगर तारीख़े अ़रब में वह अपना जवाब नहीं रखती थीं, अरब जाहिलियत के हालात उनके रस्म व रिवाज, उनके अनसाब और उनकी पूरे समाज के सम्बन्ध में उन्होंने बाज़ ऐसी बातें बयान की हैं जो दूसरी जगह नहीं मिल

सकतीं। इस्लामी तारीख के सम्बन्ध में भी बाज़ महत्वपूर्ण किस्से उनसे मन्कूल (कहे हुए) हैं जैसे कि वह्य जब शुरू हुई उसकी हालत, हिज़रत के किस्से, उफक का किस्सा, कुर्आन का नाज़िल होना और उसकी तर्तीब, नमाज़ की सूरतें, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मर्जुल मौत के हालात ग़ज़व–ए–बद्र, उहद, खन्दक, कुरैज़ा के क़िस्से, गज़व–ए–जातुर्रकअ़ में नमाज़े खौफ़ की हालत, फ़त्हा मक्का में औरतों की बैअ़त, हज्जतुल विदअ़ के ज़रूरी हालात, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अख्लाक़ (व्यवहार) व आदात, खिलाफतें सिद्दीकी, हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) और अज़वाजे मुतह्हरात का दावा मीरास, हज़रत अ़ली (रज़ि०) का मलाले खातिर और फिर बैअ़त के तमाम हालात उन्हीं के जरिए से मालूम हुए हैं।

अदबी हैसियत से वह बहुत शीरीं कलाम और फ़सीहुल लिसान थीं, तिर्मिज़ी में मूसा इब्ने तल्हा का कौल नक़्ल किया है–

मैंने आइशा (रज़ि०) से ज्यादा किसी को फ़सीहुल लिसान नही देखा।

अगरचे हदीस में रिवायत के माना का आम रिवाज है और रिवायत कम और बहुत कम होती है, नहीं तो जहां हज़रत आइशा (रज़ि०) के असली शब्द हिफ़ाज़त से रह गये हैं पूरी हदीस में जान पड़ गयी है जैसे वह्य शुरू हो जाने के सिल्सिले में फ़रमाती हैं :–

आप (सल्ल०) जो ख़्वाब (सपना) देखते थे सुबह सफेदी की तरह नमूदार हो जाता था।

आप पर जब वह्य की हालत तारी होती तो माथे पर पसीना आ जाता था इसको इस तरह बयान करती हैं, पेशानी पर मोती ढुलकते थे।

किस्स–ए–उफक में उन्हें रातों को नीदं नहीं आती थी, उसको इस तरह बयान करती हैं।

"मैंने सुरम–ए–ख्वाब नहीं लगाया।" सही बुख़ारी में उनके ज़रिये से उम्मे ज़रआ का जो क़िस्सा बयान है वह जाने अदब है और अहले अदब ने इसकी स्पष्ट शरहें और हाशिए लिखे हैं।

तकरीर के लिहाज़ से भी हज़रत उमर (रज़ि०) और हज़रत अ़ली (रजि०) के सिवा तमाम सहाबा में मुम्ताज़ (प्रतिष्ठित) थीं, जम्ल की लड़ाई में उन्होंने जो तकरीरें की हैं वह जोश और जोर के लिहाज़ से अपना जवाब नहीं रखतीं, एक तक़रीर में फ़रमाती हैं। लोगों ! ख़ामोश, ख़ामोश तुम पर मेरा मादरी (मां जैसा) हक है, मुझे नसीहत की इज़्ज़त हासिल है, सिवाय उस व्यक्ति के जो अल्लाह का फ़रमाबरदार नहीं है, मुझ को कुछ इल्ज़ाम नहीं दे सकता, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मेरे सीना पर सर रखे हुए वफात (मौत) पाई है, मैं आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की महबूब पत्नी हूं, अल्लाह ने मुझ को दूसरों से हर तरह महफूज़ रखा और मेरी ज़ात से मोमिन व मुनाफ़िक़ में तमीज़ हुई, और मेरे ही वजह से तुम पर अल्लाह ने तयम्मुम का हुक्म नाज़िल फ़रमाया।

फिर मेरा बाप दुनिया में तीसरा मुसलमान है और ग़ारे हिरा में दो का दूसरा था और पहला व्यक्ति था, जो सिद्दीक़ के नाम से जाना जाता था, और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उनसे आख़िर वक़्त तक खुश रहे और आख़िर वक़्त में नमाज़ का इमाम बनाया। आपके बाद जब मज़हबे इस्लाम की रस्सी हिलने डूबने लगी तो मेरा ही बाप था, जिसने उसके दोनों सिरे थाम लिए, जिसने निफ़ाक़ की बाग रोक दी, जिसने धर्म परिवर्तन का स्रोत ख़त्म कर दिया जिसने यहूदियों की भड़कती हुई ज्वाला को ख़त्म कर दी, तुम लोग उस समय आखें बन्द किये लड़ाई झगड़ा की प्रतीक्षा कर रहे थे, और शोर व गुल पर कान धरे हुए थे उसने दरार को बराबर किया, बेकार को दुरुस्त किया, गिरतों को संभाला, दिलों की बीमारियों को ज़मीन में दफन करके दूर किया जो पानी खूब पी चुके थे उनको थान तक पहुंचा दिया जो प्यासे थे, उनको घाट पर ले आया और जो एक बार पानी पी चुके थे उन्हे दोबारा पिलाया जब वह निफ़ाक़ का सर कुचल चुका और शिर्क के लिए लड़ाई की ज्वाला उत्तेजित कर चुका और तुम्हारे सामान की गठरी को डोरी से बांध चुका तो अल्लाह ने उसे उठा लिया।

हां मैं सवाल का निशाना बन गयी हूं कि क्यों फौज लेकर निकली? मेरा मक़्सद इससे गुनाह की तलाश और फित्ना व फ़साद जुस्तजू (तलाश) नही जिसको मैं ख़त्म करना चाहती हूं जो कुछ कह रही हूं सच्चाई और इन्साफ के साथ चेतावनी और झगड़ा को खत्म करने के लिए। (अकदुल फ़रीद बाबुल खतीब व ज़िक्र व वाक़–ए–जम्ल)

हज़रत आइशा (रज़ि०) अगरचे शेर नहीं कहती थीं, मगर शायराना मिजाज इस कदर पाया था कि हज़रत हस्सान इब्ने साबित (रज़ि०) जो अरब के मशहूर शायर थे, वह उनकी ख़िदमत में अशआर सुनाने के लिए हाज़िर होते थे, इमाम बुख़ारी ने अब्दुल मुफ़रद में लिखा है कि हज़रत आइशा (रज़ि०) को कअब बिन मालिक (रज़ि०) का पूरा कसीदा याद था, इस क़सीदा में कम व बेश चालीस शेर थे, कअ़ब (रज़ि०) के अ़लावा उनको और जाहिली और इस्लामी शुअ़रा के अशआ़र भी बहुत से याद थे, जिनको वह उचित

जगहों पर पढ़ा करती थीं, अतः अहादीस की किताबों में दर्ज है।

हज़रत आइशा (रज़ि०) न केवल इन उलूम (ज्ञानों) की माहिर थीं बल्कि दूसरों को भी माहिर बना देती थीं, अतः उनके दामने तर्बियत में जो लोग परवरिश पाकर निकले, अगर चे उनकी तादाद दो सौ के लगभग है, परन्तु उनमें जिनको ज्यादा विशेषता हासिल थी वह निम्न लिखित हैं:

उक़्बा बिन जुबैर, कासिम बिन मुहम्मद, अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान, मसरूक, बिन इमरः, सफ़्या बिन्ते शैबा, आइशा बिन्ते तल्हा, मुआविया अदवियः।

व्यवहार की हैसियत से भी बहुत ऊंचा मुकाम रखती थीं, वह बहुत कानेअ़ (निस्पृह) थीं और बहुत खुद्दार थीं, बहादुरी से दिलेरी भी उनका खास जौहर था ग़ीबत से बहुत बचती थीं, एहसान कम कुबूल करतीं, अगरचे खुद तारीफ नापसंद थीं।

वह बहुत ही सख़ी (दानशील) थीं, हज़रत जुबैर (रज़ि०) फ़रमाया करते थे कि मैंने उनसे ज़्यादा सख़ी किसी को नहीं देखा, एक बार अमीर मुआविया (रज़ि०) ने उनकी ख़िदमत में लाख दिरहम भेजे तो शाम होते–होते सब खैरात कर दीं। और अपने लिए कुछ न रखा, इत्तिफ़ाक़ से उस दिन रोजः रखा था, नौकरानी ने कहा इफ्तार के लिए कुछ नहीं है, कहा पहले से क्यों न याद दिलाया ।

(मुस्तदरक हाकिम भाग ४ पेज १३)

एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ि०) जो उनके मुतबन्ना (ले पालक) बेटे थे उनकी फ़य्याज़ी (दानशीलता) देख कर घबरा गये और कहा कि अब उनका हाथ रोकना चाहिए, हज़रत आइशा (रज़ि०) को मालूम हुआ तो बहुत नाराज हुईं और कसम खाई कि उनसे बात न करेंगे, अतः इब्ने जुबैर (रज़ि०) से बहुत दिनों तक नहीं बोलीं और बड़ी मुश्किल से उनका गुस्सा ख़त्म हुआ।

(सही बुख़ारी बाब मनाकिब कुरैश)

बहुत इबादत गुज़ार थीं, चाश्त की नमाज़ बराबर पढ़तीं, फ़रमाती थीं कि अगर मेरे बाप भी कब्र से उठ आए और मुझको मना करे तब भी मैं बाज़ न आऊंगी, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद जब कभी यह नमाज़ कज़ा (छूट) हो जाती तो नमाज़े फ़र्ज़ से पहले उठकर उसको पढ़ लेती थीं, रमज़ान में तरावीह का खास एहतिमाम करती थीं। जकवान उनका नौकर इमामत करता और वह मुकतदी होतीं।

अक्सर रोज़े रखा करती थीं, हज की भी बहुत पाबंद थीं और हर साल इस फ़र्ज़ को अदा करती थीं, नौकरों से मुहब्बत करतीं और उनको ख़रीद कर आज़ाद करतीं थीं उनके आज़ाद करने वाले नौकरों की तादाद ६७ है। (शर्ह बलगुल मराम)

(पृष्ठ २३ का शेष)

तादाद हजारों में होती है। मिसाल के लिए जिला स्तर पर एक अधिकारी अगर रिश्वत लेता है तो उसे रिश्वत देने वाले लोगों की संख्या हज़ारों में हो सकती है और इस गुनाह को करने वाले और कभी कभी सहयोग के नाम पर खुले आम करने वाले हज़ारों लोग मिल जायेगें। यही स्थिति विचौलियों की है। और हमको अपनी गलती का एहसास तक नहीं होता, दिल पर कोई चोट नहीं लगती। गलती को गलती का मानना, न महसूस करना और भी घातक है। कितना अच्छा होता कि हम अपने हित में गल्ती को गल्ती महसूस करना सीख जाते। नेक कामों के करने का हुक्म देते, बुरी बातों से रोकने का चलन आम करते।

हम हैं गुलामे सय्यदे अबरार दोस्तो

हैदर अ़ली नदवी

हम हैं गुलामे सय्यदे अबरार दोस्तो
बेहतर है सबसे इसलिए किरदार दोस्तो
ग़द्दार हमको कहते हैं ग़द्दार दोस्तो
अपने वतन के हम हैं वफ़ादार दोस्तो
तारीख़ दे रही है शहादत ये बरमला
सीने पे हमने रोका है हर वार दोस्तो
जलयान वाला बाग बताएगा ये तुम्हें
हम हैं वतन के कितने परस्तार दोस्तो
वह करगिल की जंग हो या कि बाला कोट हो
क़ुरबान हमने कर दिए घर बार दोस्तो
जांबाज़ ऐसा आप हमे पेश कीजिए
टीपू सा कोई साहिबे तलवार दोस्तो
हुब्बे वतन की हमसे सनद मांगते हैं वह
दर परदा जो वतन से हैं बेज़ार दोस्तो
मरने के बाद भी हमें ख़ाके वतन मिली
कितना अटूट मुल्क से है प्यार दोस्तो
इज़्ज़त को अपने मुल्क की हम बेचते नहीं
इस्लाम से मिला है ये किरदार दोस्तो
रिश्वत घोटाले, और ग़बन जालसाज़ियां
हर सम्त अब वतन में है व्यापार दोस्तो
मस्जिद शहीद करके मनाया गया है जश्न
इन्साफ़ कर लो कौन गुनहगार दोस्तो
हैवानियत का अपनी दिया किसने है सुबूत
गुजरात में ये लाशों के अम्बार दोस्तो
होने लगा है अब हमें महसूस भी यही
अपना नहीं है कोई भी ग़मख़्वार दोस्तो
फ़िरकों में बंट के हो गये इस दर्जे हम हक़ीर
हंसते है हमको देख के अग़यार दोस्तो
आक़ा की पैरवी को समझते नहीं अ़दू
लादेन के उससे जोड़ दिए तार दोस्तो
मोमिन हैं, हम भी रखते हैं कुरआन पर यकीं
आका का होगा हमको भी दीदार दोस्तो
हैदर की रोज व शब है खुदा से यही दुआ़
उर्दू का अब बुलन्द हो मेअयार दोस्तो

●●●

समाज सुधार

नेक कामों के करने का हुक्म और बुरी बातों से रोकना

मो० हसन अन्सारी

अच्छाई और बुराई हर समाज में हमेशा रही है कहीं कम कहीं जियादा। जब किसी समाज में अच्छाइयों और नेकियों के करने वाले अधिक होते हैं तो उसे सभ्य समाज कहा जाता है ऐसे समाज में सुख–चैन अधिक होता है। सुख–चैन दौलत की भरमार का नाम नहीं, भौतिक सुविधाओं की सहज प्राप्ति का नाम नहीं, उच्च जीवन स्तर का नाम नहीं। सच्चा सुख–चैन मन की शान्ति का नाम है, आत्म सन्तोष का नाम है, खुदा ने जो कुछ दिया है उसे बांटते रहने और देते रहने का नाम है, ऐसा देना जिसमें कुछ पाने का एहसास और अनुभूति हो, जिस परोपकार के करने से दिल खिल उठे, जिसकी खुशी अन्दर अन्दर महसूस की जाये पर कही न जा सके। इसी लिए कहा गया है 'परहित सरिस ध र्म नहीं भाई।' सच्चे सुख–चैन की प्राप्ति एक और सिर्फ एक पालनहार से डरते रहने में है, बहुतों से भयभीत रहने में नहीं। राजा ने एलान कराया, "आज मैं बहुत खुश हूं, आज के दिन इस घड़ी में जो व्यक्ति जिस चीज पर हाथ रख दे वह चीज उसे दे दी जायेगी, उसे उसका मालिक बना दिया जायेगा। अपने अपने तौर से सबने चतुराई दिखाई और लपक लपक कर क़ीमती चीज़ो पर हाथ रखने लगे; कलन्दर खड़ा सोचता रहा। मूक दर्शक की तरह। फिर एक दम से आगे बढ़ा और राजा के सर पर हाथ रख दिया।" वह चतुर था, ज्ञानी था वह जानता था एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाच। और वह जानता ही नहीं था, मानता भी था।

समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है और सबसे बड़ी इकाई 'वसुन्धरा'। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अर्थ है सारी धरती एक कुटुम्ब है, परिवार है, खानदान है। जानकार जानते हैं कि आज कल सामाजिक जीवन में नेक कामों के करने का हुक्म करेन और बुरी बातों से रोकने का चलन बहुत कम हो गया है और यही वस्तु–स्थिति (सूरते हाल) समाज में व्याप्त बुराइयों की जड़ है और यही कारण हे कि आज समाज में ज़ालिम का हाथ पकड़ने वाले तो दूर की बात है ज़ालिम को ज़ालिम कहने वाले न रहे, और जो रहे भी ऐसे कि नक्कारखाने में तूती की आवाज़। मान्यतायें बदल गयीं। व्यक्ति पर जुल्म ढाया जाये तो जुल्म, व्यक्तियों, राष्ट्रों पर जुल्म ढाया जाये तो जुल्म नहीं। मज़लूम की आह से डरने वाले न रहे। 'मुईंखाल की स्वांस से लौह भसम हुई जाय" ऐसे लोग न रहे। मज़लूम की आह से डरने वाले न रहे। ख़बरदार ! कहने वाले न रहे। जो मां–बाप घरों में अपने बच्चों को बुरी बातों से रोकने का साहस न जुटा सकें वह जिस समाज के अंग हैं, वह समाज क्यों कर कह सकेगा। खबरदार और जग हंसाई के डर से अगर उस के मुंह से खबरदार । का शब्द निकल भी गया तो इसका क्या असर होगा ?

समाज में नेक कामों के करने का हुक्म और बुरी बातों से रोकने में कमी आने के कारण अनेक बुराइयों ने समाज में घर बना लिया है कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की इस कथनी को आम किया जाय, इसके दूरगामी प्रभाव को समझा जाये और इस पर अमल किया जाये, व्यक्ति के स्तर पर परिवार के स्तर पर, प्रत्येक जन समुदाय के स्तर पर शासन और सरकार के स्तर पर, नेशन्स के स्तर पर और अन्ततः विश्वव्यापी स्तर पर।

समाज में व्याप्त एक बुराई रिश्वतखोरी की है। हमारे नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, 'रिश्वत लेने और रिश्वत देने वाले पर लानत है। और यह भी फरमाया कि जो व्यक्ति इस बुरे क़ाम में मध्यस्थ करे। बिचौलिए का काम करे उस पर भी लानत है। हमारा मिज़ाज ऐसा बन गया है कि आमतौर पर हम रिश्वत लेने वाले को बुरा समझते हैं और कभी कभी कहते भी हैं, मगर रिश्वत देने वाले या बिचौलिए का नाम तक नहीं लेते, जब कि हक़ीक़त यह है कि बुराई की व्यापकता को देखते हुए उसके क्षेत्रफल और रक़बः के लेहाज़ से रिश्तव देने वाले का हल्कः अधिक व्यापक है, अकसर मामलों में देखा जाये तो रिश्वत लेने वालो लेगों की कड़ी में चार–छः लोग होते हैं। जब कि देने वालों की

(शेष पृ. २२ पर)

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : *पैदा होने वाले बच्चे के दूध पिलाने का क्या हुक्म है?*

उत्तर : जब बच्चा पैदा हो तो मां पर दूध पिलाना अनिवार्य है। अलबत्ता अगर बाप मालदार हो और कोई अन्ना तलाश कर सके तो दूध न पिलाने में कुछ गुनाह नहीं।

प्रश्न : *क्या शौहर की इजाज़त के बिना कोई औरत किसी और के लड़के को दूध पिला सकती है ?*

उत्तर : किसी और के लड़के को बग़ैर शौहर की इजाज़त लिये दूध पिलाना दुरुस्त नहीं, हां अलबत्ता अगर कोई बच्चा भूख के मारे तड़पता हो और उसके मर जाने का डर हो तो ऐस वक़्त बे इजाज़त भी दूध पिला दे।

प्रश्न : *मां अपने बच्चे को कितनी मुद्दत तक दूध पिला सकती है?*

उत्तर : ज़ियादा से ज़ियादा दूध पिलाने की मुद्दत दो वर्ष है, दो साल के बाद दूध पिलाना हराम है।

प्रश्न : *अगर बच्चा खाने पीने लगे तो क्या मुक़र्ररा मुद्दत से पहले दूध छुड़ाया जा सकता है?*

उत्तर : अगर बच्चा कुछ खाने पीने लगा और इस वजह से दो वर्ष से पहले ही दूध छुड़ा दिया तब भी कुछ हरज नहीं।

प्रश्न : *बच्चा अपनी मां के अलावा किसी और औरत का दूध पी ले तो उसका क्या हुक्म है ?*

उत्तर : जब बच्चे ने किसी और औरत का दूध पिया तो वह औरत उसकी मां बन गई। चाहे वह औरत ग़ैर मुस्लिम हो और उस अन्ना का शौहर जिसके बच्चे का यह दूध है इस बच्चे का बाप हो गया और उसकी औलाद उसके दूध शरीकी भाई बहन हो गये और उनमें आपस में निकाह हराम हो गया और जो जो रिश्ते नसब के एतबार से हराम हैं वह रिश्ते दूध के एतबार से भी हराम हो जाते हैं। लेकिन बहुत से आलिमों के फतवे में यह हुक्म जब ही है कि जब बच्चे ने दो वर्ष के अन्दर ही दूध पिया हो अगर बच्चा दो वर्ष का हो चुका उसके बाद किसी औरत का दूध पिया तो इन आलिमों के नज़दीक इस पीने का कुछ एतबार नहीं। न वह पिलाने वाली मां बनी न उसकी औलाद इस बच्चे के भाई बहन हुए। इसलिए अगर आपस में निकाह कर दें तो दुरुस्त है। लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा (रह०) फ़रमाते हैं कि अगर ढाई बरस के अन्दर दूध पिया हो तब भी निकाह दुरुस्त नहीं।

प्रश्न : *आज कल तलाक़ का बड़ा चर्चा है लिहाज़ा तलाक़ के बारे में कुछ समझाकर लिखिये।*

उत्तर : निकाह के बाद कभी ऐसी सूरत पैदा हो जाती है कि मियां बीवी में निबाह मुश्किल हो जाता है। अब अगर मर्द की ज़ियादती से परेशान औरत अपने शौहर से छुटकारा चाहती है तो औरत मर्द को कुछ माल देकर उससे ख़ुला (छुटकारा) का मुतालबा करे या मह्र न पाया हो तो मह्र मुआफ़ करके ख़ुला चाहे और मर्द उसी जगह कहे कि मैंने ख़ुला दे दिया या छोड़ दिया तो औरत पर एक तलाक़ बाइन पड़ गई अब मर्द उस औरत की मर्ज़ी और निकाह के बाद ही दोबारा तअल्लुक़ पैदा कर सकता है। कभी ज़ालिम मर्द ख़ुला नहीं देता ऐसी सूरत में औरत दारूल क़ज़ा में क़ाज़ी के सामने अपने शौहर का ज़ुल्म साबित करे तो काज़ी मुम्किन होगा तो मेल करा देगा वरना ज़ुल्म साबित हो जाने पर निकाह फ़स्ख (ख़त्म) करा देगा। कभी औरत से मर्द आजिज़ आंकर उसे तलाक़ दे देना चाहता है उसकी तीन क़िस्में हैं तलाक़े रजअ़ी, तलाक़े बाइन और तलाक़े मुग़ल्लज़ा । एक बार या दो बार तलाक़ देने से तलाक़े रजअ़ी पड़ती है। जिसमें इद्दत के अन्दर मर्द को इख़्तियार है कि अपनी बीवी को लौटा ले। तलाक़े बाइन लफ़्ज़ बाइन इस्तेमाल करने पर या ख़ुला की सूरत में पड़ती है। इसमें लौटाने के लिए बीवी की रज़ामन्दी और दोबारा निकाह ज़रूरी है। तलाक़े मुग़ल्लज़ा, तीन बार तलाक़ देने से पड़ती है। इसमें औरत जब तक इद्दत के बाद किसी और से निकाह करके और तलाक़ पाकर इद्दत न पूरी कर ले पहले मर्द से निकाह नहीं कर सकती।

तलाक़ देने की दो क़िस्में हैं, एक तो

यह कि साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में कह दिया कि मैंने तुझ को तलाक़ दे दी या यह कहा कि मैंने अपनी बीवी को तलाक़ दे दी, ग़रज़ कि ऐसी साफ बात कह दी कि जिसमें तलाक़ देने के सिवा कोई और मा़ना (अर्थ) नहीं निकल सकते ऐसी तलाक़ को सरीह (स्पष्ट) तलाक़ कहते हैं। दूसरी क़िस्म यह कि साफ़ साफ़ लफ़्ज़ नहीं कहे बल्कि ऐसे गोल गोल लफ़्ज़ कहे जिसमें तलाक़ का मतलब भी बन सकता है और तलाक़ के सिवा दूसरे मअ़ना भी निकल सकते हैं जैसे कोई कहे मैंने तुझ को दूर कर दिया तो इसका एक मतलब तो यह कि मैंने तुझ को तलाक़ दे दी, दूसरा मतलब यह हो सकता है कि तलाक़ तो नही दी लेकिन अब तुझ को अपने पास नहीं रखूंगा या यूं कहे कि हमेशा अपने मैके में पड़ी रह, मैंने तुझ को अलग कर दिया, मेरे घर से चली जा, निकल जा, हट दूर हो, अपने मां बाप के सर जा कर बैठ, अपने घर जा, मेरा तेरा निबाह न होगा इसी तरह के और अलफाज़ जिनमें दोनों मतलब निकल सकते हैं ऐसी तलाक़ को किनाया कहते हैं।

अगर साफ़–साफ़ लफ़्ज़ों में तलाक़ दी तो ज़बान से निकलते ही तलाक़ पड़ गयी चाहे तलाक़ देने की नियत हो या चाहे न हो बल्कि हंसी दिल्लगी में कहा हो हर तरह तलाक़ हो गयी और साफ़ लफ़्ज़ो में एक या दो तलाक़ देने से तलाक़ रजअ़ी पड़ती है यानी इ़द्दत के खत्म होने तक उसके रखने या न रखने का इख़्तियार है और एक मर्तबा कहने से एक ही तलाक़ पड़ेगी न दो पड़ेंगी न तीन अलबत्ता अगर तीन दफ़ा कहे या यूं कहे तुझ को तीन तलाकें दीं तो तीन तलाकें पड़ीं।

किसी ने अपनी बीवी को तलाक़ न कह कर पुकारा तब भी तलाक़ पड़ गई चाहे हंसी में ही कहा हो।

किसी ने कहा जब तू बम्बई जाये तो तुझ को तलाक़ है तो जब तक बम्बई न जावेगी तलाक़ न पड़ेगी। जब वहां जावेगी तलाक़ पड़ेगी ।

अगर साफ़ साफ़ तलाक़ नहीं दी बल्कि गोल–गोल अलफ़ाज़ कहे और इशारा किनाया से तलाक़ दी तो इन लफ़्ज़ो के कहने के वक़्त अगर तलाक़ देने की नीयत थी तो तलाक़ हो गयी और बाइन तलाक़ हुई अब बे निकाह़ किये नहीं रख सकता, और अगर तलाक़ की नीयत न थी बल्कि दूसरे मअ़ना के एतबार से कहा था तो तलाक़ नहीं हुई। लेकिन अगर मर्द कहे कि मेरी तलाक़ की नीयत नहीं थी और औ़रत की समझ में आये कि उसकी तलाक़ की नीयत थी तो ऐसी सूरत में मर्द से कसम ली जायेगी।

बीबी ने गुस्से में आकर कहा मेरा तेरा निबाह न होगा मुझ को तलाक़ दे दे। मर्द ने कहा अच्छा मैंने छोड़ दिया तो यहां औ़रत यही समझे कि मुझे तलाक़े बाइन दे दी।

किसी ने तीन दफ़ा कहा कि तुझ को तलाक़, तलाक़, तलाक़ तो तीनों तलाकें पड़ गयीं या गोल अलफ़ाज़ में तीन मर्तबा कहा तब भी तीन पड़ गयीं लेकिन अगर नीयत एक ही तलाक़ की है सिर्फ मज़बूती के लिए तीन दफ़ा कहा था कि बात खूब पक्की हो जाये तो एक ही तलाक हुई। लेकिन औ़रत को उसके दिल का हाल तो मा़लूम नहीं इस लिए यही समझे कि तीन तलाकें मिल गयीं।

प्रश्न : *बीमारी की हालत में बैठ कर नमाज़ पढ़ना कैसा है?*

उत्तर : जो लोग खड़े होकर नमाज़ अदा कर सकते हैं मगर वह बैठ कर नमाज़ पढ़ते हैं यह दुरुस्त नहीं है शरअ़ी उज़्र के बिना फ़र्ज़ नमाज़ बैठ कर पढ़ना जाइज़ नहीं है अलबत्ता खड़े होने में तकलीफ़ हो तो बैठ कर नमाज़ अदा कर सकते हैं।

प्रश्न: *मर्ज़ के सबब नमाज़ में कराहना कैसा है ?*

उत्तर : बा़ज़ मरीज़ नमाज़ में कराहते रहते हैं आह,आह, हाय, हाय आदि करते रहते हैं अगर वह चाहें तो बर्दाश्त कर सकते हैं और आवाज़ रोक सकते हैं तो ऐसे मरीज़ों की नमाज़ नहीं होती। तीमारदारों को चाहिए कि मरीज़ को होशियार करें कि इस तरह़ कराहने से नमाज़ न होगी। अलबत्ता अगर कोई आह, ऊह जैसी कराह पर क़ाबू ही न रख पाता हो तो अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ करने वाले हैं।

प्रश्न: *बीमार के पास किन बातों से रोका गया है?*

उत्तर : बा़ज़ आदमियों की आ़दत है कि बीमार के पास बैठ कर फ़ुजूल क़िस्से हांका करते हैं। यह ठीक नहीं है। या बीमार के विषय में ऐसी बातें कहते हैं जो नाउम्मीदी (निराशा) की होती हैं। यह भी ठीक नहीं है। उसके घर वालों के सामने भी ऐसी बात न करना चाहिए जिससे ज़िन्दगी की ना उम्मीदी पाई जाये नाहक़ दिल टूटेगा बल्कि तसल्ली की बातें करे। और इस तरह़ के जुमले कहे, इंशा अल्लाह सब तकलीफ़ें दूर हो जायेंगी, इंशा अल्लाह ठीक हो जाओगे।

oooooooo

खुल रहे हैं आकाश के रहस्य

हबीबुल्लाह आज़मी

आकाश में बहुत से ग्रह और तारे (नक्षत्र) हैं। जमीन से देखने से यह दोनों रात में चमकते हुए दिखाई देते हैं। परन्तु इन में अन्तर यह है कि ग्रह में अपना कोई प्रकाश नहीं होता वह सूर्य की रोशनी से प्रकाशवान होते हैं। जैसे चांद में अपनी रोशनी नहीं होती जब उस पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है तो रात में यह हमें चमकता हुआ दिखाई देता है। नक्षत्र या तारे आकाश के ऐसे पिण्ड हैं जिनमें अपना प्रकाश होता है और वह स्वयं प्रकाशवान होते हैं जैसे हमारा सूर्य।

आकाश में अनगिनत तारे हैं उनमें से कई हमारे सूर्य से कई गुना बड़े हैं परन्तु इतनी दूरी है कि वह हमको केवल प्रकाश मान बिन्दु के समान दिखाई देते हैं। ध्रुवतारा, उल्कायें आदि भी नक्षत्र हैं।

मनुष्य बड़ा जिज्ञासू है। वह प्रारम्भ से ही आकाशी पिण्डों की वास्तविकता जानने की होड़ में लगा हुआ है। उसने पहले चांद कर सफर किया । उस के रहस्य का पता लगाया। इसके बाद सदूर स्थित ग्रहों की खोज लगाने में जुट गया। इस क्रम में शनि का रहस्य जानने के लिए एक अन्तरिक्ष यान कैसिनी यूरोपीय देशों और अमरीका के सहयोग से भेजा गया। कैसिनी शनि के रंगबिरंगे छल्लों के बीच से कामयाबी के साथ गुजरने के बाद उस की कक्षा में उस के चारों तरफ घूमने लगा। नासा ने एलान किया कि शनि की कक्षा में पहुंचने के लिए कैसिनी की अपनी रफतार धीमी करने का अमल कामयाब रहा तथा धूल और गैस वाले छल्लों से कैसिनी सफलतापूर्वक गुजर गया। कैसिनी का ३.५ अरब किलोमीटर का यह लम्बा सफर सात वर्ष बाद पूरा हुआ। कैसिनी अक्टूबर १९९७ में पृथ्वी से भेजा गया था। कैसिनी ने शनि के जो आंकड़े २९ अप्रैल २००३ से १० जून २००४ के बीच जमा किये उस के आधार पर जो जानकारी मिली है उससे शनि की परिक्रमा को लेकर फिर बहस छिड़ गई है। नासा के वैज्ञानिकों ने बताया कि शनि की एक पूरी परिक्रमा में १० घंटे ४५ मिनट और ४५ सेकेंड लगते हैं। यह समय वायजर–१ और वायजर–२ अंतरिक्ष यान के अनुमान से छः मिनट अधिक है। इन दोनों यानों ने १९८० और १९८१ में पहली बार शनि के पास से गुजरते हुए यह गणना की थी।

कैसिनी पहला मानव निर्मित (इन्सानों द्वारा बनाया गया) यान है जो शनि की परिकमा कर रहा है। कैसिनी शनि के कक्ष में दाखिल होने के बाद शनि के भीतरी भाग की ओर अग्रसर होगा जहां उसे वहां चार वर्ष का समय बिताना है। यह अंतरिक्ष शनि से लगभग २०,००० किलोमीटर दूर रह कर इस ग्रह का अध्ययन करके कई रहस्यों से पर्दा उठाएगा। कैसिनी अपने साथ ६१६४०० लोगों के हस्ताक्षर लेकर गया है। इसके अलावा कुछ कुत्ते और बिल्लियों के पंजों के निशान भी हैं। कैसिनी द्वारा भेजी गयी तस्वीरों से शनि की सतह जमी हुई दिखाई देती है।

अध्ययन दल के सदस्य एलिजाबेथ टर्टल के अनुसार कैसिनी द्वारा भेजी गई तस्वीरें अभी तक की उपलब्ध तस्वीरों से काफी अलग हैं। टाईटन, जो शनि का सबसे बड़ा उपग्रह (चन्द्रमा) है, की भेजी गई तस्वीरों से वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि वहां उस प्रकार के रासायनिक तत्व होंगे जैसे धरती पर जीवन पनपने के अरबों साल पहले थे। वहां कार्बन आधारित तत्वों की वजह से समुद्र पाये जाने की उम्मीद है। शुरूआती आंकड़ों की एनेलिसिस से मालूम होता है कि टाईटन में धरती के भीतर हलचल हो रही है कैसिनी द्वारा भेजे गए चित्रों से पता चलता है कि टाईटन के दक्षिणी ध्रुव के पास बादलों का एक जमावड़ा है जिसे मीथेन गैस माना जा रहा है। इस पर वैज्ञानिकों ने आंशिक प्रसन्नता ज़ाहिर की है। इन तस्वीरों का गहन अध्ययन हो रहा है और जीवन की संभावना वाले तत्वों का पता लगाने की कोशिश हो रही है।

शनि के छल्ले उसी के नष्ट उपग्रह से बने हैं :

कैसिनी की भेजी गई तस्वीरों से पता चलता है कि शनि के छल्ले उसी के

उपग्रह के नष्ट होने से बने हैं। यह छल्ले बर्फ के बने हुए हैं लेकिन इनमें कुछ जगह गहरा रंग है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह धूल है जो उसी पदार्थ की है जो बाहरी चन्द्रमा फोबे के बाहरी वातावरण में दिखाई देती है। इससे साबित होता है कि शनि के छल्ले उसके पुराने चन्द्रमाओं के नष्ट होने से बने हैं। यह कई जगह पर उबड़ खाबड़ भी हैं।

शनि के छल्ले कीचड़ से भरे हुए हैं: कैसिनी के ताजा प्रमाणों ने इस बात की तस्दीक़ कर दी है और जैसे जैसे हम अन्दरूनी छल्लों से बाहरी छल्लों को तरफ बढ़ते हैं पानी की मात्रा भी बढ़ती जाती है। अन्दरूनी छल्लों मे पानी कीचड़ जैसे हैं और बाहरी छल्लों में बर्फ के टुकड़ों से लेकर विशाल बर्फ के तूदों के रूप में हैं। शनि के छल्ले १६०,००० किलोमीटर से अधिक विस्तार में फैले हुए हैं। जबकि इन छल्लों की मोटाई १.५ किलोमीटर ही है।

कैसिनी से लिए गए छल्लों के चित्र से स्पष्ट हुआ कि इन छल्लों के रंग लाल, नीले और हरे और नीले–हरे हैं। इनमें लाल रंग के अन्दरूनी छल्ले धूल और कीचड़ से भरे पड़े हैं। लेकिन यह अधिक घने नहीं हैं। अभी हम नहीं जानते कि यह कीचड़ जैसी चीज पानी के अलावा और किन किन पदार्थों से बनी हैं लेकिन साइंटिस्टों का मानना है कि यह कीचड़ सिलिकेट और दूसरे कार्बनिक पदार्थों से बना है बाहरी बहुत घने नीले–हरे छल्ले पानी और दूसरी धुल जाने वाली चीजों तथा अमोनिया की बर्फ के बड़े टुकड़ों और चट्टानों से भरे पड़े हैं। शनि के छल्ले के बाहरी सिरे के पास चित्र में दिखाई देने वाली पतली सीलाल पट्टी ३२५ किलोमीटर चौड़ी है और इसे 'एंकेगैप' कहते हैं। शनि के छल्लों का अध्ययन और इनके रहस्यों पर से परदा उठना बहुत ही ज़रूरी है क्योंकि इन छल्लों ने वैज्ञानिकों को सूर्यमण्डल के बन्ने की प्रारम्भिक प्रक्रिया का आसानी से आभास करो दिया है। इस से यह पता चलता है कि विभिन्न ग्रहों के बनने से पहले पदार्थ इसी प्रकार सूर्य के चारों ओर घने छल्ले के रूप में चक्कर काटा करते थे। नासा की जेट प्रोपल्शन लैब में कैसिनी की डिप्टी प्रोजेक्ट वैज्ञानिक लिंडा स्पिलकर बताती हैं कि हमारी टीम शनि और टाइटिन समेत इसके सभी ३१ चन्द्रमाओं में हाइड्रोजन और आक्सीजन के वितरण का अध्ययन करने के साथ ही शनि के चुम्बकीय क्षेत्र का भी पता लगाएगी। शुरूआती जांच से पता चला है कि शनि का चुम्बकीय क्षेत्र हमारे अन्दाजे से कहीं अधिक बड़ा और शक्तिशाली है। यह चुम्बकीय क्षेत्र उसके छल्लों से भी आगे तक फैला हुआ है और लगभग पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र के समान ही है।

कैसिनी ने अपने चित्र में शनि और उसके चन्द्रमा टाइटन को चारों ओर से घेरे हुए गैस के बादल के रूप में चुम्बकीय क्षेत्र को दिखाया है।

ख़त्म हो रहे हैं शनि के छल्ले: अमेरिका के नेशनल एयरोनाटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) की जेट प्रोपल्शन लैबोरेट्री के वैज्ञानिकों ने कैसिनी द्वारा शनि के छल्लों की तस्वीरें के अध्ययन से यह मालूम किया है कि शनि के यह छल्ले धीरे धीरे खत्म हो रहे हैं और अगले ६० अरब वर्षों में इन का वजूद खत्म हो सकता है।

बुराई हमेशा बुराई रहेगी

मुहम्मद कुत्ब

जाहिलियत को चाहे जितनी ताक़त हासिल हो जाए यह मुम्किन नहीं कि वह एक लम्बे ज़माने तक हक़ और सच्चाई पर पर्दा डाले रखे बल्कि एक ऐसा वक़्त आता है कि हक़ पर से पर्दा उठ कर रहता है और हम तो समझते हैं कि नींद से जागने लगी है । लेकिन यह नसमझना चाहिए कि मुआमला आसान है क्योंकि जाहिलियत जितनी भयानक होती हक़ को उतनी ही सख़्त लड़ाई लड़ना पड़ती है । इस लड़ाई को जीतने के लिए बड़ी मेहनत और बड़े परिश्रम की ज़रूरत पड़ती है। अलबत्ता एक हक़ीक़त (सत्य) को सिर्फ़ समझ न लिया जाए बल्कि उस पर ईमान ले आया जाए यह कि बातिल (असत्य) चाहे जितना फैलजाए वह हक़ (सत्य) कभी नहीं बन सकता और बुराई चाहे जितनी छा जाए वह भलाई नहीं हो सकती बातिल हमेशा बातिल और बुराई हमेशा बुराई रहेगी।

(जामिया स० अहमद शहीद के खबर नामे के शुक्रिये के साथ)

Dress & Co.

Specialist in :
All kinds of Uniform
Govt. Order Suppliers

ब्रांच
डिसेन्ट टेलर्स
बारूद खाना, लखनऊ

36, Dr. B.N. Verma Road,
Lucknow-18

केवल अल्लाह ही उपास्य है

मौ० महमूदुल हसनी नदवी

कुर्आन मजीद में जो आदेश, नियम, मामलात और जीवन व्यतीत करने के मार्ग बताए गये हैं उनमें दो चीजें बहुत महत्व रखती हैं एक उपासना (ईबादत) दूसरे अल्लाह से सहायता मांगना (इस्तिआनत) सूरः फातिहा वास्तव में पूरे कुर्आन का सारांश है अगर कोई सूरः फातिहा का सारांश करना चाहे तो केवल यही आयत पर्याप्त (काफी) होगी।

अनुवाद – हम केवल तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ ही से सहायता चाहते हैं।

प्रसिद्ध मुफस्सिर (व्याख्या करने वाला) अल्लामा इब्ने कसीर ने सूरः फातिहा की व्याख्या में लिखा है –

सम्पूर्ण दीन इन दोनों चीजों में दाखिल है जैसा कि कुछ हमारे उलमा ने कहा है कि सूरः फातिहा कुर्आन की रूह (आत्मा) और सूरः फातिहा की रूह (आत्मा) यही आयत है।

सच पूछिए तो मानव का सम्पूर्ण जीवन उपासना और इस्तिआनत (अल्लाह ही से सहायता मांगने) का नाम है, अर्थात उसके अन्दर अल्लाह तआला ने इस बात की प्राकृतिक इच्छा रखी है कि वह किसी को अपना बड़ा समझे उसके सामने अपनी यातनायें निःसंकोच सादगी, और सच्चाई के साथ स्पष्ट कर सके उसके चौखट पर अपना मस्तिष्क टेक सके और ये समझे कि उसका कोई बड़ा है उसका कोई सहारा हैं और एक ऐसी सरकार भी है जहां सब कुछ मिल सकता है।

कुर्आन मजीद ने "हम तेरी ही उपासना करते हैं" कहला कर न केवल मानव की उस भावना को शान्ति किया बल्कि गलत मार्ग पर जाने के सारे दरवाजे उस पर बन्द कर दिये हैं, इसलिए कि उपासना (अ़िबादत) केवल नमाज़ पढ़ने या सर झुकाने (सज्दा) करने का नाम नहीं है बल्कि किसी मूर्ति, या शासक या पीर, महात्मा, बुजुर्ग, चांद सूरज, सितारे, नदियों, पर्वतों, जानवरों और इस प्रकार की सारी चीजों को ये समझना कि ये हमारे भविष्य की मालिक हैं और उनको हर प्रकार का अधिकार और शक्ति प्राप्त है उपासना के खिलाफ है। यहां तक कि वे वह रस्मों रिवाज भी जिनका शरीअत से कोई सम्बन्ध नहीं या जीवन के वह नियम जो मानव ने स्वयं बनाएं हैं सब इन में सम्मिलित हैं अरब में रिवाज था कि जब आवश्यकता होती थी तो अपने हालात के अनुसार मिट्टी की मूर्ति बना कर रख लेते थे बाद में उसको तोड़ डालते थे सफर में बड़ा बुत ले जाने में कष्ट होता तो कोई छोटा बुत आवश्यकतानुसार बना लिया और वापसी पर फेंक दिया, आज यह होता है कि मनुष्य अल्लाह तआला के आदेशों से हटकर कुछ बातें अपने हृदय में बैठा लेता है उसके बाद अपने ऊपर इस प्रकार थोप लेता है जैसे वे खुदा का आदेश हो, कभी वह अपनी नासमझी और अज्ञानता से अपने ऊपर कोई ऐसी बात आवश्यक कर लेता है जिससे बाद में बहुत कष्ट उठाना पड़ता है परन्तु उस पर भी उसको त्यागने के लिए तैयार नहीं होता और जिस प्रकार एक अल्लाह का बन्दा (सेवक) उसके नियमों को अटल समझता है उसी प्रकार वह अपने बनाऐ नियमों को पवित्र और अटल समझता है और उनका कल्मा पढ़ता रहता है कम्युनिज़्म, इश्तिराकियत सरमायादारी, पूंजीवाद, भाषा, वतन, रंग वंश के नारे सभ्यता के नाम पर इस समय की असभ्यता और स्वतंत्रता के नाम पर वासना की दासता (गुलामी) ये सब वास्तव में वह छोटे बड़े बुत हैं जो मनुष्य ने स्वयं बनाये हैं और खुदा की तरह उनसे व्यवहार कर रहा है।

हम तेरी ही उपासना करते हैं कहकर मानव उन सारे बुतों और अल्लाह के अलावा के निजाम (प्रबन्ध) से पूरी तरह आज़ाद हो जाता है, और एक खुदा का सेवक बन जाता है।

दूसरी चीज इंस्तिआनत (अल्लाह ही से मदद मांगना) यह मनुष्य के जीवन का दूसरा महत्वपूर्ण स्तभ है अगर वह अल्लाह के अलावा किसी की उपासना से निकल भी आता है तो यहां आकर ज्यादातर फंस जाता है, अल्लाह को एक मानने, ख़ुदा की उपासना करने और उसको अपना मालिक मानते हुए भी दूसरों को समझता है कि उनके हाथ में बहुत कुछ है और उनसे मदद ली जा सकता है यहां यह समझना चाहिए कि मदद चाहना दो प्रकार का है एक जिस पर जीवन की व्यवस्था आधारित और जिसका आधार केवल व्यवस्था पर है जैसे हम रोगी होते हैं तो डाक्टर के पास जाते हैं नौकरी करते हैं तो किसी से मदद लेते है, किसी अल्लाह वाले से दुआ के

लिए कहते हैं, दूसरे वह जिसको परेशानी दूर करने वाला और काम बनाने वाला समझा जाए जैसे फुलां बुजुर्ग या संत हमारी परेशानी दूर कर सकते हैं फुलां शासक चाहे तो हमारे भाग्य का सितारा चमक सकता है, फुलां नुकसान पहुंचाने और फुलां लाभ (फायदा) पहुंचाने की शक्ति रखता है ये मदद की वह शक्ल है जो गलत और अल्लाह से मदद चाहने के बिपरीत (खिलाफ) है।

अगर विचार किया जाऐ तो ज्ञात होगा कि अल्लाह के अलावा की उपासना से ज्यादा अल्लाह के अलावा से सहायता चाहना जीवन में आम है, मनुष्य हर नमाज में और हर रकअत में ये कहता है कि "हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ ही से सहायता चाहते हैं। परन्तु वह उस समय जब मस्जिद से बाहर होता है तो हाकिम के डर से सत्य नहीं कहता तथा किसी लाभ और उन्नति के लालच में उसके सामने पूरी तरह झुकने लगता है और इज्जते नफ़्स से भी हाथ धो बैठता है उसके हृदय में चोर होता है कि ये चाहें तो हमारा केस खराब कर सकते हैं और अब तो ये कहा जाने लगा है कि हमारा भविष्य खराब कर सकते हैं इस प्रकार की बात करना या सोचना और हृदय में इसका यकीन रखना ही वास्तव में अल्लाह के सिवा किसी अन्य से सहायता चाहना है, कब्र पर चादर चढ़ाना, किसी के सामने सज्दा करना, अल्लाह के सिवा किसी और से सहायता चाहने में दाखिल है इसी प्रकार सियासी और इज्तिमाई (सामूहिक) जीवन में शासकों और धनवानों को लाभ और नुकसान का मालिक और भविष्य खराब कर देने की शक्ति रखने वाला समझना और यह समझना कि सिफारिश ही सब कुछ है। खुशामद से सारे काम बनते हैं और उन लोगों के हाथ में सब कुछ है ये मदद की वह शक्ल है जो सच्चे मुसलमान के जीवन से कुछ भी मेल नहीं खाती।

कुर्आन मजीद में उपासना और अल्लाह ही से सहायता मांगने में अल्लाह के अलावा को पूर्णरूप से निरस्त करके मनुष्य को हर प्रकार की दासता (गुलामी) से स्वतंत्र कर दिया गया है और केवल एक खुदा की दासता में दाखिल किया गया है जो वास्तव में हर चीज को करने की शक्ति रखता है यह वह आस्था (यकीन) है जिसके बाद एक आम मुसलमान किसी बड़े से बड़े शासक और डिक्टेटर से भी प्रभावित नहीं हो सकता।

अनुवाद – मुहम्मद अरशद नदवी

अनमोल मोती

ज्ञान की गरिमा

मेरा विश्वास है कि ज्ञान एक इकाई है, जो बंट नहीं सकती। इसको प्राचीन व आधुनिक पूर्वी और पश्चिमी, सैद्धान्तिक व व्यवहारिक में बांटना सही नहीं है। मैं ज्ञान को एक सच्चाई मानता हूं जो ईश्वर का वह वरदान है जो किसी देश व राष्ट्र की थती नहीं और न होनी चाहिए। मुझे ज्ञान की विभिन्नता में एकता नजर आती है, वह एकता सच्चाई है, सच की तलाश है। ज्ञानमयी अभिरूचि है। और उसको पाने की खुशी है। मैं ज्ञान व साहित्य, कविता, दर्शनशास्त्र, हिकमत किसी में इस सिद्धान्त का पक्षधर नहीं हूं कि जो इसकी वर्दी पहनकर आये वही ज्ञाता और बुद्धिजीवी है। और यह मान लिया गया है कि जिसके शरीर पर वर्दी न हो वह न सम्बोधन के योग्य है न सुनने लायक। मैं ज्ञान की गरिमा और उसकी ताज़गी का कायल हूं जिसे ईश्वर का मार्गदर्शन सदैव प्राप्त रहा है। अगर निष्ठा है, और सच्ची तलब है तो ईश्वर की ओर से किसी भी समय दानशीलता (फैज़ान) की कमी नहीं। (अली मियां)

अनुवाद : मु० हसन अंसारी

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के जिन्न

अबू मर्ज़ूब

जिन्न देगें, तम्सीलें (स्टेचू) और इमातरें बनाते..

क़ुर्आन मजीद से अनुवाद : और सुलैमान (अ०) के लिये हवा को मुसख़्ख़र (कब्ज़े में) कर दिया। उस हवा की सुब्ह की मन्ज़िल (पड़ाव) एक महीने भर की (राह के बराबर) होती और शाम की मन्ज़िल एक माह की (रात के बराबर) होती। और हमने उन के लिए (यानी सुलैमान अ०) के लिए तांबे का चश्मा (स्रोत) बहा दिया और जिन्नात में से कुछ वह थे जो उन (सुलैमान अलैहिस्सलाम) के रब के हुक्म से उन के आगे काम करते थे। (अल्लाह तआला फ़रमाता है) और उनमें से जो मेरे हुक्म के ख़िलाफ़ करेगा हम उस को दोज़ख़ का अज़ाब चखा देंगे। और जिन्नात उन के लिए वह वह चीजें बनाते जो उनको (बनवाना) मंज़ूर होता। (जैसे) बड़ी बड़ी इमारतें, स्टेचू, हौज़ (जलकुण्ड) जैसी लगनें और एक जगह जमी रहने वाली (भारी) देंगे। (अल्लह तआला ने दाऊद अ० के ख़ान्दान वालों को पैग़ाम पहुंचाया कि) ऐ दाऊद के ख़ान्दान वालो तुम शुक्रिये में नेक काम किया करो और मेरे बन्दों में शुक्र गुज़ार कम ही होते हैं। (सूर–ए–सबाः १२,१३)

सुलैमान (अ०) के क़ब्ज़े में हवा का दिया जाना तो दूसरी आयात से भी साबित है यहां उस की रफ़्तार का भी ज़िक्र है यानी वह हवा इन्सानों के दोमहीनों का रास्ता एक दिन में तै कर लेती है। तफ्सीर जादुलमसीर में क़तादा से नक़्ल किया गया है कि सुब्ह दमिश्क़ से चलते तो दोपहर ईरान के शहर अस्तख़र में करते और फिर वहां से रवाना होते तो रात काबुल में गुज़ारते। दमिश्क़ और काबुल के बीच का रास्ता लग भग २५०० किलोमीटर है जो १२ घंटों में तै होता। मगर जिस तरह कुर्सियों और तख़्तों पर बैठ कर सफ़र करना ख़र्क़ आदत (प्राकृतिक विरुद्ध) बात थी उसी प्रकार इतनी तेज़ स्पीड से खुली कुर्सी या तख़्त पर बैठ कर सफ़र करना भी ख़र्क़ आदत बात थी। मुम्किन है कि उनके गिर्द हवा का घेरा उनके साथ भागता होगा इस तरह मुसाफिर हवाओं के झटके से महफ़ूज़ रहते होंगे। (वल्लाहु अअ़लम)

आज कल जहां कोहे आतिश फ़िशां (ज्वालामुखी पहाड़) का ज़ुहूर होता है तो आग राख के साथ कभी कुछ पिघली धातें भी बह निकलती हैं और वह आतिश फ़िशां अपनी गर्मी और आग से अपने इर्द गिर्द तबाही मचा देता है लेकिन यह तो नबी का मुअ़जिज़ा (लीला) है। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के हाथ में लोहा गर्म किये बिना नर्म हो जाता, वह उसे जैसे चाहते मोड़ते और जंगी लिबास (वस्त्र) आदि बनाते। हजरत सुलैमान (अ०) के लिये जमीन से पिघला हुआ तांबा उबल पड़ा। हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम के आमिलीन (कर्मचारी) उससे जरूरत की चीजें ढाल लेते, स्टेचू, बड़ी बड़ी देगें, और भारी लगने आदि। भारी देगों और लगनों से इस बात का इशारा संकेत मिलता है कि हज़रत सुलैमान (अ०) के इतने जियादा मेहमान होते थे कि मामूली देगों और लगनों से काम न चल सकता था।

अल्लाह तआला ने फरमाया कि उन जिन्नों में जो भी काम से मुंह फेरेगा उसको हम आग का अज़ाब देंगे। यह आग का अज़ाब दोज़ख़ का भी हो सकता है ओर दुन्या का भी। ज़ादुल मसीर में मक़ातिल से रिवायत है कि हज़रत सुलैमान (अ०) के साथ एक फ़िरिश्ता रहता था उसके हाथ में आग का एक कोड़ा रहता पस जो भी जिन्न ख़िलाफ़वर्ज़ी (अवज्ञा) करता वह फ़िरिश्ता उस पर एक कोड़ा जमा देता।

यह जो आयत में है कि शयातीन जिन्न क़ब्ज़े में थे, तो अ़क़्ल कहती कि जो जिन्न सुलैमान (अ०) के इताअत गुज़ार थे उनको दोज़ख़ का अज़ाब न मिले जब कि शयातीन तो दोज़ख़ में जलेंगे ही उनकी तौबा कहां ? ऐसा लगता है यह शयातीन इब्लीस की औलाद में से न थे बल्कि इब्लीस के बहकाये हुओं में से थे और हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम की इताअ़त करके नजात के मुस्तहिक़ हो गये।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात और जिन्न

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

फिर जब हम ने उन पर (यानी सुलैमान–अ०–पर) मौत का हुक्म जारी कर दिया तो किसी चीज़ ने उनके मरने का पता न बतलाया सिवाएं घुन के कीड़े के कि वह सुलैमान (अ०) के

अ़सा (लाठी) को खाता था, सो जब वह गिर पड़े तब जिन्नों को मालूम हुआ। अगर वह ग़ैब (परोक्ष की बात) जानते होते तो वह मुहीन अ़ज़ाब में (यानी ज़िल्लत मुसीबत में) न रहते। (३४:१४)

अ़ज़ाब यहां सख़्त मेहनत के लिए आया है।

जिन शैतानों और जिन्नों को अल्लाह तआ़ला ने हज़रत सुलैमान के लिए मुसख़्ख़र (वश में) किया था वह सब के सब इस पर राज़ी न थे, बाज़ उन में से मौक़ा पाते तो भाग खड़े होते इसी लिए बाज़ ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे गरज़कि यह मेहनत व मशक़्क़त उन के लिए एक क़िस्म का अ़ज़ाब था लिहाज़ा अगर उन को मालूम हो जाता कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम इन्तिक़ाल कर चुके हैं तो वह भाग खड़े होते इस से इस बात की तस्दीक़ (पुष्टि) हुई कि जिन्न ग़ैब नहीं जानते अल्बत्ता वह हमारे साथ हों या हमारे बीच हों तो वह हमारी हरकतें भी देखते हैं और हमारी बातें भी सुनते हैं जबकि हम उनको देख नहीं पाते अब अगर किसी दूसरी जगह वह हमारी बातें किसी से बता दें और वह लोगों से बयान कर दें तो लोग यह समझने लगें कि जिन्न ग़ैब (परोक्ष) की बातें जानता है तभी तो उसने दूसरी जगह की बातें बता दीं हालांकि वह दूसरी जगह की बातें सुन और देख चुका था। पस जिन्न ग़ैब नहीं जानता।

हज़रत सुलैमान (अ०) के इन्तिक़ाल के वाक़िअ़े से नाक़िस अ़क़्ल में कुछ इश्काल (कठिनाइयां) ज़रूर आते हैं कि हज़रत सुलैमान (अ०) इन्सान थे इन्सान की कुछ ज़रूरियात होती हैं, फिर उनकी सत्तर बीवियां थीं फिर कैसे किसी ने साल भर तक ख़बर न ली।

सूर–ए–स्वाद आयत ३० से ३३ के वाक़िअ़े में है कि घोड़ों के मुआइने में अ़स्र की इबादत में ग़फ़लत हुई तो उन घोड़ों ही को क़त्ल कर डाला फिर साल भर तक ख़ुद्दाम कैसे ख़ामेश रहे लेकिन अल्लाह जज़ाए ख़ैर दे अ़ल्लामा इब्नि कसीर को उन्होंने एक रिवायत से इस इश्काल को हल कर दिया। उनकी नक़्ल की हुई लम्बी रिवायत में है कि हज़रत सुलैमान अ़लहिस्सलाम खाना पानी लेकर कभी एक माह के लिये कभी दो माह के लिए और कभी एक साल के लिए बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हो जाते और इबादत करते रहते। चुनांचि अपने आख़िर वक़्त में भी वह साल भर के लिए बैतुल मक़द्दस में दाख़िल हुए और इबादत ही की हालत में इन्तिक़ाल कर गये। और ऐसा लगता है कि कोई ख़ास इबादत थी जिसमें वह लाठी के सहारे खड़े थे वह इबादत में भी मशग़ूल थे और उनकी यह शक्ल काम करने वाले जिन्नों के लिए निग्रां (निरीक्षक) की भी थी।

इस रिवायत की रौशनी में कोई इश्काल बाक़ी न रहा सारे जिन्न समझते रहे कि वह इबादत में हैं ऐसी हालत में नाफ़रमानी पर सख़्त सज़ा के ख़तरे से काम में लगे रहे। हो सकता है कि घर वालों को या ख़ास ख़ुद्दाम को बाज़ क़राइन (अनुमानों) से अन्दाज़ा हो गया हो कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हो चुका है लेकिन जो काम चल रहा था उसकी अहमियत (महत्व) को सामने रखते हुए उन्होंने छुपाये रखा हो आयत के अलफ़ाज़ "उन जिन्नों को हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की मौत की ख़बर ज़मीन के कीड़े (यानी घुन के कीड़े) के सिवा किसी ने न दी" में इस की गुंजाइश है।

याद रखें !

यूं तो अल्लाह तआ़ला ने इंसानों की ख़िदमत पर तमाम मख़लूक़ को लगा रखा है लेकिन किताब व सुन्नत में किसी ऐसे वज़ीफ़े या किसी ऐसे अ़मल का बयान नहीं मिलता कि जिसके पढ़ने या अ़मल करने से जिन्नात वश में हो जायें। हज़रत सुलैमान (अ०) के क़ब्ज़े में जो जिन्न थे वह किसी अ़मल से नहीं बल्कि यह अल्लाह की देन थी। यह उनका मुअ़जिज़ा था।

यह जो बाज़ आ़मिल दावा करते हैं कि जिन्न उनके क़ब्ज़े में है तो :

- या तो वह निरा झूठ बोलते हैं
- या उनको ग़लत फ़हमी हो गयी है
- या उनसे शैतानी जिन्न ने कोई बड़ा गुनाह करवाकर (जैसे नजासत खाना, नजासत से नहाना, शिर्क करना वग़ैरह) बज़ाहिर इताअ़त करके हलका सा काम कर दिया जबकि हक़ीक़त में उसमें आ़मिल साहब को अपना ताबिअ़ बना कर गुनाह करवाया और गुनाह करवा रहा है।

यह दावा भी बकवास है कि जिन्न को क़ैद करके ज़िन्दा दफ़न कर दिया या जला दिया, किताब व सुन्नत में ऐसे किसी अ़मल का ज़िक्र नहीं, अलबत्ता शैतानी सिहर में इसका इम्कान है जो नाजाइज़ और हराम है।

नील नदी के नाम

नजीबुर्रहमान राजस्थान

जब हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) ने मिस्र को विजय कर लिया और वहां के गवर्नर बने तो कुछ समय पश्चात बऊना का माह आ गया। (यह माह जून का किबती नाम है) उस माह के प्रारम्भ होते ही मिस्र के प्राचीन किब्तियों का एक वर्ग विशेष हजरत अम्र बिन आस रज़ि० के पास आया और कहने लगा, "महोदय ! इस नील नदी की एक आदत ऐसी पड़ी हुई है कि अगर उसे पूरा न किया जाए तो वह सूख जाती है। हजरत अम्र बिन आस ने पूछा, वह क्या है? कहने लगे आदत ये है कि बऊना (जून) माह की बारह (१२) रातें व्यतीत होने के पश्चात हम एक कुंवारी सुन्दरी को खोजकर उसके माता–पिता को मनाते हैं और उसे उत्तम से उत्तम आभूषण और वस्त्रों से सजाकर नदी में डाल देते हैं। उसके बाद वह बेग से बहने लगती है।

हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) ने कहा, "इस्लाम में ऐसा नहीं हो सकता, इस्लाम सभी प्राचीन (परम्पराओं) कुरीतियों ढोंगों, आडम्बरों और कर्मकाण्डों को मिटाता है।

यह उत्तर सुनकर वह सब चले गये। लेकिन वास्तव में यही हुआ। बऊना (जून) जबीब (जुलाई) और मित्री (अगस्त) तीन माह व्यतीत हो गये, और नील नदी सूखने लगी। परिणाम स्वरूप लोग वहां से पलायन करने का विचार करने लगे। हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) ने जब ये देखा तो हज़रत उमर रज़ि० (मुसलमानों के अमीर, ख़लीफ़ा सानी) को पत्र लिखकर उनसे सुझाव देने का आग्रह किया।

हजरत उमर रज़ि० उत्तर में लिखा, "वास्तव में इस्लाम प्राचीन अंधकारमय रीतियों को भस्म करता है। मैं तुम्हारे पास एक पत्र भेज रहा हूं उसे नील नदी में डाल देना।"

उस पत्र में यह लिखा था –बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम– यह ख़त अल्लाह के बन्दे उ़मर बिन खत्ताब की तरफ़ से मिस्र की नील के नाम है। अगर तू अपने इख्तियार से जारी है तो हमको तुझ से कुछ काम नहीं और अगर तू अल्लाह के हुक्म से जारी है तो अब भी अल्लाह के नाम पर जारी रहना।

हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) ने यह पत्र इसाइयों की सलीब की ईद से एक दिन पहले नील नदी में डाल दिया। मिस्रवासी वहां से पलायन का मुकम्मल (पूर्ण) प्रबन्ध कर चुके थे। इसलिए की उनका जीवन नील के जल पर ही निर्धारित था। लेकिन जब सलीब की ईद के दिन सुबह सवेरे नील को देखा तो वही नील नदी (जो सूख गई थी) पहले से भी अधिक पानी की मात्रा के साथ बह रही थी। एक ही रात में पानी की मात्रा १६ हाथ अधिक हो गयी थी।

(और उस दिन से आज तक वैसे ही बह रही है।) (उन्नुजूमुज्जाहिरा फी मुलूकि मिस्र वल काहिरा पृ. ३५,३६ प्रथम भाग)

नबवी निसाबे तालीम

इदारा

मुझे मुअ़ल्लिम बना कर भेज़ा गया है। (हदीस)

क़ुदरत ने उस मुअ़ल्लिम से क्या पढ़वाया? फ़रमायाः "जिस तरह मैं ने तुम्हारे दर्मियान ख़ुद तुम में से एक रसूल भेजा जो तुम्हें मेरी आयात सुनाता है, तुम्हारी ज़िन्दगियों को संवारता है तुम को किताब व हिकमत की ताल़ीम देता है और तुम को वह बातें सिखाता है जो तुम न जानते थे।" (२:१५१)

हदीस में है : मुझे इस लिए भेजा गया है ताकि अख़्लाक़ी अच्छाइयों को तमाम व कमाल तक पहुंचाऊं।

पस जिसने इन उ़लूम को सीखा वही आ़लिम है। इन उ़लूम को मुअ़ल्लिमे अव्वल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से तमाम व कमाल के साथ सीखने वाले सहाबए किराम जिन्होंने हदीस तलबुल् अ़िल्म फ़रीज़तुन् अ़ला कुल्लि मुस्लिमिन् (इ़लम हासिल करना एक मुसलमान पर फ़र्ज़ है) को समझा और उस पर पूरी तरह अ़मल किया और उन ही पर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की यह हदीस पूरी उतरती है कि "आ़लिम नबियों के वारिस हैं और अंबिया का वर्सा (छोड़ी हुई सम्पत्ति) रूपया पैसा नहीं इ़ल्म है" रहे दुन्यावी उ़लूम जुग़राफ़िया, तारीख़ तिजारत, जिराअ़त, रियाज़ी, साइंस, जो दुन्यावी ज़िन्दगी में मुआ़विन हैं उनका हासिल करना भी पसन्दीदा है। चाहिए कि हैसियत के मुताबिक़ उनको भी सीखा जाये।

इस्लाम में मानवता का स्तर तथा जिहाद का औचित्य

हैदर अली नदवी

संसार की रचना तथा यहां पर पायी जाने वाली वस्तुओं एवं प्राणियों पर जब हम नजर डालते हैं तो पता चलता है कि समस्त जगत प्रकृति का अद्भुत (अनोखा) चमत्कार है हर एक चीज की अपनी अलग पहचान है अपना अस्तित्व (वजूद) है। प्रत्येक वस्तु प्रकृति के जीवन चक्र का अभिन्न अंग है तथा प्राकृतिक नियमों के अनुसार अपना–अपना कार्य कर रहे हैं प्रत्येक वस्तु खुदा के कानून से बंधी है कानून के पालन ही में उनका हित छिपा है प्रत्येक वस्तु ईश्वर के उस आदेश का पालन करने पर वाह्य है जो उसे ईश्वर से मिला है।

परन्तु समस्त प्राणियों तथा सजीव निर्जीव वस्तुओं में मनुष्य की स्थिति लक्ष्य एवं कर्तव्य तथा भावनाएं सबसे भिन्न (अलग) हैं तथा सर्वोच्च भी हैं अल्लाह ने सम्पूर्ण सृष्टि (पूरी मख्लूक) में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनायाहै उसकी रचना तथा आकार हाथ पैर शरीर की सुन्दरता तथा अन्य अग यथास्थान तथा उचित आकार में स्थापित किए हैं अन्य प्राणियों की शारीरिक मानसिक तथा बौद्धिक रचना की तुलना करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हर आधार पर इन्साफ सर्वोच्च है यह सर्वोच्च ईश्वर ने हर मनुष्य को बिना किसी भेदभाव के प्रदान की है कुदरत ने इस वरदान में धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक किसी प्रकार की भिन्नता स्वीकार नहीं की है। मनुष्य किसी भी समाज धर्म देश समुदाय का हो राजा, प्रजा धनी निर्धन सभी मानव होने में समान हैं प्रत्येक रगों में एक तरह का खून प्रवाहित होता है चांद सूरज, वायु, जल खाद्य पदार्थ इत्यादि प्राकृतिक उपहार सभी को समान रूप से प्राप्त है और यह भी स्पष्ट है कि संसार की समस्त वस्तुएं किसी न किसी रूप में मानव सेवा के लिए हैं अब हम सोंचे कि उस मनुष्य की अहमियत ईश्वर के यहां कितनी होगी जिसकी आवश्यकता पूरी करने के लिए असंख्य वस्तुएं खुदा ने पैदा की उसकी खुशी तथा मनोरंजन के लिए बे शुमार चीजें बनायी जिसमें हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई गोरे काले राजा प्रजा आदि को आधार नहीं बनाया।

उपरोक्त विश्लेषण से हम ईश्वर की नजर में मनुष्य की महानता का अन्दाजा कर सकते हैं ऐसे सर्वश्रेष्ठ प्राणी को जो मनुष्य, समाज या धर्म मानव की इस सर्वोच्चता को स्वीकार न करे और उसे अनेक वर्गों में बांट दे बिना किसी जघन्य अपराध के क़त्ल करदे वह दरिन्दा हो सकता है मनुष्य नहीं ऐसा करने वाला समाज जालिमों का समाज होगा ऐसा समझने वाला धर्म पाखण्ड का पुलिन्दा है मानव एकता को नष्ट करना स्वयं एक जघन्य अपराध तथा महा पाप है बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ता है इस सम्बन्ध में इस्लाम को जान बूझ कर या ना समझीं में सबसे ज्यादा बदनाम किया गया है। जबकि धार्मिक सहिष्णुता मानव एकता मनुष्य की सर्वोच्चता का सर्वाधिक सम्मान इस्लाम ने दिया है पेशवाए इस्लाम मुहम्मद (स०) का कथन है तुम सब एक आदम की औलाद हो और आदम (अ०) मिट्टी से बने है एक अन्य स्थान पर और स्पष्ट रूप से मुहम्मद (स०) ने मानव सम्मान तथा प्रेम का उल्लेख किया है "सम्पूर्ण सृष्टि (पूरी मखलूक) ईश्वर का कुटुम्ब है ईश्वर को वह व्यक्ति सर्वाधिक प्रिय है जो ईश्वर के कुटुम्ब के साथ अच्छा व्यवहार करे। पैगम्बरे इस्लाम के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में मानवीय मूल्यों की क्या अहमियत है – केवल जिहाद का हव्वा खड़ा करके कुछ तुच्छ मानसिकता वाले इस्लाम को दोषी ठहराते हैं तो उसकी भी सत्यता सुनलें – सर्व प्रथम यह समझ लें कि जिहाद इस्लामिक शिक्षा का उद्देश्य या लक्ष्य नहीं है और तारीख गवा है कि इस्लाम लड़ाई झगड़ा असत्यता निर्दयता तथा कुकर्मों को मिटाने आया था।

जिहाद के औचित्य को समझने के लिए इस परिस्थिति पर ध्यान दीजिये कि जब मुहम्मद (स०) के काल में व्याप्त अनैतिकता एवं बुराइयों को समाप्त कर भाई चारा मानव के प्रति सम्मान स्त्रियों का सम्मान, सत्य, प्रेम तथा ईश्वर की सत्ता में यकीन इत्यादि को स्थापित करके एकता स्थापित की गई, तो कुछ चौधरी किस्म के लोगों को अपनी चौधराहट खतरे में पड़ती नजर आयी और वह मुहम्मद (सल्ल०) के इन शुभ कामों में रोड़े अटकाने लगे वह किसी तरह से भी सत्यता को उजागर न होने देना चाहते

थे और हर स्तर पर मानवता सत्यता तथा स्वस्थ समाज को मिटाने को अपना मिशन बना लिया मानवता के लिए काम करने वालों को घरों से निकालने मारने पीटने जायदाद लूटने का धन्धा बना लिया उनको पूजा पाठ से रोकने लगे उनके सामाजिक तथा राजनीतिक अधिकारों का हनन किया गया जब स्थिति अपरिहार्य हो गयी सब्र का पैमाना लबरेज हो गया कोई अन्य रास्ता नहीं बचा तो ऐसे मानव दुश्मनों एवं दरिन्दों से धरती को पाक किया जाना आवश्यक हुआ ताकि ईश्वर के शान्ति प्रिय बन्दों को शान्ति का वातावरण मिल सके ऐसी अपरिहार्य स्थिति में जिहाद का हुक्म मिला और यह हुक्म ऐसी स्थितियों में सदा के लिए है और रहेगा यह उचित भी है और आवश्यक भी है पूरे कुरआन में जिहाद का हुक्म अंशमात्र है जिसको आज प्रोपगण्डा करके इस्लाम का अनिवार्य भाग साबित किया जा रहा है स्पष्ट रहे कि जिहाद कभी भी इस्लाम का स्तम्भ नहीं रहा है और न ही जिहाद इस्लाम का उद्देश्य है आइये आपको मुहम्मद (सल्ल०) के उस कथन की तरफ ले चलें जिसमें आपने फ़रमाया है इस्लाम के स्तम्भ पांच चीजें हैं १. एकेश्वरवाद में विश्वास करना २. नमाज़ स्थापित करना ३. रोज़े रखना ४. ज़कात (दान) अदा करना ५. हज (धार्मिक तीर्थयात्रा) करना। मुहम्मद सल्ल० के इस कथन के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम के इन मौलिक स्तम्भों में जिहाद का वर्णन नहीं है अगर यह इस्लाम का लक्ष्य होता तो अवश्य उसका वर्णन मौलिक स्तम्भों में आता लेकिन ऐसा नहीं है परन्तु इसका अर्थ यह भी न लगाया जाए कि जिहाद सिरे से ही नहीं है या गलत है। दोस्तो जब मानव की मानवता खतरे में पड़ जाये जब शान्ति के स्थान पर रक्तपात स्थापित करने का वातावरण कायम किया जाए जब मानव के मौलिक अधिकार छीन लिए जाएं और जब इन्सानों को जिन्दा जलाया जाने के अपराध होने लगें जब सतवन्ती स्त्रियों के सतीत्व को भंग कर दिया जाए जब धार्मिक या सामाजिक आधार पर इन्सानों को टुकड़ों में बांट कर उनकी हत्याएं की जाने लगें तो फिर जिहाद इस्लाम का अनिवार्य अंग एवं मौलिक स्तम्भ बन जाता है। फिर जिहाद उस वक्त तक फर्ज रहता है जब तक कि शान्ति स्थापित न हो जाए जब तक कि शोषितों को न्याय न मिल जाए या तो पापी सुधर जाए नहीं तो बल पूर्वक धरती को कातिलों जालिमों और पापियों से पाक कर दिया जाए। जिहाद की परिस्थितियां कब होंगी किस प्रकार का जिहाद होगा इसका फैसला इस्लाम के विशेषज्ञ करेंगे न कि आज कल की तरह स्वार्थी नेता या खुद साख्ता मौलवी स्पष्ट रहे कि कुरआन में अनेक स्थानों पर जिहाद शब्द का प्रयोग हुआ है परन्तु हर जगह कत्ल के अर्थ में नहीं है जिसे अकसर गैर मुस्लिमों में अनुवाद के आधार पर कत्ल के अर्थ में लिया है जबकि ये शब्द अनेक अर्थों में प्रयोग हुआ है मिसाल के लिए जब झूठ से रिश्वत से लाखों रूपए मिल रहे हों ऐसे में सच बोलना (भले ही कुछ न मिले) बहुत बड़ा जिहाद है यहां अपनी दिली भावनाओं से जिहाद (युद्ध) करना पड़ता है दिल कहता है कि रिश्वत ले लो घोटाला कर लो काम बन जाएगा लेकिन फिर हम दिल से जिहाद करते हैं कि रिश्वत लेना लानत और धिक्कार है ऐसे समय यदि हम रिश्वत से रूक जाएं तो दिल से जिहाद जीत लिया । कुरआन में अनेक स्थानों पर इसी तरह के अर्थों में जिहाद का इस्तेमाल किया गया है– अब अगर कोई अपने निजी स्वार्थों के लिए जिहाद का उपयोग करने लगे तो इससे जिहाद की प्रसांगिकता तथा आवश्यकता तो नही समाप्त हो जाती और न ही इस्लाम या कुरआन का इसमें कोई दोष है जिन स्थानों पर कत्ल के अर्थ के जिहाद का प्रयोग हुआ है वहां पर परिस्थितियों के अनुरूप हैं और मैं चैलेंज के साथ कहता हूं कि ऐसा आदेश (जिहाद) हर धर्म और हर धार्मिक किताब में है – हैं कोई माल का लाल जो बता सके कि अमुक धर्म में जिहाद का हुक्म नहीं है फिर आज इस्लाम के जिहाद पर क्यों शोर मचाया जा रहा – बाइबिल में तौरेत में गीता व रामायण में, ग्रन्थों में जिहाद पर एतराज नहीं तो आज दुन्या की मीडिया कुरआन के जिहाद पर क्यों आपत्ति कर रहे हैं– इसे हम इस्लाम दुश्मनों ने समझें तो आखिर क्या समझें –

हम आह भी करते हैं
तो हो जाते हैं बनदा
वह कत्ल भी करते हैं
तो चर्चा नहीं होता।

(पृष्ठ ३५ का शेष)

बाईपास सर्जरी कराने से पहले इस चिकित्सा का प्रयोग करके देख सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए डा. मनुभाई कोठारी सेभी सम्पर्क कर सकते हैं। उनका पता है : १४ बी, स्वामी बिवेका नन्द मार्ग, मुम्बई ४०००५८, दूरभाष नं (००६१–२२), ६६२८१०७ डा. योगेन्द्र सिंह, दिल्ली (संघमार्ग) २८ जनवरी १९९९ से साभार)

(अपने चिकित्सक की अनुमति से प्रयोग करना उचित होगा–सम्पादक)

एंजाइना की सफल चिकित्सा

डॉ० कौल

हृदय का रक्तसंचार करने वाले रक्तवाहिकाओं में रूकावट होने के कारण जो कष्ट और पीड़ा हो जाती है उसे चिकित्सा भाषा में एंजाइना कहते हैं। उसकी सफल चिकित्सा आयुर्वेदों द्वारा संभव है।

अब तक हृदयरोग में रक्त वाहिनी, जो हृदय को रक्त पहुंचाती है, के अवरूद्ध हो जाने पर ओपन हार्ट (बाईपास सर्जरी) द्वारा पैर या हाथ से नसें निकाल कर उनके स्थान पर लगाई जाती हैं। दूसरी नसें लगा देने के पश्चात भी बहुत से रोगियों की उन नसों में पुनः अवरोध हो जाता है, जिसके कारण पुनः सर्जरी करके दूसरी नई नसें लगाते हैं। यह आप्रेशन पहले आप्रेशन से और अधिक जोखिम भरा होता हैं। इस विषय में मुम्बई के डा० मनुभाई काठारी जो ईएम आई अस्पताल के डीन के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। अपने प्रयोग से उन्होंने कई रोगियों को ठीक किया है। उनके प्रयोग से जो रोगी मैंने स्वयं ठीक होते देखे हैं, उनमें से एक रोगी का वर्णन मैं अवश्य करूंगा।

श्री रघुवीर, जो आजकल विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय कार्यालय आर. के. पुरम में रहते हैं, हृदय रोग से पीड़ित हैं। उनको तीव्र एंजाइना था। उनकी हालत यह हो गई थी कि सीढ़ी चढ़ना उनके लिए बहुत मुश्किल हो गया था, एक एक सीढ़ी चढ़ते थे। तेज चल नहीं सकते थे। हमेशा बिस्तर पर पड़े रहने की इच्छा होती थी। दिन में कई–कई बार मोर्बीट्रेट की गोलियां लेनी पड़ती थीं। इसके बाद उनको जीबी पन्त अस्पताल में दिखाया गया एंजियोग्राफी हुई उसमें पता चला कि इनकी तीन रक्तवाहिनियां लगभग बन्द हो चुकी हैं कार्डिक सर्जन को दिखाया गया परन्तु सजर्न ने भी मना कर दिया कि इनकी बाइपास सर्जरी नहीं हो सकती क्योंकि एक रक्तवाहिनी यदि पूरी तरह बन्द होती तो कर सकते थे, यहां तो तीन बंद हैं। अतः तीन बार आप्रेशन नहीं हो सकता। अतः दवाई के सहारे जब तक चल सकते हैं, ऐसा ही चलने देना चाहिए। इसी बीच संघ के सुदर्शन जी से मुझे इस प्रयोग की जानकारी मिली मैंने रघुवीर जी को बताया एवं उन्होंने उसका प्रयोग किया जिससे उनको बहुत लाभ हुआ। अब उनको एंजाइना नहीं के बराबर है। खूब चलते हैं। ५–६ किलोमीटर रोज भ्रमण करते हैं। दौड़ कर सीढ़ी चढ़ते हैं। उनकी स्थिति देखकर मैं स्वयं आश्चर्यचकित हूं। अब लगभग सोर्बीट्रेट नहीं लेते हैं। रात रात भर भजन संकीर्तन करते हैं।

प्रयोग विधि : घिया (लौकी)को छिलके सहित धोकर घियाकम में कस लें। कसी हुई घिया की ग्राइंडर में डालकर अथवा सिलबट्टे पर पीस लें। इसके साथ ७–८ तुलसी के पत्ते, ५, ६ पुदीना के पत्ते भी पीसने के समय घिया के साथ डालकर पीसें। पिसी गई घिया को पतले कपड़े से छानकर रस निकाल लें। छाने हुए रस की मात्रा १२५–१५० ग्राम ही होनी चाहिए। इसके साथ बराबर का स्वच्छ जल मिला लें अर्थात घिया और पानी की कुल मात्रा २५०–३०० ग्राम होनी चाहिए। इस रस में चार पिसी काली मिर्च का चूर्ण तथा एक ग्राम पिसा हुआ सेंधा नमक मिलाकर भोजन के आधा पौने घंटे पश्चात प्रातः, दोपहर, रात्रि, तीन बार लेना चाहिए।

घिया का रस पेट में जो भी पाचन विकार होते हैं, उनको दूर करके निकालता है, जिसके कारण प्रारम्भ में ३–५ दिन तक कुछ कम भी ली जा सकती है। बाद में अभ्यास एवं पेट सुधर जाने पर पूरी मात्रा में लेनी चाहिए। हर बार ताजी दवा बनानी चाहिए।

घिया का रस पेट में जो भी पाचन विकार होते हैं, उनको दूर करके मल के द्वारा बाहर निकालता है, जिसके कारण प्रारम्भ में ३–४ दिन तक पेट में खलबली, गड़गड़ाहट होती है। एक आध दस्त भी अधिक लग सकते हैं। यह स्वाभाविक प्रकिया है। इससे भयभीत नहीं होना चाहिए। पेट के विकार दूर होते ही सामान्य स्थिति हो आएगी।

इस प्रयोग को करते समय टहलना आवश्यक है। चाहे पहले दिन दस कदम ही चलें। इस प्रयोग के दस दिनों बाद कुछ आराम अनुभव होगा। धीरे–धीरे १०–१२ किलोमीटर तक भ्रमण करने का अभ्यास करना चाहिए। अतः जो रोगी एंजाइम से पीड़ित हैं, वे

(शेष पृ. ३४ पर)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी (रज़ि)

मुहसिना फारूकी

हज़रत अबूजर (रज़ि०) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के एक बहुत बुजुर्ग और मशहूर सहाबी हैं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को आप पर इतना भरोसा था कि आपने बहुत से राज आपको बता दिये थे आपकी कुन्नियत अबूज़र है जो गिफ़ार कबीले से सम्बन्ध रखते थे इस लिए गिफ़ारी कहे जाते है दुनिया से बे नियाज़ी की वजह से आपका एक लकब नसीहुल इस्लाम है। आपके वालिद का नाम जनादा और मां का नाम रमला था।

इस्लाम से पहले

गिफ़ार का कबीला डाके डालता था। हज़रत अबूजर (रज़ि०) भी इस्लाम से पहले इसी रंग में थे अकेले बड़े–बड़े काफिलों पर टूट पड़ते और उसे दिन दहाड़े लूट लेते ज़िन्दगी बहुत दिनों तक यूंही गुज़रती रही मगर अल्लाह की शान, धीरे–धीरे उनकी हालत में सुधार होने लगा और देखते ही देखते उनकी ज़िन्दगी में एक बहुत बड़ा इन्क़िलाब आया हज़रत (सल्ल०) से पहले सारी दुनिया पर शैतानी रंग छाया था, कोई शख्स अल्लाह का नाम भूल कर भी न लेता था, उस समय किसी का बुत परस्ती को बुस समझना और एक अल्लाह पर यकीन रखना बहुत ही आश्चर्य की बात थी मगर यही हैरत में डालने वाली बात हज़रत अबूजर (रज़ि०) के दिमाग़ से पैदा हुई वह सोचने लगे कि इस दुनिया का पैदा करने वाला कौन है हमें खाना खिलाने और पानी पिलाने वाला कौन है कोई तो ज़रूर होगा क्योंकि ये पत्थर के बुत हमें आराम नहीं पहुंचा सकते इनको तो हमने खुद ही बनाया है उनके सिवा कोई ऐसी ज़ात है जो हम सब की मालिक है मगर मालिक तो एक होता है कहीं एक मुल्क के दो मालिक भी होते हैं अगर दो हैं तो कभी लड़ते क्यों नहीं, कभी लड़ाई झगड़ा क्यों नहीं होता, हमारा मालिक तो एक है वही हमें खिलाता है, पिलाता है, मारता है, और जिलाता है।

यह ख़यालात थे जो हज़रत अबूज़र (रज़ि०) के दिल में पैदा हुए और उन्हें बुतों से दिन ब दिन नफरत होने लगी आखिरकार एक दिन वह भी आ गया कि उन्होंने डकैती छोड़ दी और एक अल्लाह को बिना देखे इबादत करने लगे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) उस वक्त नबी नहीं हुए थे अल्लाह का हुक्म दुनिया में नहीं उतरा था, आज की तरह नमाज़ और रोज़े के तरीके निश्चित नहीं थे। इस लिए जिस तरह उनकी समझ में आता उस तरह अल्लाह की इबादत कर लेते और जिस तरफ अल्लाह उनका मुंह फेर देता उसी तरफ खड़े हो जाते।

इस्लाम का प्रकाश

हज़रत अबूज़र (रज़ि०) के तौर तरीकों को उनके क़बीले वाले हर दिन देखते थे, मगर उनका उसमें कुछ नुक़सान नहीं था इस लिए उनसे छेड़खानी करना बेकार समझते थे हज़रत अबूजर (रज़ि०) बे खौफ़ जो समझते वह कहते जो चाहते वह करते उसी दौरान मक्का में हज़रत (सल्ल०) पर कुर्आन मजीद उतरना शुरू हुआ आपने काफ़िरों को एक अल्लाह की तरफ़ दावत दी बात बहुत साफ थी दिल को लगती थी समझ में आती थी, लेकिन कुरैशी सरदारों को अपनी खुदायी छोड़ना गवारा न था वह दूसरों पर हुक्म चलाना और खुद हर नियम से आज़ाद रहना चाहते थे इसलिए अल्लाह को मान कर उसके हुक्म की पाबन्दी से बचना चाहते थे जैसे–जैसे कुर्आन मजीद उतरता जाता और अल्लाह तआला के हुक्म को सुनते तो उनका गुस्सा बढ़ जाता जिसके बारे में वह सुन लेते की उसने अपना पुराना धर्म (बुत परस्ती) छोड़ दिया है तो उसे बहुत सताते यहां तक कि उन्होंने इस अच्छे आन्दोलन को कुचलने की पूरी कोशिश की मगर नतीजा कुछ न निकला उनके रोकने के बाद भी इस्लाम की दावत दिन ब दिन कामियाब ही होती गयी धीरे–धीरे दूर तक ये खबर पहुंच गयी कि मक्का में एक ऐसा आदमी पैदा हुआ है जो कहता है कि पत्थर की मूर्तियों की पूजा छोड़ दो केवल एक अल्लाह को मानो, पड़ोसियों के हक को पहचानो, चोरी जुआ, जुल्म, बदकारी अैर बेह्याई के कामों से बचो बहुत से लोग इस ख़बर को सुनकर गुस्सा हुए कुछ ने आश्चर्य किया कुछ खुश हुए उड़ती–उड़ती यह ख़बर हज़रत अबूज़र तक पहुंची, उनकी सोच तो पहले सेही बदल रही थी ये सुनकर बहुत ख़ुश हुए और अपने एक भाई को

मक्का भेजा कि जाकर पता लगाएं। वह गये और जा कर खबर लाए कि वहां एक आदमी पैदा हुआ है जो बुतों की पूजा से रोकता है बिना देखे माअ़बूद की इबादत करने को कहता है शराब, जुआ, जुल्म और चोरी को बुराईयों की जड़ बताता है आप को इतनी कम बात से तसल्ली न हुई और खुद पता लगाने के लिए मक्का पहुंचे।

हज़रत अबूजर का इस्लाम

मक्का में आप बिल्कुल अजनबी थे न किसी से जान न पहचान, किस के यहां जाते और किस से पूछते इस लिए खान–ए–कअ़बः में जाकर बैठ गये कि यहीं से पता मालूम होगा दो एक रोज़ बैठे रहे उस समय मुसलमान कमज़ोर होने की वजह से अपने इस्लाम को छिपाते थे और हज़रत अबूजर साफ़–साफ़ किसी से पूछ न सकते थे इसलिए कुछ पता न लगा।

तीसरे दिन हज़रत अ़ली (रजि०) ने उनसे पूछा कि मैं आपको यहां कई रोज़ से देख रहा हूं आप कौन हैं उन्होंने कहा मुसाफिर हूं ये सुनकर हज़रत अ़ली (रज़ि०) उस रात उन्हें अपने घर ले गये खिलाया पिलाया मगर आने का मक़सद न पूछा हज़रत अबूजर भी हज़रत अ़ली (रज़ि०) को पहचानते न थे इस लिए आने का मक़सद न बताया दोनों आदमी खामोश रहे खा पीकर हज़रत अबूज़र फिर खान–ए–कअ़बः में चले आए दूसरे दिन हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने उन्हें फिर देखा तो कहा मालूम होता है अभी आप का काम पूरा नहीं हुआ कौन सा ऐसा काम है। उन्होंने जवाब दिया जी हां अभी तक मैंने अपने मक़सद को नहीं पाया और अगर आप राज़दारी का वादा करें तो मैं अपने आने की वजह बता दूं हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने वादा किया कि वह किसी से कुछ न बताएंगे तो उन्होंने कहा कि मैंने सुना है कि यहां पर किसी ने नुबूवत का दावा किया है अल्लाह की इबादत की तरफ बुलाता है बुतों की पूजा को हराम और चोरी, जुआ, शराब, बदकारी और बेहयायी को बुरी बात बताता है उसी का पता लगाने के लिए आया हूं।

हज़रत अ़ली (रज़ि०) उस समय मुसलमान हो चुके थे इस लिए यह सुनकर बहुत खुश हुए और बोले आप अपने मकसद में कामियाब हो गये जो कुछ आप ने सुना है वह सही है चलिए आपको उन बुजुर्ग आदमी के पास ले चलूं हज़रत अबूज़र साथ जाने के लिए तैयार हो गये चलते वक्त हज़रत अ़ली (रज़ि०) ने कहा आप नये आदमी हैं मेरे साथ देखकर लोग शायद आप पर कुछ शक करें इस लिए मैं आगे–आगे चलता हूं आप मेरे पीछे–पीछे कुछ फासले से चले आईये मैं जिस मकान में जाऊं आप बिना डर के उस मकान में चले आइयेगा और अगर रास्ता में मुझे कोई खतरा मालूम होगा तो मैं एक तरफ हट कर जूता वगैरा सही करने लगूंगा आप आगे चले जाइयेगा।

दोनों आदमी मशविरह करके हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ख़िदमत में पहुंचे हज़रत अबूज़र (रज़ि०) ने अपना पूरा क़िस्सा सुनाया और खुशी–खुशी हज़रत (सल्ल०) के हाथ पर मुसलमान हो गये।

इस्लाम का एलान

इस्लाम कुबूल करने के बाद हज़रत (सल्ल०) ने फ़रमाया अभी मुसलमान बहुत कमज़ोर हैं इस लिए तुम खामोशी से अपने कबीले वापस चले जाओ और वहां जाकर इस्लाम की तब्लीग करो हज़रत अबूज़र (रज़ि०) इस पर राजी न हुए की कुफ्र की हालत में तो इतने बहादुर हैं कि बिल्कुल अकेले काफलों को लूट लें और मुसलमान होते ही इतने बुज़दिल बन जाएं कि अपने इस्लाम को छिपाएं इस लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से इजाज़त लेकर दूसरे ही दिन काफ़िरों के महफ़िल में गये और सबके सामने खड़े होकर बोले।

ऐ लोगो पहले मैं काफिर था मगर अल्लाह ने मुझे सीधा रास्ता दिखा अब मेरा यकीन ये है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्ल०) जिनको तुम झूठा नजूमी, शायर और जाने क्या क्या कहते हो वह अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, सुन लो– ''ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि'' अभी आप चुप भी न हुए थे कि काफिर चारों तरफ से टूट पड़े इतना मारा कि आप ज़मीन पर गिर पड़े जब बहुत मार पड़ चुकी और मरने के करीब हो चुके तो हज़रत अब्बास (रज़ि०) ने बहुत मुश्किल से ये कह कर उन्हें बचाया कि ये गिफ़ारी है और कुरैश के तिजारती काफ़िले क़बीला गिफ़ार के क़रीब से गुजरते हैं अगर इन्हें कुछ हो गया तो तुम्हारे काफिलो की खैर नहीं इस बात ने कुरैश की आंखें खोल दीं और उन्होंने घबरा कर छोड़ दिया दूसरे दिन फिर इसी तरह हज़रत अबूज़र (रज़ि०) ने इस्लाम का एलान किया और काफिर हर तरह से टूट पड़े इस मरतबा भी हज़रत अब्बास (रज़ि०) ही ने उन को बचाया।

●●●

महात्मागांधी

(मोहनदास कर्म चन्द गांधी)

मो० हसन अन्सारी

मोहन दास कर्म चन्द गांधी एक महापुरूष थे, बीसवीं शताब्दी के युग पुरूष (१८६९–१९४८)। प्रेम, सत्य और अहिंसा के पथ पर चलने वाले, बड़ी से बड़ी आज़माइश में उसूलों पर डटे रहने वाले भारत के सच्चे पक्के सपूतों में से एक। भारत को बिना खडग, बिना ढाल आज़ादी दिलाने वाले, जिन्हें लोग प्यार श्रद्धा से बापू कहते थे, जिन्होंने दुनिया में भारत का नाम उजागर किया, और जिन का जन्मदिन दो अक्टूबर राष्ट्रीय पर्व (कौमी त्यौहार) के रूप में मनाया जाता है।

गान्धी जी के तीन बन्दरों वाली कहानी बहुत मशहूर है, एक बन्दर दोनों हाथ से अपना मुंह बन्द किये हैं, जिसका सन्देश है कि मुंह से ग़लत बात न निकालें, गाली–गलौज न करें, असंसदीय शब्द मुंह से न निकालें, किसी की ग़ीबत न करें, किसी की पीठ पीछे बुराई न करें, हर सुनी हुई बात को अनावश्यक हर जगह सबसे बयान करते न फिरें, प्यार–मुहब्बत, नर्मी और नम्रता से बात करें, किसी पर कटाक्ष (व्यंग) तंज न करें इस से नफ़रत और दुराव पैदा होता है। अपनी ज़बान पर कन्ट्रोल रखें, गुस्सा और क्रोध में अक्सर हम ऐसी बातें कह जाते हैं जिन पर हम को कभी कभी स्वयं पछतावा होता है किन्तु तब तक बात बिगड़ चुकी होती है, इसीलिए कहा गया कि गुस्सा हराम है।

दूसरा बन्दर अपने दोनों हाथों से अपने दोनों कानों को बन्द किये हुए है, इसका सन्देश है कि ग़लत बात कान से न सुनो। ग़ालिब ने कहा – 'न सुनो गर ग़लत कहे कोई''। हम हैं कि हमें गलत बातों के सुनने में खूब मजा आता है, और उसे मज़ा ले लेकर बयान करने में और भी मज़ा आता है। ग़लत बात कान में पड़ेगी, हमारे विचार ग़लत होंगे, संस्कार (तरबियत) गलत होंगे और हम गलतकारियां करेंगे जिससे समाज में फसाद पैदा होगा, जीवन में मुश्किलें पैदा होंगी और धरती पर बिगाड़ पैदा होगा। जीवन अजीरन होगा। ज़िन्दगी का मज़ा जाता रहेगा।

तीसरे बन्दर ने अपने दोनों हाथों से अपनी दोनों आंखों को बन्द कर रखा है, वह कह रहा है बद निगाही से बचो। किसी पर ग़लत निगाह न पड़े। न जिस्म पर, न जान पर, न माल पर। जिस्म, जान व माल पर बद निगाह ही से आज हमारे समाज में कितनी बुराइयां पनप रही हैं फूल फल रही हैं यह सोचने की बात है अगर जिस्म, जान व माल पर बदनिगाही बन्द हो जाये तो कितने फ़साद और कितनी बुराइयों का क़लःकमा हो जाये।

गान्धी जी का कथन है, पाप से नफ़रत करो पापी से नहीं। हम पापी से नफ़रत करते हैं और पाप व गुनाहों से प्यार। चोरी करना पाप है चोर पापी है कोई चोर चोरी करता है तो हमारी निगाहों से गिर जाता है, पर क्या हम चोरी को पापं समझकर उससे अपने को बचा ले पाते हैं। चोरी से दूर रह पाते हैं, चोरी का मौक़ा हो और हम चोरी न करें, उसे पाप समझकर उससे बचें तो यह बहादुरी का काम है, नफ़्स को मांझने का काम है, अपने मन को क़ाबू में रखने और आत्म संयम् बरतने का काम है।

गांधी जी का सादा जीवन उच्च विचार में गहरा विश्वास था। वह समय के पाबन्द थे इसके लिए उन्हें बुढ़ापे में साइकिल चला कर समय से पहुंचने का काम भी करना पड़ा। गांधी जी एक आदर्श शासक के रूप में हजरत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के कायल थे। वह उसूल के पक्के थे और बड़े से बड़े झंझावत और विषम परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते थे। अडिग रहते थे। सामान्य परिस्थिति में तो सभी चलते चले जाते हैं। विशिष्ट और मुमताज़ वह हैं जो असामान्य परिस्थिति में हिम्मत नहीं हारते। ऐसे ही लोग इतिहास में अपना स्थान बना जाते हैं।

गान्धी जी ने लगभग अस्सी साल की उम्र पायी, वह और जीते तो

देश को राष्ट्र को और मानवता को कुछ और दे जाते, पर उन की जीवन लीला को समय से पहले समाप्त कर दिया गया। वह आज़ाद भारत, जिसके लिए वह जिये और मरे, का एक पूरा साल भी न देख पाये।

बुझा सके वह न प्यास अपनी
छलक गया ज़िन्दगी का प्याला''

गांधी दर्शन शास्त्र का ग्राफ बीसवीं सदी के अन्तिम वर्षों में गिरा है क्यों? गान्धियन फिलास्फी की जड़ में अध्यात्मवाद है, रूहानियत है, मानवीय मूल्य है, पूरब है वह पूरब जिस के वासी हर जान की क़ीमत जानते हैं। पश्चिमी सभ्यता के मूल में भौतिकवाद है, खाओ पियो मस्त रहो का सन्देश है, वैज्ञानिक आविष्कारों की देन जीवन की चकाचौंध है। इसका चकाचौंध ने हमें प्रभावित किया। हम घाटे का सौदा कर बैठे। तरक़्क़ी पसन्दी और माडर्न कल्चर के बाज़ार में असली के बदले नक़ली का सौदा कर बैठे। 'पूरब' की मान्यतायें समाप्त प्राय होने लगीं और उनकी जगह पश्चिम की मान्यताओं ने ले लिया 'पूरब' और 'पश्चिम' की इस अदला–बदली में असलियत खो गई। हम घाटे में हैं। खसारे में हैं।

अब बिगड़ी बात बने कैसे ? समस्या का समाधान क्यों कर हो, कैसे हो? अभी तो आशा की किरनें बाक़ी हैं। अभी सब कुछ तो नहीं बिगड़ा है। अभी समय है कुछ किया जा सकता है। इस्लामी शिक्षा दीक्षा, इस्लामी तालीमात के इन अंशों को ध्यान से पढ़िये, चिन्तन कीजिए, एकान्त में मनन कीजिए और मन मस्तिष्क स्वीकार करें तो इन पर अमल कीजिए :–

''आप उनसे कह दीजिये कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तुम को आ पकड़ेगी, फिर तुम उस पाक ज़ात की तरफ ले जाये जाओगे जो हर पोशीदा और ज़ाहिर बात को जानने वाला है, फिर वह तुम को तुम्हारे सब किये हुए काम जता देगी।''

(कुर्आन ६२–८)

''लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ (मौत) को कसरत से याद करो। मौत की याद से लज़्ज़तों में कमी आयेगी और दुनिया से दुराव पैदा होगा।'' (हदीस)

सब ठाठ पड़ा रह जायेगा
जब लाद चलेगा बंजारा।

इन्फ़िरादी व जमाअ़ती ता़लीम

(वैयक्तिक तथा सामूहिक शिक्षा)

इदारा

हमारे यहां बा़ज मकतब (स्कूल) अब भी ऐसे हैं जिन में अब तक दर्जा बन्दी (कक्षा विभाजन) नहीं है। उस्ताद एक एक बच्चे को अलग अलग बुलाता है। उस का सबक़ सुनता है और अगला सबक़ देकर याद करने के लिए छोड़ देता है। इस तरह तमाम बच्चों से बारी बारी से सबक़ सुनता और हर एक को अलग अलग सबक़ देता है। कभी तेज़ तलबा से भी मदद लेता है। इस तरह की ता़लीम में फ़ाइदे कम नुकसान ज़ियादा है।

फाइदा यह है कि हर बच्चे पर उस्ताद की तवज्जुह रहती है। हर बच्चे को अपनी फ़ित्री रफ़्तार से आगे बढ़ने का मौक़अ़ मिलता है। जो बच्चे दूसरे बच्चों से सबक़ सुनते और सबक़ याद कराते हैं उनको अपना सबक़ ख़ूब याद हो जाता है, वह ख़ूब तेज़ हो जाते हैं । लेकिन नुक़सान यह है कि अलग अलग सबक़ सुनने और सबक़ देने में वक़्त बहुत लगता है। अगर एक मुअ़ल्लिम के पास ३० तलबा हैं हर तालिबे इल्म पर सिर्फ़ ५ मिनट लगाता है तो सिर्फ़ उर्दू पर ढाइ घन्टे लग जाएंगे इसी तरह अरबी पर ढाई घन्टे । पांच घन्टे सिर्फ अ़रबी उर्दू पर चले गये। अभी दीनियात और ह़िसाब जैसे अहम मज़ामीन बाक़ी हैं उनके लिए भी ५,५ घन्टे चाहिएं। जबकि इस वक़्त के निसाब में और भी ज़रूरी मज़ामीन होते हैं। एक नुक़्सान यह है कि जो बच्चे सबक़ सुना चुके उनके कन्ट्रोल का भी मसअला है जिन बच्चों के अस्बाक़ दूसरे बच्चों के जरीअ़े होते हैं उन बच्चों की ता़लीम नाक़िस रहती है । जो बच्चे सबक़ सुनने में उस्ताद की मदद करते हैं उन की वजह से मदरसे का नज़्म (डिसिप्लिन) ख़राब होता है ख़ुद उनमें इहसासे बरतरी (बड़ाई की भावना) पैदा होता है। इस लिए चाहिए कि मकतबों में दर्जाबन्दी ज़रूर हो, और क़ुर्आन शरीफ़ के अ़लावा हर मज़्मून की ता़लीम इज्तिमाअ़ी हो। सबक़ इज्तिमाअ़ी हो लेकिन सबक़ सुनने के लिए दर्जे में ग्रुप बन्दी हो, हर ग्रुप की बारी मुक़र्रर हो। अपनी बारी पर हर ग्रुप का हर फ़र्द अपना सबक़ जरूर सुनाये ताकि हर तालिबे इ़ल्म का पढ़ना मुअ़ल्लिम सुन सके। इज्तिमाअ़ी (दर्जे की) ता़लीम में दर्जे के औक़ात में सभी लाज़िमी मज़ामीन आसानी से पढ़ाये जा सकते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

● अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय के फ़ैसले :

सऊदी विदेशमंत्री प्रिंस सऊदुल फैसल ने कहा है कि अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने इस्राईल की बनाई हुई रूकावटी दीवार को ग़ैर क़ानूनी करार देने का जो फैसला सुनाया है वह इस बात को जाहिर करता है कि अरब ज़मीन पर कब्जे से लेकर हिंसा और क़त्ल खून की वर्तमान हरकातें की सभी पालीसियां अनुचित रही हैं। प्रिंस सऊद ने एक प्रेस कानफ्रेन्स में कहा कि यद्यपि इस फैसले पर इस्राईल अमल नहीं करेगा लेकिन अंतरर्राष्ट्री बिरादरी को उनकी अन्तर्राष्ट्रीय अमन व शान्ति की सुरक्षा की सारी जिम्मेदारियां याद दिला दी हैं।

उन्होंने पत्रकारों से कहा हम यह देखना चाहते हैं कि संयुक्त राष्ट्र इस सिफारिश को वास्तविकता में बदलने के लिए अपना कर्तव्य कैसे पूरा करता हैं।

● कैनेडी की हत्या इस्राईल ने कराई थी :

इस्राईल परमाणु गतिविधियों का भण्डाफोड़ करने वाले मोर्देचाये वानुनू ने फिर यह कह कर दुन्या को चकित कर दिया है कि अमरीकी राष्ट्रपति जॉन कैनेडी की हत्या में इस्राईल का हाथ था।

वानुनू ने लंदन से प्रकाशित अलहयात अखबार को दिये गये एक इंटरव्यू में कहा कि ऐसे विश्वसनीय संकेत हैं कि कैनेडी तत्कालीन इस्राईली राष्ट्रपति पर दबाव डाल रहे थे कि वह दिमोनाद परमाणु संयन्त्र के बारे में खुलासा करें। इसी दबाव के कारण कैनेडी की हत्या हुई।

वानुनू ने कहा "हम नहीं जानते कि कब कौन ग़ैर ज़िम्मेदार इस्राईली प्रधान मंत्री अपने पड़ोसी अरब देशों के ख़िलाफ़ लड़ाई में परमाणु हथियार इस्तेमाल करने का फैसला लेले। वानुनू खुफिया जानकारी देने के कारण बगावत के आरोप में १८ वर्षों की क़ैद के बाद गत अप्रैल में रिहा हुए हैं। वानुनू ने दिमोना स्थिति संयंत्र के बारे में कहा कि इससे ऐसा बड़ा ख़तरा है जो लाखों लोगों को तहस नहस कर देगा। उस ने सुझाव दिया कि इस्राईल की सीमा से लगे इलाकों के लोगों को ध्वस्त होने के खतरे की स्थिति में तैयार रहने और उसका मुक़ाबला करने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

● अमेरिका के चंगुल में पांच हजार भारती:

इराक़े में अमेरिकी सेना के विभिन्न कार्यों में जुटे पांच हज़ार भारती भी बन्धक बने हुए हैं जिन से अमेरिकी सेना जबरन काम कराती है और उन्हें छुट्टी भी नहीं देती। इन बन्धकों को छुड़ाने के लिए सरकार कब ध्यान देगी?

इराक़ी विद्रोहियों की क़ैद से रिहा लखविन्दर सिंह और हरनेक सिंह का कहना है कि सरकार ने अभी तक भी खाड़ी देशों में फंसे इन बन्धकों पर ध्यान नहीं दिया है। यहां लगभग पांच हजार ट्रक ड्राइवर ऐसे हैं जो अमेरिकी सेना के विभिन्न सामानों को लाने–ले जाने का काम करते हैं। इन में से कुछ लोगों को तो इराकी अपना निशाना बना चुके हैं। इराक में मारे गये ऐसे भारतीयों के परिवारजनों को उनके मारे जाने की खबर भी नहीं दी जाती।

लखविन्दर का कहना है कि अमेरिकी सेना लीज़ पर कुवैत ट्रांसपोर्टेशन कमपनियों से ट्रक लेती है। इन कम्पनियों द्वारा जबरन ड्राइवरों को वहां भेजा जाता है।

हरनेक और लखविन्दर भी ऐसे ही ट्रक ड्राइवर थे जो कुवैत से वापस लौट आए थे। उन्होंने बताया कि इराकी विद्रोहियों के मन में भारतीयों के लिए नर्म गोशा है। वे पाकिस्तानियों से बहुत नफरत करते हैं क्योंकि पाकिस्तान ने इराक युद्ध में अमेरिका का साथ दिया है।

सरकार का कर्तव्य है कि वह अमेरिकी कब्जे में ऐसे भारतीयों को मुक्त कराने का प्रयास करे।

> एक साइन्सदां (वैज्ञानिक) साहिब कहने लगे कि जब हम जिन्नों को देखते नहीं तो क्योंकर मानें उनसे कहा गया कि आप का यह सिद्धान्त गलत है। रूह (प्राण) को आज तक किसी ने न देखा न किसी ने रूह का इन्कार किया।